अषाढ़ मास, शुक्ल पक्ष 20 वर्ष, अंक 215 पृष्ठ 8 मूल्य 1.00

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज से प्रकाशित

www.akhandbharatsandesh.net

नगर संस्करण प्रयागराज | शुक्रवार 30 जुलाई 2021 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को दुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

क्रियायोग संदेश

स्थायी सुख, शान्ति व निर्भय वातावरण के लिए "क्रियायोग अभ्यास करें" सत्य की अनुभूति में सभी प्रकार के क्लेश हमेशा के लिए दूर हो जाते हैं। अध्यात्मिक वैज्ञानिकों ने सिद्ध कर दिया है कि क्रियायोग के द्वारा हम सत्य से जुड़ जाते हैं। ज्ञान, शक्ति, शान्ति, आनन्द, नाम-यश, धन आदि के लिए मनुष्य को दर-दर भटकना पड़ता है, और प्राप्त न होने पर मनुष्य में हिंसक प्रवृत्ति प्रकट होती है। क्रियायोग में भक्ति दृढ़ होने पर ज्ञान, शक्ति, शान्ति,आनन्द, धन आदि सब कुछ स्वयं मनुष्य के पास आ जाते हैं।

क्रियायोग प्राचीनतम् एवं नित्य नवीन पूर्ण विज्ञान है। ईश्वरीय नियमों के अनुसार कलिकाल में क्रियायोग का ज्ञान विलुप्त हो गया। आरोही द्वापर युग के आते ही मृत्युंजय अमर गुरु श्री महावतार बाबा जी द्वारा क्रियायोग को पुनर्जीवित कर पुनः परिष्कृत किया गया। उन्नीसवीं शताब्दी में महावतार बाबाजी ने क्रियायोग को लाहिड़ी महाशय जी के माध्यम से मानवजाति को दिया। क्रियायोग ही सनातन धर्म में वर्णित यज्ञ है। क्रियायोग ही वेदपाठ है। क्रियायोग अभ्यास से मनुष्य को अपने वास्तविक स्वरूप "अहंब्रह्मास्मि" की अनुभूति एक ही जन्म में सम्भव है।

स्वामी श्री योगी सत्यम्

क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान

प्रयागराज

10 मिनट का अभ्यास 20 वर्ष का विकास

नार्को टेरर के बड़े सरगना को गुजरात एटीएस ने दबोचा

पाकिस्तान से भारत लाया था 2500 करोड़ की हेरोइन, आतंकियों को देता था पैसा

अहमदाबाद (एजेंसी)। अलग-अलग मौकों पर पाकिस्तान से भारत में 530 किलो हिरोइन की तस्करी करने वाले एक आरोपी को गुजरात एटीएस ने गुरुवार को दिल्ली एयरपोर्ट से दबोच लिया है। बताया जा रहा है कि समुद्र के रास्ते यह पाकिस्तान से करीब 2500 करोड़ रुपए के ड्रग्स की तस्करी कर चुका था और इस काले कारोबार से मिलने वाले पैसों से आतंकवादियों को भी फंड मुहैया कराता था। कच्छ केक मांडवी के निवासी शाहिद कासम सुमरा (35) नार्को टेटर में शामिल था और आतंकी गतिविधियों के लिए फंड देता था। विदेश से राष्ट्रीय राजधानी में लैंड करते ही गुजरात एटीएस एक अधिकारियों ने उसे दबोच लिया। 2018 से 2021 के बीच उसके खिलाफ गुजरात और पंजाब में कई केस दर्ज किए गए थे।

शिक्षा नीति के एक साल पूरे होने पर बोले मोदी

11 भाषाओं में होगी इंजीनियरिंग की पढ़ाई

21वीं सदी का आज का युवा अपनी व्यवस्था और अपनी दुनिया को अपने ही हिसाब से बनाना चाहता है।

नई दिल्ली (एजेंसी)। बीते एक साल में देश के सभी शिक्षाविदों ने नई शिक्षा नीति को धरातल पर उतारने में बहुत मेहनत की है। पीएम मोदी ने कहा कि बीते एक साल में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के आधार बनाकर बहुत से फैसले लिए गए। हमें यह याद रखना है कि नई शिक्षा नीति ही भविष्य के भारत का आधार तैयार करेगी और तमाम अन्य फैक्टर्स में से सबसे अहम कारण होगी।

21वीं सदी का आज का युवा अपनी व्यवस्था और अपनी दुनिया को अपने ही हिसाब से बनाना चाहता है। ऐसे में उसे एक्सपोजर चाहिए और पुराने बंधनों से मुक्ति चाहिए। हम देख सकते हैं कि छोटे कस्बों और गांवों से निकले युवा कैसे-कैसे कमाल कर रहे हैं। हम टोक्यों ओलंपिक में भी देख सकते हैं कि भारत के सुदूर इलाकों से निकले युवा भी देश का नाम रोशन कर रहे हैं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से लेकर मशीन लर्निंग तक में युवा में अपना परचम लहराने के लिए आगे बढ़ रहे हैं। यही युवा भारत के स्टार्टअप सिस्टम में क्रांति ला रहे हैं। डिजिटिल इंडिया को नई गति दे रहे हैं। आप कल्पना कीजिए कि जब इस युवा पीढ़ी को अपने सपनों के अनुरूप वातावरण मिलेगा तो उनकी शक्ति कितनी ज्यादा बढ़ जाएगी।

पीएम नरेंद्र मोदी ने कहा कि देश का युवा अब कभी भी अपनी स्ट्रीम में बदलाव कर सकता है। अब उनके आगे यह डर नहीं रहेगा कि यदि उन्होंने कोई एक स्ट्रीम चुन ली तो फिर उसे बदल नहीं पाएंगे।

यह डर जब युवाओं के मन से निकलेगा तो उनके मन से तमाम तरह के डर निकलेंगे और वे नए प्रयोग करने तत्पर होंगे। पीएम नरेंद्र मोदी ने कहा कि हमारे युवाओं को देश को समर्थ बनाने के लिए पूरी दुनिया के मुकाबले एक कदम आगे बढ़कर सोचना होगा। पीएम मोदी ने कहा कि मुझे खुशी है कि बीते एक साल में देश के 1,200 से ज्यादा उच्च शिक्षण संस्थानों ने स्किल इंडिया से जुड़े कोर्सों की शुरुआत की है।उन्होंने कहा कि हमने स्थानीय भाषाओं को भी प्रमुखता देने का फैसला लिया है। इंजीनियरिंग की पढ़ाई अब तमिल, मराठा, बांग्ला समेत 5 भाषाओं में शुरू होने वाली है। इसके अलावा कुल 11 भाषाओं में इंजीनियरिंग के कोर्स का अनुवाद शुरू हो चुका है। इसका सबसे ज्यादा लाभ देश के गरीब और मिडिल क्लास के स्टूडेंट्स को होगा। दलितों और आदिवासियों को होगा। इन्हीं परिवारों से आने वाले लोगों को लैंग्वेज डिवाइड का सामना करना पड़ता था। मातृभाषा में पढ़ाई से गरीबों का बच्चों का आत्मविश्वास बढ़ेगा। इसके अलावा प्रारंभिक शिक्षा में भी मातृभाषा को प्रमोट करने का काम शुरू हो गया है।

मीडिया पर फूटा शिल्पा शेट्टी का गुस्सा, 29 के खिलाफ हाई कोर्ट में दायर किया मानहानि का मुकदमा

मुंबई (एजेंसी)। पोर्न केस में घिरे कारोबारी राज कुंद्रा की पतनी शिल्पा शेट्टी का मीडिया पर गुस्सा फूट पड़ा है। उन्होंने बॉम्बे हाई कोर्ट में 29 पत्रकारों और मीडिया घरानों के खिलाफ मानहानि का मुकदमा दायर किया है, जिस पर शुक्रवार को सुनवाई होगी।

शिल्पा शेट्टी ने कहा है पोनीग्राफी केस में झूठी रिपोर्टिंग के जरिए उनकी छवि खराब की जा रही है। शिल्पा ने कोर्ट से यह भी मांग की है कि मीडिया को उनके खिलाफ अपमानजनक सामग्रियों के प्रकाशन से रोका जाए। शिल्पा शेट्टी ने आरोप लगाया है कि मीडिया हाउसेज ने अधिक हिट्स पाने के लिए सनसनीखेज खबरें अपलोड कीं। उन्होंने यह भी कहा है कि उनके पति के खिलाफ चल रहे केस को लेकर उनके (शिल्पा) के खिलाफ झूठी बातें कही जा रही हैं। शिल्पा ने हाई कोर्ट से कहा है कि इन मीडिया हाउसेज को उनके खिलाफ प्रकाशित अपमानजनक कंटेंट को हटाने का आदेश दिया जाए और इन्हें बिना शर्त माफी मांगने को कहा जाए। शिल्पा ने जिनके खिलाफ यह मुकदमा दर्ज किया है, उनमें फेसबुक, इंस्टाग्राम और गूगल भी शामिल हैं। शिल्पा शेट्टी ने कहा है कि मीडिया की ओर से उनकी निजता का उलंघन किया जा रहा है और उनके निजी जीवन के बारे में झूठी व अपमानजनक बातें कही जा रही हैं।

छलावा है पीओके में पाकिस्तान की हरकतें, विदेश मंत्रालय ने चुनाव पर जताई आपत्ति

नई दिल्ली (एजेंसी)। पाक अधिकृत कश्मीर में हाल ही में हुए चुनावों को लेकर विवादों का सिलसिला शुरू हो गया है। अब भारतीय विदेश मंत्रालय ने भी इस पर सवाल उठाया है। एक समाचार एजेंसी के मुताबिक विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता अरिंदम बागची ने गुरुवार को इसको लेकर बयान जारी किया। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान द्वारा उठाया कदम पूरी तरह से गलत और अवैध है।

उन्होंने कहा कि पाकिस्तान द्वारा अपने संसाधनों का इस्तेमाल करके पीओके में यह हरकत करना पूरी तरह से छलावा है। गौरतलब है कि पीओके की संवैधानिक स्थिति एक स्वायत्तशासी प्रदेश की है। लेकिन पाकिस्तानी प्रधानमंत्री इमरान खान यहां चुनाव के जरिए पीओके को अपने देश में शामिल करने की चाल चल रहे हैं।

विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता अरिंदम बागची ने कहा कि भारत ने

पाकिस्तानी अधिकारियों से इस चुनाव को लेकर गहरी आपत्ति जताई है।

उन्होंने कहा कि स्थानीय लोगों ने इस चुनाव की पुरजोर खिलाफत की है। साथ ही इसको लेकर जगह-जगह पर विरोध प्रदर्शन भी हुए हैं। अरिंदम बागची ने कहा कि पाक अधिकृत कश्मीर में पाकिस्तान चाहे कितनी भी अवैध हरकतें कर ले, वह मानवाधिकारों को नहीं दबा पाएगा। वहां के लोगों की स्वतंत्रता पर भी पाक किसी तरह से अंकुश नहीं लगा सकता है।

भारत आए अमेरिकी विदेश मंत्री के इस काम से चिढ़ा चीन, कहा- अपनी बात से मुकरा यूएस

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत आए अमेरिकी विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन की दिल्ली में तिब्बती बौद्ध धर्मगुरु दलाई लामा के प्रतिनिधि से मुलाकात पर चीन भड़क गया है। ब्लिंकन की दलाई लामा के प्रतिनिधि से मुलाकात के बाद से ही इस बात का अंदाजा लगाया जा रहा था।

अब चीन ने कहा है कि अमेरिका ने दलाई लामा के सहयोगी से मुलाकात कर अपने वादे को तोड़ा है। उसने तिब्बत को चीन का हिस्सा मानने की प्रतिबद्धता जताई थी। ब्लिंकन ने बुधवार को ही गोदुप दोंगचुंग से मुलाकात की थी, जो सेंट्रल तिब्बतन एडमिनिस्ट्रेशन के प्रतिनिधि हैं। इसे तिब्बत की निर्वासित सरकार भी कहा जाता है। दोंगचुंग ने दलाई लामा की ओर से भेजे गए स्कार्फ को ब्लिंकन को

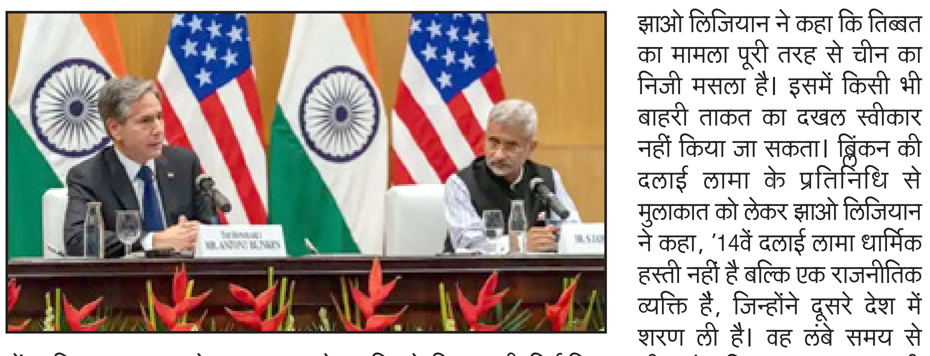

भेंट किया था। उनके अलावा अमेरिकी विदेश मंत्री ने दिल्ली स्थित तिब्बत हाउस के निदेशक गेशे दोर्जी दामदुल से भी मुलाकात की थी। उन्होंने सिविल सोसायटी ग्रुप्स से चर्चा के दौरान दामदुल से मुलाकात की थी। 2016 में अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा की दलाई लामा से मुलाकात के बाद यह पहला मौका था, जब किसी अमेरिकी सरकार के व्यक्ति ने तिब्बत की निर्वासित सरकार से जुड़े व्यक्ति से मुलाकात की। इस मीटिंग को लेकर चीन ने तीखे तेवर अपना लिए हैं। चीन ने कहा है कि अमेरिका की यह हरकत हमारे आंतरिक मामलों में दखल देने के जैसा है।

चीनी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता झाओ लिजियान ने कहा कि तिब्बत का मामला पूरी तरह से चीन का निजी मसला है। इसमें किसी भी बाहरी ताकत का दखल स्वीकार नहीं किया जा सकता। ब्लिंकन की दलाई लामा के प्रतिनिधि से मुलाकात को लेकर झाओ लिजियान ने कहा, '14वें दलाई लामा धार्मिक हस्ती नहीं है बल्कि एक राजनीतिक व्यक्ति हैं, जिन्होंने दूसरे देश में शरण ली है। वह लंबे समय से चीन के खिलाफ अलगाववादी गतिविधियों में सक्रिय रहे हैं। वह तिब्बत को चीन से अलग करने के लिए काम कर रहे हैं।' झाओ लिजियान ने कहा कि चीन किसी भी देश की ओर से दलाई लामा से संपर्क किए जाने की कड़ी निंदा करता है।

बुढ़ापा जीवन का सत्य, माता-पिता का सहारा बनें बच्चे : राज्यपाल आनंदीबेन

औरैया (एजेंसी)। राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने कहा कि बुढ़ापा जीवन का सत्य है। जीवन के इस पड़ाव में अपने ही सहारा बनते हैं। लेकिन वृद्धाश्रम देखकर लगता है कि कुछ नासमझ बच्चे बड़े होने के बाद राह भटक जाते हैं।

उनके कारण बूढ़े माता-पिता को पीड़ा झेलनी पड़ती है। बच्चों को उनकी पीड़ा समझनी चाहिए और बुढ़ापे की लाठी बननी चाहिए। राज्यपाल गुरुवार को औरैया स्थित आनेपुर माधव हैप्पी ओल्ड एज होम

में वृद्धजनों का हाल जानने पहुंची थीं। वृद्धाश्रम में आयोजित कार्यक्रम में राज्यपाल ने कहा कि आज का दौर पूरी तरह से बदल चुका है। युवाओं में मानवीय गुणों का समावेश होना चाहिए। उन्होंने अफसरों से कहा कि वह वृद्धजनों का ध्यान रखें, यह न महसूस होने दें कि उनका परिवार नहीं है। इस मौके पर वृद्धजनों की सुविधाओं के लिए राज्यपाल ने वृद्धाश्रम को वाशिंग मशीन, फ्रिज व सिलाई मशीन भेंट कीं।

गैस अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड (गेल) के कार्यक्रम में पहुंचीं राज्यपाल ने टीबी मरीजों से मुलाकात की और अफसरों से कहा 2024 तक देश को टीबी मुक्त बनाना है। उन्होंने अफसरों से एक-एक टीबी संक्रमित बच्चा गोद लेने का आह्वान भी किया। उन्होंने कहा कि जनपद में अभियान चलाकर टीबी से ग्रसित बच्चों को गोद लिया जाए। अधिकारी, डॉक्टर, एनजीओ एवं गेल व एनटीपीसी जैसी बड़ी-बड़ी कंपनियां भी बच्चों को गोद लें और उनके पालन पोषण की व्यवस्था करें। इस दौरान सीएमओ डॉ. अर्चना श्रीवास्तव ने उनको बताया कि एक अप्रैल 2021 से 27 जुलाई 2021 तक कुल 61 टीबी रोगियों को गोद लिया गया है। जायंट्स ग्रुप ऑफ औरैया ने 20, संवेदना ग्रुप ने दस, आईएमए ने पांच और अधिकारियों ने 26 बच्चों को गोद लिया है। कार्यक्रम के उपरांत 5 बच्चों को पोषण किट भी वितरित की। राज्यपाल ने गेल में स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं से नारी सशक्तीकरण पर भी बात की। उन्होंने कहा कि महिला समूहों को देखकर लग रहा है कि महिलाएं आत्मनिर्भर हो रही हैं। उन्होंने समूहों में ज्यादा से ज्यादा महिलाओं को जोड़ने का आह्वान किया।

पेगासस जासूसी विवादः देश के चीफ जस्टिस एनवी रमनन को सैकड़ों लोगों और संगठनों ने लिखी चिट्ठी, तत्काल हस्तक्षेप की गुहार

नई दिल्ली (एजेंसी)। पेगासस जासूसी मामले को लेकर अभी विवाद खत्म होता नहीं दिख रहा है। अब 500 से ज्यादा लोगों और संगठनों ने चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया को चिट्ठी लिख इस मामले में हस्तक्षेप करने का अनुरोध किया है। मीडिया रिपोट्र्स के मुताबिक 500 से ज्यादा लोगों और ग्रुप ने सीजेआई एनवी रमनन से इजारयली फर्म एनएसओ से पेगास स्पाइवेयर की खरीदारी पर तुरंत रोक लगाने का आग्रह भी किया है। सीजेआई को जो चिट्ठी लिखी गई है उसमें विभिनन्न मीडिया रिपोट्र्स में

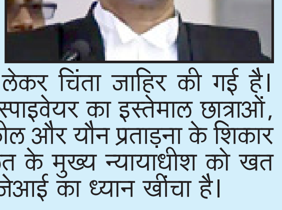

पेगासस स्पाइवेयर के इस्तेमाल को लेकर दिखाई जा रही खबरों को लेकर चिंता जाहिर की गई है। सीजेआई को खत लिखने वालों ने आश्चर्य जताते हुए कहा कि पेगासस स्पाइवेयर का इस्तेमाल छात्राओं, शिक्षा से जुड़े लोगों, पत्रकारों, मानवाधिकार के संरक्षण से जुड़े लोगों, वकील और यौन प्रताड़ना के शिकार पीडि.ताओं की जासूसी के लिए किया जा रहा था। देश के शीर्ष अदालत के मुख्य न्यायाधीश को खत लिखने वाले लोगों ने डेटा सुरक्षा और प्राइवेसी पॉलिसी की तरफ भी सीजेआई का ध्यान खींचा है।

GSTIN : 09AAFTM3349D1ZK | PAN-AAFTM3349D Reg. No.: 1/2014

मिसकीन सेवा संस्थान ट्रस्ट

Misqeen Sewa Sansthan Trust

(इण्डियन ट्रस्ट एक्ट 1882 केअन्तर्गत पंजीकृत)

श्रमिको, मजलूमों, गरीबों अनाथो के सेवा में तत्पर

फाउण्डर प्रबन्धकः अहद अहमद सिद्दीकी उर्फ शहजादे पत्रकार/ग्राम प्रधान अल्हवा कोरांव, प्रयागराज

कार्यल्य : माण्डा वाली रोड, कोरांव–प्रयागराज, निवास ग्राम–अल्हवा, देवघाट, कोरांव–प्रयागराज 212306

Mob.: 9450613192

E-mail: miskeenss2014@gmail.com, sahjadekoraon@gmail.com

केसरवानी एण्ड सन्स

नोट- हमारे यहाँ मोबिल, पाइप, पेन्ट, सेनेट्री, हार्डवेयर, दरवाजा टाइल्स, समर सेबुल पम्प, चारा मशीन, बाथरूम फिटिंग इत्यादि उचित मूल्य पर प्राप्त करें।

अनुपम – 8318174147 अनमोल– 6388773491

जी0टी0 रोड, हनुमानगंज, प्रयागराज

Reg. No. U01400UP2021PTC147142 | स्थापना वर्ष – 2021

GOVERNMENT OF INDIA MINISTRY OF CORPORATE AFFAIRS

शेषदुर्गा हर्बल प्रोड्यूसर कम्पनी लिमिटेड

अश्वगंधा अकरकरा

प्रयागराज के किसानो से आग्रह है कि सुनहरे भविष्य के लिए औषधीय पौधों की खेती करके अपनी आय चार गुना ज्यादा बनाने के लिए कम्पनी की सदस्यता ग्रहण करें।

फाउण्डर आर. पी. पाण्डेय LL.B

ग्राम–कबरा, पोस्ट–डीहा, तहसील–करछना, प्रयागराज रजि. कार्यालय–868/5 कृष्णा नगर, अरैल, नैनी, प्रयागराज

Mob.: 9935613506

प्रकाश हॉस्पिटल

स्वास्थ सेवाओं के लिए 24 घंटे सेवा में तत्पर

निदेशक- डॉ. विजय बाबू यादव (सदस्य जिला पंचायत)

Mob.: 8858487147

पता–भीरपुर करछना, प्रयागराज

सूफी आशिक बाबा

सभी समस्याओं का निःशुल्क समाधान के लिए संपर्क करें।

नोट : खोए हुए व्यक्ति को हर हाल में मिलाना, ऊपरी बाधा से परेशान और उसका नि:शुल्क समाधान कराना, वैवाहिक जीवन में समस्त कष्टों को दूर कराना, जिन पुरुष व युवती की शादी में किसी प्रकार का कोई रुकावट आ रहा है तो, उसका भी समाधान किया जाता है सभी समस्याओं का समाधान समय से कर दिया जाता है 30 वर्षो का अनुभव प्राप्त।

पता: एडीए कॉलोनी, पुलिस चौकी के पास, नैनी, प्रयागराज मोबाइल नंबर: 9793403230, 9335128224

ऑक्सीजन गैस प्लांट के लिए विधायक ने दिए 40 लाख रुपए, अभी तक शुरू नहीं हो सका कार्य

अखंड भारत संदेश

हनुमानगंज। कोविड-19 की संभावित तीसरी लहर से निपटने के लिए प्रदेश सरकार व जिला प्रशासन पूरी तरह कमर कस ली है। पिछले दिनों कोरोना कि दूसरी लहर की चपेट मे आने से जहां अस्पतालों मे संक्रमितों कि संख्या बढ़ गयी थी वहीं आक्सीजन की कमी से कितनों ने अपनो को खोया है। जिसको लेकर ब्लाक बहादुरपुर के सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र कोटवां एट बनी के लिए ऑक्सीजन गैस प्लांट लगाने के लिए पिछले 22 मई को फूलपुर विधायक प्रवीण सिंह पटेल ने अपने निधि से मुख्य विकास अधिकारी के नाम एक लेटर जारी करके 40 लाख रुपए आवंटित किए थे। और यह भी कहा गया था कि कोविड 19 की संभावित तीसरी लहर के मद्देनजर उक्त प्लान को लगाने के लिए ऐसी संस्था को दिया जाय जो दो मांह के भीतर कार्य पूरा कर ले । लेकिन प्लांट लगना तो दूर अभी तक कार्य शुरू ही नहीं होसका।

आक्सीजन गैस प्लांट लगाने के लिए डीआरडी कार्य दायी संस्था प्रयागराज को दिया गया है। फूलपुर सीएचसी मे इसका कार्य पूरा हो चुका है। सीएचसी कोटवां /बनी मे संस्था द्वारा जमीन चिन्हित कर ली गयी है बिभागिय अधिकारियों से बात करके बहोत जल्द कार्य शुरु कराया जाएगा। **प्रवीण सिंह पटेल विधायक फूलपुर।**

वैसे तो सीएचसी कोटवां एट बनी को कोरोना काल मे जिले का वन लेवल अस्पताल बनाया गया था।और संभावित तीसरी लहर जहां बच्चों के लिए खतरा बताया जारहा है। जिसको लेकर इसबार भी स्वास्थ्य बिभाग द्वारा तीसरी लहरसे लड़ने की पूरी तैयारी कर ली है।

कोरोना संक्रमित बच्चों के लिए दस बेड का पी,आई,सी,यू ,वार्ड बना है। जहां पर आठ,जम्मू सिलेंडर व ऑक्सीजन कंसंट्रेटस, दस,मॉनिटर सहित बच्चों के उचार के लिए इलेक्ट्रानिक मशीने आदि की व्यवस्था किगई है ।
डा0 प्रमोद
बालरोग विशेषज्ञ सीएचसी बनी

आक्सीजन गैस प्लांट और पाइप लाइन लगाने के लिए पिछले दिनों डिस्टिक रूलर डेवलब्मेंट कार्यदाई संस्था से इंजिनियर आए थे जो सर्वे करके चले गए अभीतक कार्य शुरु नहीं किया गया है।
डा0 अमृत लाल यादव
सीएचसी अधीक्षक कोटवां एट बनी

किसी भी प्रकार की कार्यक्रम में भीड़ भाड़ जुटाने पर होगी सख्त कार्यवाही

कोविड-19 की तीसरी लहर तथा आगामी त्यौहार को देखते हुए सी,ओ फूलपुर राम सागर ने बहरिया थाना में किया पीस मीटिंग

अखंड भारत संदेश

बहरिया। किसी भी प्रकार की कार्यक्रम में भीड़ भाड़ इकट्ठा करने पर आयोजकों के खिलाफ सख्त से सख्त कार्यवाही की जाएगी।

कोविड 19 की तीसरी लहर को देखते हुए हर व्यक्ति को चाहिए कि भीड़ भाड़ से दूरी बनाए रखें।कोई भी कार्यक्रम कम से कम लोगों में ही निपटने की कोशिश करें। जिससे कोविड-19 के पालन के तहत ही कोई कार्यक्रम का आयोजन किया जाए ऐसा न करने पर आयोजकों के खिलाफ महामारी अधिनियम के तहत कार्यवाही की जाएगी।यह बातें बहरिया थाने में आगामी त्योहारों को देखते हुए पीस कमेटी की मीटिंग में आए सी,ओ, फूलपुर राम सागर ने कहा। सावन मास में चल रहे जगह-जगह के मेले का आयोजन पर भी पाबंदी लगाई गई है।किसी भी प्रकार से मंदिरों पर भीड़ भाड़ नहीं जोड़ना चाहिए।मोहर्रम के त्यौहार पर भी पाबंदी लगाई गई है।किसी भी प्रकार से कहीं भी भीड़ भाड़ इकट्ठा नहीं होगी।

पीस कमेटी की मीटिंग में प्रभारी निरीक्षक जयप्रकाश शर्मा एसआई मनोज सिंह नीरज कुशवाहा शेषनाथ भारती दिनेश शुक्ला प्रभु नारायण इनामुल अहमद आदि प्रशासनिक लोग के अलावा विजय यादव शुभम मिश्रा अमरनाथ यादव किसान नेता सीताराम यादव प्रधान बहरिया मोहम्मद गुलाम बुद्धू माली मलिक रामनरेश सरोज ग्राम प्रधान अभईपुर रामचंद्र मिश्र रामशरण सोनी अजय कुमार शर्मा के साथ ही क्षेत्र के गणमान्य नागरिकता के लोग मीटिंग में मौजूद रहे।

युवक की हत्या के बाद शव पहुंचा घर ,मचा कोहराम

अखंड भारत संदेश

उतरांव। उतरांव थाना क्षेत्र के सिठौली गांव में युवक की हत्या के बाद गुरुवार को पोस्टमार्टम के बाद शव घर पहुंचा तो कोहराम मच गया। परिजनों के अलावा नात रिश्तेदारों का जहां रो रो कर बुरा हाल है वही सगे रिश्तेदार द्वारा की गई हत्या से लोगों में आक्रोश व्याप्त है। सिठौली गांव निवासी पननलाल सोनकर के चार बेटों में सबसे छोटा बेटा मुकेश 24 जो घर का दुलारा था।वह गांव स्थित सत्यनारायण इंटर कॉलेज में इंटर का छात्र था वह 24 जुलाई को बैरहना स्थित फल मंडी में काम करता था वहां से शाम को काम करके 5:00 बजे निकला। उसकी बाइक सैदाबाद में मिलने पर गुमशुदगी लिखाने के बाद बुधवार को मुकेश का शव सैदाबाद के पास एक कुएं में मिली। मुकेश की उसकी भाभी की बहन से प्रेम संबंध था। पुलिस ने मामला खंगाला तो आशनाई में हत्या की बात सामने आई। आज पोस्टमार्टम के बाद शव घर पहुंचा तो शव देख कोहराम मच गया। मां शुला देवी पिता पननलाल और भाई बहनों का जहां रो रो कर बुरा हाल है वही सगे रिश्तेदार द्वारा मुकेश की हत्या किए जाने से लोगों में गहरा आक्रोश व्याप्त है। मुकेश के घर सिठौली में आज कई गांव के लोगों की भीड़ जमा रही।

रामराज सोनी की हत्या उसके भांजे ने तीन लाख की सुपारी देकर कराई थी

अखंड भारत संदेश

करछना। थाना व क्राइम ब्रांच टीम ने मुकदमे में शामिल चार लोगों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया ।

करछना थाना क्षेत्र के बरदहा में गिट्टी बालू का कारोबार करने वाले रामराज सोनी की 26 जुलाई को शाम को गोली मार कर हत्या कर दी गई थी, जिसको लेकर थाना करछना व क्राइम ब्रांच टीम ने मुकदमे में शामिल चार लोगों को गिरफ्तार किया । बताया गया कि मृतक रामराज सोनी का भांजा बबलू सोनी पुत्र शोभनाथ सोनी निवासी सिटकहिया थाना कौंधियारा ने बिजनेस करने के लिए अपने मामा रामराज सोनी से कुछ वर्ष पहले 10, लाख रुपये उधार लिया था । जिसको लौटाना न पड़े, इसके लिए उसने सूटरो को तीन लाख रुपये की सुपारी देकर हत्या कराने का ठेका दिया था ।जिस पर सूटरो ने कुछ माह पहले

रामराज सोनी पर हत्या करने का प्रयास किया गया था, लेकिन वह बच गया था।

इधर कुछ दिनों से बबलू सोनी सूटरो पर हत्या करने का दबाव बना रहा था । जिसमें सूटरो में शामिल अजय पटेल पुत्र कन्हैया निवासी बंधवा थाना मेजा, राम भवन पटेल पुत्र छोटे लाल, निवासी बंधवा थाना मेजा व मोनू कुमार पुत्र प्रेमचन्द निवासी महेवा कुंजल वैश का पूरा थाना करछना ने मिल कर 27 जुलाई को शाम 8 बजे रामराज सोनी के घर पर गोली मार कर हत्या कर फरार हो गयें थें ।पुलिस ने चारों अभियुक्तों के पास से हत्या में शामिल एक मोटरसाइकिल व आला कत्ल के इस्तेमाल में शामिल पिस्टल बरामद कर लिया है, और चारों अभियुक्तों को जेल भेज दिया गया है ।

डॉक्टर के गलत इलाज का शिकार हुई महिला की हुई मौत

अखंड भारत संदेश

करछना। थाना क्षेत्र के अन्तर्गत डांडो गांव के बब्बू कुशवाहा की पतने को स्त्री रोग था। उनके घर वाले कौवा बाजारस्थितएक क्लीनिक के डॉक्टर अनुभव पटेल की सलाह पर उनके क्लीनिक में भर्ती कराया। उक्त डाक्टर ने जांच की और बताया की इनका इलाज हमारे यहां संभव है। महिला के घरवाले उसकी बात मान गए इलाज हेतु मांगे गए 18000रूपए तत्काल दे दिए। डॉक्टर ने भगवती मेडिकल केयर ऑपरेशन करवा दिया। और अपने क्लीनिक पर ले आया। और 5दिन बाद डिस्चार्ज कर दिया। घर जाने के 2 दिन बाद महिला की तबीयत बिगड़ी तो उक्त डाक्टर से संपर्क किया गया । पुनः उसने भगवती मेडिकल केयर में भर्ती करवाने ले गया । वहां के डॉक्टरों ने भर्ती करने से मना कर दिया। थक हार कर परिवार वाले स्वरूपरानी नेहरू अस्पताल ले गए जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। बब्बू कुशवाहा का कहना है कि डाक्टर साहब के गलत इलाज और सलाह से हमारी पतने की मृत्यु हुई है। उक्त डाक्टर के खिलाफ़ कार्यवाही होनी चाहिए । जिससे कि किसी और की ऐसी हालत न हो।

जमुनापार में हो रही हत्याओ के पीछे प्रदेश सरकार की नाकामी

मृतक सोनू के घर पहुचें सपा नेता मदद् का दिलाया भरोसा

अखंड भारत संदेश

करछना। राज्य सभा सांसद कुंवर रेवती रमण सिंह ने दबंगों द्वारा कठौली कंचनवा गांव के सोनू यादव की लाठी डंडे से मार कर हत्या की निन्दा करते हुए सपा जिलाउपाध्यक्ष विनय कुशवाहा व प्रतिनिधि राजेश्वर पाण्डेय व शिव यादव को मौके पर पहुंच कर पीड़ित परिवार को हर सम्भव मदद दिलाने के लिए कहा तथा एसपी जमुनापार से फोन पर वार्ता कर हत्याकांड में शामिल लोगों को कठोर सजा दिलाने को कहा ।

करछना विधायक उज्जवल रमण सिंह ने एसडीएम करछना से कहा कि शव उठवाते समय परिवार वालों से जो वादा किया गया है उसको शीघ्रातिशीघ्र पुरा करें।विधायक ने रामराज सोनी बरदहा करछना निवासी के उसके घर से बुला कर हत्या को अंजाम देने वालों को अतिशीघ्र पकड़ने के लिए पुलिस अधिकारियों से वार्ता किया ।सपा पूर्व प्रदेश प्रवक्ता जिलाउपाध्यक्ष विनय कुशवाहा ने कहा कि उत्तर प्रदेश हत्या प्रदेश में बदल गया है जबसे योगी सरकार बनी है हर तरफ हत्या हो रही हैं कौंधियारा, करछना, कोरांव मे पत्रकार की हत्या के साथ सोरांव मे दंपती की हत्या से पूरा जिला सहम सा गया है भाजपा शासन में आदमी के जान की कोई कीमत नहीं बचीं हैं और ये झूठ बोलने वाले लोग आकंड़ों की बाजीगरी के माहिर तो यह भी कह देते हैं कि आक्सीजन की कमी से कोई मौत नहीं हुई जबकि जनता ने अपनी आंखों से अप्रैल-मई मे वह मंजर देखा है जब गंगा के किनारे लाशों का ढेर लगा था।

विधवा की जमीन पर जेसीबी से जबरन खुदाई कर बेची सैकड़ों ट्रैक्टर मिट्टी

घूरपुर। घूरपुर थाना क्षेत्र के कर्मा पुलिस चौकी अंतर्गत चकिया कर्मा की रहने वाली विधवा रीना देवी पतनी स्वर्गीय बद्री प्रसाद की जमीन पर जेसीबी से मिट्टी खुदवा कर दबंगई से बेच दिया। जबकि विधवा उसे बार-बार मना करती रह गई।वह एक भी नहीं सुना। पीडि़ता ने पुलिस को तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की है। पुलिस मामले में जांच पड़ताल कर रही है।

क्षेत्र के चकिया कर्मा की रहने वाली नीरा देवी के पति की मौत के बाद किसी तरीके से जीवन यापन करती है। नीरा देवी की जमीन पर जबरन जेसीबी से पड़ोस का ही रहने वाले झल्लूर पटेल ने रात में मिट्टी खुदवा कर सैकड़ों ट्रैक्टर मिट्टी बेच दी। विधवा जबकि बार-बार मना करती रही लेकिन वह एक भी नहीं सुनी। हजारों रुपए की मिट्टी बेचने के बाद भी वह पैसा नहीं दिया। नीरा देवी ने बताया कि हमें जान माल का भी खतरा है। पीडि़ता ने पुलिस प्रार्थना पत्र देकर कार्रवाई की मांग की है। मामले में पुलिस जांच पड़ताल कर रही है।

समूह गठित करने आई महिलाओं का अज्ञात चोरों ने 15 हजार व दो मोबाइल फोन उड़ाया

अखंड भारत संदेश

करछना। राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन के तहत ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाली महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने के लिए ब्लॉक स्तर से टीम गठित कर गांव में महिलाओं का समूह तैयार करने के लिए भेजा जा रहा है। इसी क्रम में तहसील कोराव से राजकुमारी मौर्य, अंजना गौड, सुनीता व सोनी की टीम गठित कर करछना क्षेत्र के बस्तर, वीरपुर, व खाई गांव में समूह तैयार करने के लिए भेजा गया है। वही आई हुई महिलाएं बस्तर गांव स्थित प्राथमिक विद्यालय परिसर में रुकी है। और वही से दिए गए उक्त गांव में जाकर महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने के लिए समूह तैयार कर रही है।

बुधवार की रात समूह की उक्त महिलाओं ने प्राथमिक विद्यालय परिसर के एक कमरे में खाना-पीना करने के बाद दरवाजे की कुंडी लगाकर साथ में लाएं हुए सामान को मेज पर रख कर सो गई थी। उसी बीच देर रात को अज्ञात चोरों ने स्कूल परिसर में घुसकर दरवाजे की कुंडी को खोल कर समूह की महिलाओं के द्वारा पर्स में रखे गए

15 हजार रुपए व दो मोबाइल फोन को गायब कर दिया। सुबह होने पर उक्त महिलाओं ने सो कर उठी तो देखा पर्स बाहर फेंका था जिसमें रखा गया 15 हजार रुपए व दो मोबाइल फोन नहीं था। घटना के बाद आसपास के लोगों हड़कंप मच गया। जहा धीरे-धीरे लोगों की भीड़ जुट गई गई। महिलाओं ने घटना की जानकारी फोन के माध्यम से डायल 112 पुलिस को दी। सूचना पर पहुंची पुलिस ने जांच पड़ताल कर चली गई। घटना के बाद गांव में चर्चा का विषय बना है।

जिम्मेदार लोगों की उदासीनता के चलते जलमग्न हुआ पूरा गांव

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। विकासखंड मंझनपुर के भरसवॉ गांव में बारिश के पानी से पूरा गांव जलमगन हो गया है। जिम्मेदार लोगों की उदासीनता के चलते लोगों को अपने घर तक सफर तय करने में भारी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है, जिससे गांव के लोगों के बीच जिम्मेदार लोगों के प्रति भारी आक्रोश व्याप्त है। लोगों के बीच उठ रही चर्चाओं पर जाएं तो यदि समय रहते जिम्मेदार लोगों के द्वारा गांव की नाली, खडंजा, जल निकासी सहित तमाम मुद्दों पर ध्यान दिया गया होता तो गांव की दुर्दशा आज देखने को ना मिलती। तेज बारिश होने के कारण जल निकासी ना होने की वजह से गांव के कई लोगों का कच्चा मकान बारिश के पानी से चारो तरफ घिरा हुआ है और पानी के शीलन से किसी भी वक्त उक्त लोगों का कच्चा मकान जमीदोज हो सकता है जिससे मकान मालिकों की दुविधा बढ़ी हुई है और घर में रखे जरूरी सामानों को सुरक्षित स्थान तक पहुंचाने का कार्य तेजी से किया जा रहा है। मुख्यरूप से गांव में सबसे ज्यादा बिंदेश्वरी प्रसाद पुत्र रामधर को बारिश के पानी से दिक्कत उठाना पड़ रहा है ।

भाजपा युवा मोर्चा प्रदेश अध्यक्ष का करछना के कचरी गांव में हुआ जोर दार स्वागत

अखंड भारत संदेश

करछना। बृहस्पतिवार को पुनर्वास किसान कल्याण सहायता समिति के बैनर तले कचरी ग्राम सभा में भाजपा युवा मोर्चा प्रदेश अध्यक्ष प्रांशु दत्त दुद्वेदी व प्रदेश महामंत्री युवा मोर्चा देवेंद्र सिंह पटेल का जोरदार स्वागत किसान नेता राज बहादुर पटेल की अगुवाई में सैकड़ों किसानों ने किया। इस दौरान करछना बिजली पावर प्लांट जमीन अधिग्रहण के दौरान सैकड़ों

किसानों पर पूर्व की सरकार में लादे गए मुकदमे वापस कराने को लेकर किसान नेता राज बहादुर पटेल ने मुख्यमंत्री के नाम भाजपा युवा मोर्चा प्रदेश अध्यक्ष प्रांशु दत्त दुद्वेदी को मुख्यमंत्री के नाम संबोधित ज्ञापन सौपा।

अधिवक्ताओ और उपजिलाधिकारी के बीच हुई वार्ता- विफल

महिने भर से हड़ताल पर चल रहें हैं करछना के अधिवक्ता लेखपाल के निलंबन कार्रवाई पर नहीं बनी सहमति

अखंड भारत संदेश

करछना। महीने भर से बार एसोशियसन करछना के वकीलो की चल रही बेमियादी हडताल को लेकर गुरुवार को उपजिलाधिकारी और बार के पदाधिकारियो के साथ वार्ता हुई जिसमे कोई नतीजा नही निकल सका। बार पदाधिकारियो ने लेखपालो के तबादला होने तक हडताल जारी रखने का निणय लिया और कहा कि जब तक

नैनी के दो लेखपालो का तबादला नही हो जाता तब तक अधिवक्ता हडताल जारी रखेगे।इस पर एसडीएम ने कहा कि लेखपालो की सूची बनाई जा रही है जल्द ही कार्यवाही की जाएगी। इस मौके पर अध्यक्ष चिन्तामणि शुक्ला महामंत्री हंसराज सिह उपाध्यक्ष अभिषेक सिह, रमेश द्विवेदी,डीआर सिह,एमपी सिह राकेश शुक्ला, शिवेन्द्र सिह समेत कई वकील मौजूद रहे।

ग्राम प्रधान ने शुरू की लाख के खेती की मुहिम

मोहम्मद गौस

रत्योरा/प्रयागराज। तहसील कोरांव के कई गांवों के मजदूर लाख की खेती कर रोजगार के अवसर की तलाश में जुटे हुए हैं। कोरांव तहसील क्षेत्र के बरनपुर गांव समेत डिहिया पसना वितनीपुर,पसना, सिकरो, छड़ीगड़ा, महुली समेत कई गांवों में ग्राम प्रधान बरनपुर भगवती प्रसाद कोल की प्रेरणा से लाख की खेती की मुहिम शुरू की गई है। ग्राम प्रधान भगवती प्रसाद कोल ने बताया कि लाखों कीट से बनती है लाह लाखों काम में आती है लाह ग्राम प्रधान ने बताया कि उष्मी लाह की बेहन लाख छत्तीसगढ़ से 32 हजार रुपये प्रति कुंतल लाई गयी है।

जिसकी क्षेत्र के कई गांवों में खेती कराने का काम किया जा रहा है। जिसके तहत कई मजदूरों को रोजगार भी मिल रहा है। उन्होंने बताया कि लाख लगाने व छीलने तथा उस पर दवाओं का छिड़काव करने के साथ पेड़ों की कटाई व

छटाई करने के लिए मजदूरों की जरूरत पड़ती है। जिससे मजदूरों को काम मिल रहा है। लाख की खेती उत्तर प्रदेश में लाख की खेती का पुनर्जीवन परि पुनरस्थापन वन अनुसंधान केंद्र प्रयागराज एवं ग्रीन गोल्ड फार्मर प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड के संयुक्त प्रयास से कराई जा रही है। सर्वप्रथम बेर के तीन सौ पेड़ों पर लाख की खेती की जा रही है।

लाख की सर्वाधिक खेती पौधा सेम या लता व वृक्ष कुसुम व बैर पर ही की जाती है। ग्राम प्रधान बरनपुर के द्वारा सभी ग्रामीणों को कुसुम के दो पेड़ भी उपलब्ध कराए जा रहे हैं। इनका मानना है कि कुसुम के एक पेड़ से 1 वर्ष में 50 हजार की लाह तैयार की जा सकेगी। ग्राम प्रधान ने कहा कि मैं अपने गांव की कार्य योजना में लाख की खेती के लिए लाख केंद्र की स्थापना कराए जाने का का प्रस्ताव भी बनाया है। ग्राम प्रधान ने कहा कि जिला स्तरीय अधिकारी व खंड विकास अधिकारी इस कार्य में सहयोग करें जिससे लाख की खेती का पुनर्जीवन व पुनरस्थापन हो सके। गुरुवार को कोरांव विधायक राजमणि कोल ने ग्राम प्रधान भगवती कोल द्वारा कराई जा रही खेती का खुद बरनपुर गांव पहुंचकर निरीक्षण किए और लाख की उपयोगिता तथा खेती के तरीकों को देखा। विधायक ने ग्राम प्रधान के इस सराहनीय पहल की सराहना करते हुए कहा कि निश्चित तौर पर लाख की खेती से क्षेत्रीय मजदूरों को जहां रोजगार मिलेंगे, वहीं क्षेत्रीय किसानों की आय भी बढ़ेगी। विधायक ने लाख की खेती के नायाब तरीके को देखकर ग्राम प्रधान एवं ग्रामवासियों के कार्यों की सराहना की। विधायक के निरीक्षण के दौरान ग्राम प्रधान भगवती प्रसाद कोल विधायक पी आर ओ रामाश्रय शुक्ला, रमेश तिवारी समेत कई ग्रामवासी व अन्य गणमान्य लोग मौजूद रहे।

कल्याणपुर पुलिया बनी खतरे की घंटी

अखंड भारत संदेश

नारीबारी। विकासखंड शंकरगढ़ के नारीबारी रोड पर स्थित कल्याणपुर की पुलिया मौत को दे रही दावत बरसात होते ही पुलिया के ऊपर से 4 से 5 फीट ऊपर पानी बहने लगता है लोगों की जान खतरे में पड़ जाती है।

शंकरगढ़ से नारीबारी का मार्ग अवरुद्ध हो जाता है कहने को तो रोड बन गई परंतु पुलिया ऊंची न होने से बारिश के दिनों में पुलिया के ऊपर से पानी बहने लगता है जिससे वहां से गुजरने वाले वाहन जान को जोखिम में डालकर नदी को पार करने की कोशिश करते हैं परंतु इस ओर उत्तर प्रदेश सरकार के किसी भी आलाअफसरों का कोई ध्यान नहीं है।

पिछले दिनों जब पुलिया बन रही थी तब ग्रामीणों ने इसे ऊंचा बनवाये जाने की शिकायत संबंधित विभाग से की थी लेकिन आज तक कोई संबंधित विभाग का अधिकारी इसे संजीदा नहीं दिखा आज आलम यह है कि शंकरगढ़ से नारीबारी को जाने वाला यह एकमात्र रास्ता है जिस पर ँऊण् व छ्ढघ् कॉलेज, प्राइमरी स्कूल, आंगनबाड़ी केंद्र, सहज जन सेवा केंद्र है साथ ही स्वास्थ्य केंद्र, बस अड्डा, रेलवे स्टेशन, बैंक व ब्लॉक को आने के लिए यह एकमात्र रास्ता है जहां नदी बढ़ जाने के बाद मरीज पानी कम होने का इंतजार करते करते अपने जीवन से हाथ धो बैठता है कल्याणपुर के पूर्व प्रधान नरेंद्र सिंह व वर्तमान प्रधान संघ अध्यक्ष पुष्पराज सिंह ने जिलाधिकारी से इस जानलेवा पुलिया को ऊंची करवाकर जनता को राहत पहुंचाए जाने की मांग की है।

नशामुक्ति समाज के लिए आगे आएं युवा वर्ग : विकास सोनी

अखंड भारत संदेश

घूरपुर। व्यक्ति को अपने जन्मदिन, शादी सालगिरह या अन्य जशन् के माहौल मे अत्यधिक धन व्यय करने के बजाय गरीबों, मजलूमो एवम जरूरत मंद लोगों की मदद मे धन व्यय करना चाहिए इसके साथ ही सभी युवाओ को जन्मदिन के अवसर लोगों को पौधे भेंट करना एवम वृक्षारोपण का पुण्य संकल्प लेना चाहिए इससे मन को बहुत सुकून मिलता हैं साथ ही पर्यावरण मजबूत होनें के साथ साथ लोगों के चेहरे पर मुस्कान आती हैं उक्त बातें युवा समाजसेवीं एवम स्वर्णकार्य युवा क्रांति मच के प्रदेश सचिव विकास कुमार सोनी नें गुरुवार को क्षेत्र मे बालिका मेधा सम्मान के दौरान व्यक्त किये इस अवसर पर उन्होंने युवाओं से नशामुक्ति समाज की स्थापना के लिए भी युवाओं के प्रेरणा मे उन्होंने यह भी कहा कि दिनोदिन समाज नशा के चंगुल मे फसता जा रहा हैं जिसके अनेकों विसंगतिया समाज को बर्बाद कर रही हैं।

अपने उद्बोधन मे श्री सोनी उपस्थित ग्रामीणों से एक जून रोटी भले नसीब न हों किन्तु बच्चों को

शिक्षित करने के लिए भी शपथ दिलवाये। श्री सोनी प्रतिवर्ष अपने जन्मदिन पर बड़े पैमाने मे लोगों मे वृक्ष एवम गरीब बच्चों को निःशुल्क कापी पेन भेंट करते हैं।श्री सोनी क्षेत्र मे काफी चर्चित व्यक्तियों मे गणना की जाती हैं प्रति वर्ष माघ मेले मे प्रमुख सनन पर्व के दौरान लोगों मे फल, भोजन आदि भी वितरित करवाते हैं।

होमगार्ड को ट्रक ने कुचला, मौत, परिजनों में मचा रहा कोहराम

नैनी। औद्योगिक क्षेत्र थाने के समीप बीती रात ड्यूटी पर जा रहे एक होमगार्ड को ट्रक ने कुचल दिया। जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई। सूचना मिलने पर पुलिस पहुंची और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिए। जानकारी के मुताबिक कौंधियारा थाना क्षेत्र के लहबरा, कोइलहा गांव निवासी कौशलेश प्रसाद मिश्र पुत्र इंद्रमणि मिश्र कंपनी नंबर 27 करछना में बतौर होमगार्ड पद पर तैनात थे। वर्तमान में उसकी ड्यूटी औद्योगिक क्षेत्र थाने में लगी हुई थी। बीती देर रात लगभग 12:00 बजे वह औद्योगिक क्षेत्र थाने से संबंधित रामपुर पुलिस बूथ पर ड्यूटी के लिए जा रहे थे। जैसे ही वह थाना गेट के समीप सड़क पर पहुंचे पीछे से आ रही एक ट्रक ने उसे रौंदते हुए आगे की ओर निकल गई। जिससे उक्त होमगार्ड की मौके पर ही मौत हो गई। सड़क दुर्घटना कर चालक ट्रक समेत लेकर फरार होने लगा तो आसपास के लोगों ने पकड़ने के लिए दौड़ाया तो वह अंधेरे का फायदा उठाते हुए ट्रक को सड़क किनारे खड़ी कर फरार हो गया।

निदेशक अधिकारी प्रियंका सिंह के द्वारा बालिकाओं को दिया गया सिलाई कढाई की सर्टिफिकेट

अखंड भारत संदेश

उतरांव। ब्लाक बहादुरपुर के बिरगापुर फुलहा में एजाज अहमद के आवास पर महिलाओं का प्रशिक्षण केन्द्र खोला गया है, जहाँ भारत सरकार के द्वारा अनुरूप बेटी पढ़ाओ बेटी बचाओ की तर्ज पर भारत सरकार द्वारा चलाई गई योजना कौशल विकास उद्यमिता मंत्रालय भारत सरकार के द्वारा लड़कियों को तरह-तरह की योजनाएं लागू हो रही हैं कि हमारे देश में चाहे वह औद्योगिक क्षेत्र हो चाहे वह शिक्षा के क्षेत्र हो महिलाएं पूर्ण रुप से सर्व गुण संपनन् बनाना यह भारत सरकार की मंशा है।

उसी के अनुरूप आज ग्राम सभा बीर्गापुर फुलहा में जन प्रशिक्षण संस्थान के द्वारा लङकियो को सिलाई कढ़ाई का सर्टिफिकेट दिया गया जिससे लङकिया सर्टिफिकेट पाकर बहुत खुश हुई, और इसी क्रम में सेनेटरी पैट के बारे मे महिलाओ को बताया गया कि महिलाओ को कैसे स्तेमाल करना है और मासिक के बारे में बताया भी गया है ।इसी क्रम में श्रीमती निदेशक अधिकारी प्रियंका सिंह कार्यक्रम अधिकारी सीमा रानी

जी, प्रशिक्षका अजरा बानो तथा धीर सिंह यादव, इस कार्यक्रम में ,निकहत जहाँ, सिमरन अंसारी, मरियम अंसारी सानिया बानो ,प्रिया सिंह, शक्ति सुधा व आदि लोग मौजूद रहे।

नवनियुक्त प्रदेश भाजयुमो अध्यक्ष का किया गया स्वागत

अखंड भारत संदेश

नैनी। भारतीय जनता पार्टी नैनी मंडल युवा मोर्चा के कार्यकर्ताओं द्वारा बुधवार को नैनी आगमन पर नवनियुक्त भाजयुमो प्रदेश अध्यक्ष प्रांशु दत्त द्विवेदी का सब्जी मंडी तिराहे के समीप जोरदार स्वागत व अभिनंदन किया गया। इस दौरान कार्यकर्ताओं ने नवनियुक्त अध्यक्ष को फूल माला पहनाकर स्वागत किया। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से मंडल अध्यक्ष दिलीप केसरवानी, नरसिंह, रामजी मिश्र,आशिक बाबा, राकेश जसवाल, रजत दुबे सहित अन्य कार्यकर्ता मौजूद रहे।

झमाझम बारिश से किसान खुशहाल, आम जीवन अस्त-व्यस्त

अखंड भारत संदेश

नारीबारी। क्षेत्र में मंगलवार से गुरुवार तक जमकर हुई बारिश से किसानों में खुशी खेतों में धान की रोपाई का कार्य हुआ तेज मंगलवार से गुरुवार तक सुबह से शाम तक तीन से चार घंटे लगातार हुई वर्षा से धरती तृप्त जिसके चलते किसानों के मन में अपनी खेती बाड़ी को लेकर पुनः उत्साह जागृत हो गया है वहीं दूसरी ओर लगातार वर्षा से आम जनजीवन अस्तव्यस्त हो गया जिसमें रोज खाने कमाने वालों की रोजी रोटी प्रभावित भी हु?ई है लेकिन खेती का कार्य सफल होने पर ही पूरे देश की रोजी रोटी चलती है क्योंकि भारत एक कृषि प्रधान देश है यहां की अधिकांश जनसंख्या खेती-बाड़ी पर आधारित है जिसके चलते लगातार वर्षा को लेकर क्षेत्रीय गणमान्य व्यक्तियों ने खुशी भी जाहिर की है।

अंखड भारत संदेश के लिए स्वामी श्री योगी सत्यम क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान झूंसी, प्रयागराज 211019 से प्रकाशित एवं रामा प्रिंटिंग प्रेस 53/25/1ए बेली रोड नया कटरा प्रयागराज से मुद्रित।

मुद्रक/प्रकाशक

स्वामी श्री योगी सत्यम पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत समाचारों के चयन के लिए उत्तरदायी। इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों से संबंधित विवादों का न्याय क्षेत्र प्रयागराज होगा। आरएनआई नं.

UPHIN 2001/9025

सीएचसी मेजा मे दो दिवसीय कैस्केडिंग प्रशिक्षक कार्यक्रम का हुआ आयोजन

सीएचसी मे बृहस्पतिवार को 340 लोगों को लगाए गए कोरोना के टीके

अखंड भारत संदेश

सिरसा/मेजा। प्रयागराज मेजा सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र मे बृहस्पतिवार को राष्ट्रीय आयुष्मान योजना के अंतर्गत आशा बहुओं की बैठक संपनन् हुई। जिसमें स्वास्थ्य विभाग की टीम ने उनकी समस्याओं को सुनते हुए उन्हें जागरूक किया। बता दें कि बृहस्पतिवार को मेजा सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र मे अधीक्षक डॉ ओमप्रकाश व स्वास्थ्य शिक्षा अधिकारी अंज्जू राय के नेतृत्व मे राष्ट्रीय आयुष्मान योजना के तहत हुई बैठक मे आशा एएनएम के द्वारा आयुर्वेद एवं तो योग के माध्यम से जन स्वास्थ्य, संचारी एवं गैर

संचारी रोगों जैसे मधुमेह से बचाव व उपचार को लेकर दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम मे जागरूक किया गया। एमओसीएच व आशा एएनएम के द्वारा रोगों से बचाव को लेकर जानकारी दी गई। बैठक में जिले से आई स्वास्थ्य विभाग की टीम ने ग्रामीणों के प्रति किस तरीके से कैसे पेश आया जाए को लेकर समझाया। वहीं अधीक्षक डॉ ओमप्रकाश ने बताया कि सीएचसी मे बृहस्पतिवार को 18 साल वालों मे 230 लोगों को व 45 साल वालों मे 110 लोगों को कोरोना के टीके लगाए गए। इस मौके पर अधीक्षक डॉ ओमप्रकाश व स्वास्थ्य शिक्षा अधिकारी अंज्जू राय के साथ दर्जनों गांवों की आशा बहुएं मौजूद रहीं।

बीरपुर बाजार की छतिग्रस्त मार्ग पर चलना हुआ दूभर

अखंड भारत संदेश

करछना। विकास खंड करछना क्षेत्र के अंतर्गत बीरपुर बाजार में पानी निकासी की व्यवस्था न होने से समूचा मार्ग गड्ढा युक्त हो गया है । जिसमें बरसात का पानी भर जाने से ताल तलैया में तब्दील हो गया है। मार्ग पर जलभराव होने से बाजार के रास्ते से वाहनों की आवागमन के दौरान गंदे पानी की छीटे मार्ग के बगल दुकानदारों के सामानों पर भी जा रहा है। गंदा पानी की छीटें पडने से दुकानदारों के सामान खराब हो जाते हैं। जल निकासी की व्यवस्था न होने से स्थानीय लोगों में गहरा आक्रोश व्याप्त है। बाजार के रहने वाले कमलेश केसरवानी, सुनील सोनी, अरविंद यादव, दिलीप यादव, देवीशंकर केसरवानी, ने बताया कि बीते कई वर्षों से जल निकासी की

समस्या बनी है। जिससे लोगों को खासा दिक्कत उठानी पड़ती है। मामले को लेकर कई बार तहसील दिवस, ग्राम प्रधान व जनप्रतिनिधियों से लिखित शिकायत किया गया ,लेकिन किसी के द्वारा अभी तक इस पर ध्यान नहीं दिया गया है। वही दिल्ली- हावड़ा रेल मार्ग में कालीडोर परियोजना के तहत नया रेल मार्ग बिछाने का कार्य चल रहा है। जिसमें सैकड़ों की संख्या में ओवरलोड डंपर मंदौली ग्राम सभा से मिट्टियों की खुदाई कर दिन व रात बाजार से होते हुए गुजरती है। ओवरलोड बड़े वाहन चलने से समूचा मार्ग बड़े-बड़े गड्ढों में तब्दील हो गया है। बरसात का पानी गड्ढों में भर जाने से आए दिन राहगीर फसकर गिरते पड़ते रहते हैं और चोटहील हो जाते हैं। मार्ग की दुर्दशा को लेकर स्थानीय लोगों में जबरदस्त आक्रोश व्याप्त है।

विवाहिता की हत्या के तीन आरोपी भेजे गए जेल, दो की तलाश

सोमवार की रात विवाहिता की हुई थी मौत

अखंड भारत संदेश

घूरपुर। इलाके के राजापुर गांव में सोमवार की रात हुई विवाहिता की मौत के मामले में नामजद तीन आरोपियों को पुलिस ने गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। और फरार दो अभियुक्तों को पुलिस तलाश कर रही है।

राजापुर गांव में विवाहिता संजना चौधरी की सोमवार रात मौत हो गई। मंगलवार की सुबह सूचना पर महिला के मायके से पहुंचे परिजनो ने दहेज की मांग पूरी नहीं कर पाने पर गला कस

हत्या किए जाने का आरोप लगाते हुए ससुरालियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग करते हुए हंगामा कर दिया था। मामले में पति समेत पांच के खिलाफ दहेह हत्या का केस दर्ज कराया था। पुलिस ने घटना के दिन ही पति गौरी शंकर व ससुर लल्लू को गिरफ्तार कर लिया था। बुधवार की रात आरोपित सास तेरसा को भी गिरफ्तार कर गुरूवार के दिन तीनों को जेल भेज दिया। अन्य दो आरोपित ननद सविता व देवर शुभम फरार हैं। पुलिस दोनों की तलाश कर रही हैं। बता दें कि बारा गींज निवासी संजना चौधरी की विवाह जून 2020 को राजापुर के गौरीशंकर के साथ की गई थी।

ओबीसी आरक्षण बिना नीट प्रवेश परीक्षा कराना अन्याय : सुशील पटेल

अखंड भारत संदेश

घूरपुर। केंद्र सरकार द्वारा मेडिकल प्रवेश परीक्षा नीट मे ओ. बी. सी. आरक्षण का कोटा निर्धारित किये बिना प्रवेश परीक्षा की घोषणा किये जाने पर अपना दल कमेरावादी के नेतृत्व मे प्रदेश भर मे दस दिवसीय सामजिक न्याय जागरुकता एवम हस्ताक्षर अभियान के माध्यम से पार्टी के कार्यकर्ता शान्तिपूर्वक अपना विरोध दर्ज करवा रहें हैं।

इसी क्रम मे युवा समाजसेवी एवम पार्टी के युवा नेता सुशील पटेल के नेतृत्व मे कॉटी, जसरा, घूरपुर, करमा, बारी बजहिया इत्यादि जगहों पर हस्ताक्षर अभियान चलाया गया जिसमें हजारों की तादाद मे युवाओं नें हस्ताक्षर करके सरकार के इस फैसले पर आपत्ति दर्ज कराते हुए पहले ओबीसी कोटा लागू करने फिर प्रवेश परीक्षा सम्पनन् करवाने की मांग किये हैं।

इस अवसर पर युवा नेता सुशील पटेल नें हस्ताक्षर अभियान के दौरान बोले कि पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा पल्लवी पटेल जी के निर्देशन पूरे प्रदेश मे नीट परीक्षा मे ओबीसी कोटा निर्धारित करने के पश्चात ही प्रवेश परीक्षा सम्पनन् कराये जाने की मांग की जा रही हैं इसके साथ ही युवा नेता सुशील पटेल नें युवाओ से पार्टी मे जुड़कर पार्टी को मजबूत बनाने के लिए भी प्रेरित किये इस अवसर पर युवा नेता श्री पटेल नें यह भी कहा कि आनें वाला समय अपना दल कमेरावादी का ही हैं। इस बीच जनपद मे हुई हत्याओ को लेकर भी पार्टी के बारा विधानसभा मिडिया प्रभारी सुशील पटेल नें प्रदेश की कानून व्यवस्था पर प्रशन् किये। एक प्रशन् के जवाब मे श्री पटेल नें पार्टी की राष्ट्रीय अध्यक्ष डा पल्लवी पटेल को अपने आदर्श एवम प्रेरणास्त्रोत के रूप मे स्वीकार किये।हस्ताक्षर अभियान के दौरान बारा विधान सभा अध्यक्ष लालबहादुर पटेल , शिवबहादुर जी, विमलेश पटेल , राजमन पाल इत्यादि लोग उक्त मिशन को सफल बनाने के लिए बारा विधान सभा में शामिल रहें।

प्रतापगढ़

मेडिकल कालेज के नामकरण के विरोध में शहर में निकला कैंडिल मार्च

जिले के विभूतियों का असम्मान बर्दाश्त नहीं किया जा सकता

प्रतापगढ़। गुरुवार को स्वशासी राज्य चिकित्सा महाविद्यालय का नाम परिवर्तन करने के खिलाफ बेल्हा नागरिक स्वाभिमान संघर्ष मोर्चा द्वारा कैंडिल मार्च निकालकर विरोध प्रदर्शन किया गया। नागरिक स्वाभिमान संघर्ष मोर्चा द्वारा गुरुवार की शाम सरदार वल्लभ भाई पटेल चैराहा (पुलिस लाइन चैराहा) पर एकत्रित हुए और सरदार वल्लभ भाई पटेल की प्रतिमा पर कैंडिल जलाकर उनको याद करके दृढ़ निश्चय किया कि सरकार द्वारा नाम परिवर्तन का विरोध जारी रखा जाएगा।

कैंडिल मार्च सरदार पटेल चैराहे से शुरु होते हुए श्रीराम चैराहा से चैक घंटाघर पर समाप्त हुआ। इस कैंडिल मार्च में नागरिकों ने स्वतः उपस्थित होकर प्रदेश सरकार के इस फैसले का कड़ा विरोध किया और यह संकल्प दोहराया कि बेल्हा के विभूतियों के सम्मान के खिलाफ कोई निणय स्वीकार नहीं किया जाएगा। कैंडिल मार्च के समापन पर सभा को सम्बोधित करते हुए प्रसपा जिलाध्यक्ष अबरार जहानिया ने कहा कि स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों व अन्य जनपद की विभूतियों के सम्मान के साथ कोई समझौता बर्दाश्त नहीं होगा। परशुराम सेना के अध्यक्ष प्रदीप शुक्ला ने कहा कि तानाशाही रवैया सरकार को छोड़ देना चाहिये। अच्युतानंद पाण्डेय ने कहा कि राजनैतिक दल विशेष को जातीय मानसिकता के तहत लाभ देने के लिये यह फैसला किया गया है। सभा की अध्यक्षता अभिषेक तिवारी व संचालन अभिषेक पाण्डेय ने किया। इस सम्बन्ध में आंदोलन की रणनीति रविवार को तैयार की जाएगी। इस अवसर पर विनोद पाण्डेय, शिवा पाण्डेय, मोहम्मद आरिफ राईन, अभिषेक त्रिपाठी, मनीष दुबे, अरुण उपाध्याय, अखिलेश मिश्रा, देवानंद पाण्डेय, राधेमोहन, विवेक त्रिपाठी, सुशील, विकास यादव, सुमित मिश्रा, विवेक, आदित्य तिवारी, मनीष तिवारी, मोहम्मद हुसाम, जावेद, रंजन, संजय शुक्ला, रमाशंकर तिवारी, शैलेश मिश्रा आदि मौजूद रहे।

कौशल प्राप्त अभ्यर्थी पोर्टल से जुड़ी सुविधाओं का उठाएं लाभः जिला सेवायोजन अधिकारी

प्रतापगढ़। जिला सेवायोजन अधिकारी विजय बहादुर सिंह सेंगर ने बताया है कि सेवायोजन विभाग के माध्यम से बेरोजगार अभ्यर्थियों को सेवायोजित कराने के उद्देश्य से सेवामित्र पोर्टल का विकास कराया गया है।

सेवामित्र पोर्टल के माध्यम से प्रशिक्षित एवं कौशल प्राप्त बेरोजगार अभ्यर्थियों को स्वतः रोजगार के क्षेत्रों में रोजगार की उपलब्धता सुनिश्चित हो सकेगी तथा नागरिकों को अपने द्वार पर ही स्थानीय सेवा (लोकल सर्विस) हेतु प्रशिक्षित एवं विश्वसनीय अभ्यर्थी उपलब्ध हो सकेगें। सेवामित्र पोर्टल के माध्यम से कौशल प्राप्त अभ्यर्थियों द्वारा नागरिकों को सेवायें जैसे प्लुम्बर, कारपेन्टर, पेंटर, इलेक्ट्रीशियन, ब्यूटीशियन, ड्राईवर आदि उपलब्ध करायी जायेंगी। इस हेतु डिजिटल प्लेटफार्म का विकास किया गया है। इस पोर्टल पर सेवाप्रदाता एजेंसियां एवं कौशल प्राप्त अभ्यर्थी पंजीकृत होगें, सेवाप्रदाता कम्पनियां इन अभ्यर्थियों के माध्यम से नागरिकों को सेवायें उपलब्ध करायेंगी।

सेवाप्रदाताओं का चयन रिक्वेस्ट फॉर इमपैनलमेन्ट प्रक्रिया के माध्यम से किया जायेगा। यह एक आल-इन-वन प्लेटफार्म है जो नागरिकों एवं कुशल अभ्यर्थियों को समान रूप से लाभान्वित करेगा जिसके माध्यम से नागरिक अपने सेवा अनुरोध पंजीकृत करा सकेगें। इसी माध्यम का उपयोग कर सेवा-प्रदाता एजेन्सी या फर्म कौशल प्राप्त अभ्यर्थियों के माध्यम से उन सेवा अनुरोधों के सापेक्ष सेवा प्रदान कर सकेगें। उन्होंने कहा है कि जनपद के सेवा-प्रदाता एजेंसियों/फमी तथा कौशल प्राप्त अभ्यर्थी सेवामित्र पोर्टल पर अपना पंजीकरण करा लें जिससे कि उन्हें पोर्टल से जुड़ी सुविधाओं का लाभ प्राप्त हो सके।

राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन 11 सितम्बर को

प्रतापगढ़। सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण नीरज कुमार त्रिपाठी ने बताया है कि उ0प्र0 राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण के निर्देशानुसार एवं संजय शंकर पाण्डेय जनपद न्यायाधीश/अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के आदेशानुसार 11 सितम्बर 2021 दिन शनिवार को प्रातः 10 बजे से जनपद मुख्यालय के साथ ही साथ समस्त तहसील मुख्यालयो पर राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन किया गया है। इस राष्ट्रीय लोक अदालत में विशेष रूप से आपराधिक शमनीय वाद, धारा-138 पराक्रम्य लिखित अधिनियम वाद, बैंक वसूली वाद, मोटर दुर्घटना प्रतिकर याचिकाएं, पारिवारिक वाद, श्रम वाद, भूमि अधिग्रहण वाद, विद्युत एवं जल बिल विवाद (चोरी से सम्बन्धित विवादों सहित), सर्विस में वेतन सम्बन्धित विवाद एवं सेवानिवृत्ति लाभो से सम्बन्धित विवाद, राजस्व वाद, अन्य सिविल वाद (किराया, सुखाधिकार, व्ययादेश, विशिष्ट अनुतोष वाद) आपसी सुलह समझौते के आधार पर निस्तारित हो सकने वाले समस्त प्रकार के वादों का निस्तारण किया जायेगा। वादकारी अपने सम्बन्धित न्यायालय में सम्पर्क कर अपने वादों को राष्ट्रीय लोक अदालत हेतु सन्दर्भित कराकर लोकर अदालत का लाभ उठायें।

परिवार परामर्श केन्द्र में 18 प्रकरणों में हुई काउंसलिंग, चार के विरूद्ध अभियोग पंजीकृत

प्रतापगढ़। पुलिस द्वारा परिवार परामर्श केन्द्र पर पति-पतने के विवाद में कानूनी कार्यवाही से पूर्व काउण्सलर की उपस्थिति में विवाद का सौहार्दपूर्ण समाधान कराया जाता है। इसी क्रम में गुरुवार को पुलिस लाइन में स्थित सभागार स्थल पर प्रतापगढ़ पुलिस द्वारा जनपद से पति-पतने विवाद के कुल 18 प्रकरणों से सम्बन्धित सभी परिवारों को बुलाया गया, जिसमें से 16 परिवार उपस्थित हुए। समाजसेवी सुरेश जायसवाल, श्रद्धा सिंह व जनपद पुलिस की महिला सहायता प्रकोष्ठ की पूरी टीम द्वारा उपस्थित परिवारों को समझाया बुझाया गया जिसमें से एक पति-पतने अपनी-अपनी गलती को स्वीकारते हुए पुनः एक साथ रहने के लिए तैयार हुए और पतने अपनी पति के साथ खुशी-खुशी अपने घर गई। काफी समझाने के बाद भी चार परिवारों द्वारा विवाद खत्म नही किया गया, जिनके विरूद्ध अभियोग पंजीकरण की कार्यवाही की जा रही है। शेष परिवारों को समझाया बुझाया गया तथा सौहार्दपूर्ण समाधान हेतु अगली तारीख पर बुलाया गया है।

जमीनी विवाद व मारपीट में 23 लोगों का हुआ चालान

परियावां, प्रतापगढ़। नवाबगंज थाना क्षेत्र में जमीनी विवाद व मारपीट के मामले में पुलिस ने थाना क्षेत्र के मद्दुपुर, जनवामऊ परसई, लवाना, सहित अन्य गाव के मारपीट के मामले में पुलिस ने तीन दिन के अंदर 23 लोगो का शांति भंग में चालान किया। बता दें कि थाना क्षेत्र के अधिकतर गाँव मे जमीनी विवाद व मामूली बात की कहा सुनी को लेकर दोनों पक्ष थाने पहुँच रहे है जिसमे मामला सुलझ न होने पर पुलिस शांति भंग में पाबन्द करके न्यायालय भेज दे रही है जिससे न्यायालय का बोझ बढ़ता जा रहा है और पीड़ित कोर्ट की पैरवी में अपना समय व पैसा दोनों बर्बाद कर रही है।

अर्द्धनग्न होकर एम्बुलेंस चालकों ने किया प्रदर्शन

सीएमओ को सौंपी एम्बुलेंस की चाभी, कांग्रेसजन मिले आंदोलनकारियों से

प्रतापगढ़। सरकार की धमकियों के बावजूद एम्बुलेंस चालकों ने आज आठवें दिन पृथ्वीगंज हवाई अड्डे पर अपनी एम्बुलेंस को क्रम से खड़ी करके अर्द्धनग्न होकर जबरदस्त प्रदर्शन किया और कहा कि सरकार की धमकियों के आगे एम्बुलेंस चालक झुकने वाले नहीं हैं। एम्बुलेंस चालकों की इस हड़ताल से मरीजों को भारी परेशानी झेलनी पड़ रही है। गुरुवार को दिन में सीओ सिटी अभय पाण्डेय के साथ मुख्य चिकित्साधिकारी डा0 अरविन्द श्रीवास्तव पृथ्वीगंज हवाई अड्डे पर जाकर हड़ताली एम्बुलेंस चालकों से मिले और शासन के निर्देश पर एम्बुलेंस चालकों ने अपनी-अपनी एम्बुलेंस की चाभी सीएमओ को सौंप दी। बाद में एसडीएम रानीगंज के भी पहुंचने की खबर है। चालक संघ के जिलाध्यक्ष मधुकर सिंह ने कहा कि आंदोलित चालक अपने हक के लिये जेल भरो आंदोलन की तैयारी कर रहे हैं। इसके पहले कांग्रेस के जिलाध्यक्ष डा0 लालजी त्रिपाठी के नेतृत्व में कांग्रेस का एक प्रतिनिधिमण्डल हड़ताली एम्बुलेंस चालकों से पृथ्वीगंज हवाई अड्डे पर जाकर मिला और उनकी हौसला अफजाई किया। कांग्रेसजनों ने हड़ताली एम्बुलेंस चालकों की मांगों का समर्थन करते हुए कहा कि कांग्रेस उनके साथ खड़ी है। उन्हें कोरोना योद्धा बताते हुए कांग्रेस जिलाध्यक्ष लालजी त्रिपाठी ने कहा कि इनके वेतन व सेवा शर्तो में सुधार होना चाहिये। कांग्रेस के प्रतिनिधिमण्डल में जिलाध्यक्ष लालजी त्रिपाठी के अलावा डा0 नीरज तिवारी, कांग्रेस के शहर अध्यक्ष इरफान अली, वरिष्ठ कांग्रेसी फतेह बहादुर सिंह व सुरेश मिश्रा आदि रहे।

.बता दें कि आधुनिक एम्बुलेंस का संचालन बदलने के बाद अब नई कम्पनी टेट्ठनिंग के नाम पर 20-20 हजार की मांग कर रही है। सरकार इनकी जायज मांगों को सुनने को तैयार नहीं है। इसी के विरोध में सैकड़ों एम्बुलेंस चालक एक सप्ताह से एम्बुलेंस का चक्का जाम किये गये हैं। इससे गंभीर मरीजों के सामने एक संकट खड़ा हो गया है। गंभीर मरीजों को प्राइवेट वाहनों से प्रयागराज भेजा जा रहा है। इसके अलावा जिले भर से मुख्यालय आने वाले मरीज भी निजी वाहन का प्रयोग कर रहे हैं जबकि ज्यादातर प्राइवेट वाहनों में स्वास्थ्य सुविधा नहीं है। मरीजों के हित में सरकार को अविलम्ब इस हड़ताल को समाप्त करनी चाहिये।

प्रतापगढ़ पहुंची टोक्यो ओलम्पिक खेल के सदस्यों का हुआ स्वागत

प्रतापगढ़। टोक्यो ओलम्पिक खेल 2020 जागरूकता अभियान के तहत 5 सदस्यों की टीम गुरुवार को प्रतापगढ़ पहुंची, जहां पर लायंस क्लब प्रतापगढ़ के संयुक्त तत्वाधान में चिलबिला स्थित श्री राम बालिका इंटर कालेज में भव्य स्वागत एवं सम्मान समारोह का कार्यक्रम किया गया।

इस कार्यक्रम का संचालन डिप्टी डिस्ट्रिक्ट गवर्नर डॉ पीयूष कांत शर्मा द्वारा संचालित किया गया। कार्यक्रम में लायंस क्लब गौरव, हर्ष, शक्ति और अवध की टीम मौजूद रहे।

इस कार्यक्रम में रीजनल चेयर पर्सन पुष्पांजलि शुक्ला, जोन चेयरपर्सन डॉ क्षितिज श्रीवास्तव, को-चेयरपर्सन संतोष भगवन, लायंस क्लब गौरव के अध्यक्ष कंचन सिंह, सचिव स्मृति सिंह, लायंस क्लब हर्ष के सचिव अश्वनी सिंह, कोषाध्यक्ष अमितेन्द्र श्रीवास्तव, लायंस क्लब अवध से अध्यक्ष राजेंद्र शुक्ल, कृष्ण कुमार पांडेय, सूबेदार उप्पाध्याय, बृजभान सिंह, शिशिर खरे, आनंद केसरवानी, लक्ष्मी मिश्रा आदि लोग मौजूद रहे।

आज आएंगे भाजयुमो प्रदेश अध्यक्ष, तैयारी पूरी

प्रतापगढ़। भारतीय जनता युवा मोर्चा नवनियुक्त युवा मोर्चा प्रदेश अध्यक्ष प्रांशुदत्त द्विवेदी शुक्रवार को जिले में आएंगे। भाजयुमो जिलाध्यक्ष रवि गुप्ता ने बताया कि प्रथम बार प्रतापगढ़ जिले में आगमन पर प्रदेश अध्यक्ष का भव्य स्वागत किया जाएगा। जिले की प्रयागराज सीमा पर रामफल इनारी से कोहंडौर तक स्वागत करने की योजना युवा मोर्चा प्रतापगढ़ द्वारा बनायी गयी है। इसी क्रम में देल्हूपुर में ब्लाक प्रमुख सत्यम ओझा और भाजयुमो जिला मीडिया प्रभारी संदीप मिश्रा, गोपालापुर में भाजयुमो प्रदेश उपाध्यक्ष सूरज सिंह सोमवंशी, बाबागंज में जिलाध्यक्ष रवि गुप्ता,चैक में चंचल शुक्ला के नेतृत्व में भव्य स्वागत किया जाएगा। वहीं चिलबिला के राधे पैलेस में आयोजित स्वागत समारोह में भाजयुमो प्रदेश अध्यक्ष प्रांशुदत्त द्विवेदी का भव्य स्वागत किया जाएगा जिसमें कैबिनेट मंत्री मोती सिंह, रानीगंज विधायक धीरज ओझा, भाजपा जिलाध्यक्ष हरिओम मिश्रा, भाजयुमो प्रदेश उपाध्यक्ष सूरज सिंह सोमवंशी, क्षेत्रीय उपाध्यक्ष मुदित सिंह व युवा मोर्चा कार्यकर्ता सम्मिलित होंगे।

शिकायतों का प्राथमिकता के आधार पर निस्तारण करें अधिकारी : डीएम

जिलाधिकारी ने जनता दर्शन के दौरान सुनी जनसमस्याएं

प्रतापगढ़। जिलाधिकारी डॉ0 नितिन बंसल ने गुरुवार को जनता दर्शन के दौरान कलेक्ट्रेट कार्यालय में कोविड-19 की गाइडलाइन का पालन करते हुए जन सामान्य की समस्याएं सुनी एवं उनके निस्तारण हेतु संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिया।

जिलाधिकारी ने जनता दर्शन में आए लोगों से अपील करते हुए कहा कि कोविड-19 संक्रमण से बचाव हेतु सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करें, मास्क लगाएं तथा साफ-सफाई व सैनिटाइजेशन पर नियमित रूप से ध्यान दें, 18 वर्ष से ऊपर आयु के सभी व्यक्ति अपना कोविड टीकाकरण अवश्य कराएं। कलेक्ट्रेट कार्यालय में जिलाधिकारी ने सोशल डिस्टेंसिंग का पालन कराते हुए जन समस्याएं सुनी तथा निस्तारण हेतु संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिया। आज जन सुनवाई के दौरान जिलाधिकारी के समक्ष नाली विवाद, भूमि पर अवैध कब्जे, वसीयत, भूमि की पैमाइश, शौचालय, राशन, आवास आदि से संबंधित शिकायतें प्राप्त हुई, जिनके निस्तारण हेतु जिलाधिकारी ने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि जन सामान्य की शिकायतों को लंबित न रखा जाए, शिकायतों का प्राथमिकता के आधार पर निस्तारण किया जाए, इसके साथ ही उन्होंने कहा जिस भी विभाग से संबंधित शिकायत लंबित पाई गई तो संबंधित अधिकारी के विरुद्ध कड़ी कार्यवाही की जाएगी। इस दौरान अपर जिलाधिकारी (वि0 एवं राजस्व) सत्रोहन वैश्य सहित अन्य मौजूद रहे।

नारंगपुर में एसडीएम पट्टी ने किया मदिरा की दुकान का निरीक्षण

एसडीएम ने बेलखरनाथ धाम में सावन मेले का किया निरीक्षण

पट्टी, प्रतापगढ़। गुरुवार को पट्टी एसडीएम धीरेंद्र प्रताप सिंह ने पट्टी तहसील स्थित नारंगपुर बाजार में देसी सरकारी मदिरा की दुकान का निरीक्षण किया। दुकान के सामने गंदगी मिलने पर उन्होंने सेल्समैन को फटकार लगाई और कोविड नियमों के पालन के तहत दुकान संचालित करने का निर्देश दिया और हिदायत दिया कि दुबारा गंदगी मिलने पर सख्त कार्यवाही की जाएगी।

उधर सावन मास के पावन पर्व पर पट्टी क्षेत्र प्राचीन शिवमंदिर आस्था का केंद्र बाबा बेलखरनाथ में श्रद्धालुओं का धाम दर्शन, पूजन जलाभिषेक का क्रम नियमित चल रहा है। कोविड-19 गाइडलाइन के चलते मंदिर परिसर में 5 से अधिक लोगों को एकत्र होने की इजाजत नहीं है।

ऐसे में मेला परिसर में भीड़ भाड़ पर भी प्रतिबंध है। दोपहर में एसडीएम धीरेंद्र प्रताप सिंह बेलखरनाथ स्थित शिवधाम पर पहुंचे और मंदिर परिसर से लेकर धाम का निरीक्षण किया। इस दौरान साफ सफाई और कोविड-19 गाइडलाइन के पालन के लिए धाम सेवा समिति को निर्देशित किया। उन्होंने सोशल डिस्टेंसिंग और स्वच्छता बनाये रखने की अपील भी किया।

जिला उद्योग बन्धु की बैठक कल

प्रतापगढ़। उपायुक्त उद्योग जिला उद्योग प्रोत्साहन एवं उद्यमिता विकास केन्द्र दिनेश कुमार चैरसिया ने बताया है कि माह जुलाई 2021 की जिला उद्योग बन्धु की बैठक 31 जुलाई 2021 को जिलाधिकारी की अध्यक्षता में अपरान्ह 4.30 बजे कलेक्टेट्ट सभाकक्ष में आयोजित की गयी है।

रंजिश में युवक को मारा पीटा तथा घर में की तोड़फोड़

पट्टी, प्रतापगढ़। पट्टी कोतवाली क्षेत्र के परसंडा गांव में बीते 11 जुलाई को मारपीट के मामले में पुलिस ने आधा दर्जन लोगों के खिलाफ मारपीट गाली-गलौज तथा तोड़फोड़ के मामले में मामला दर्ज किया है।

पट्टी कोतवाली क्षेत्र के परसंडा गांव के रहने वाले सलीम ने बताया कि बीते 11 जुलाई को मकान बनाने की विवाद को लेकर गांव के चांद बाबू, इश्तियाक, सहवाज, नौशाद वकील कैसर तौफीक, नसीम और इश्तियाक आदि ने एक राय होकर सरिया तथा लाठी-डंडों से मारा पीटा। पीड़ित जब जान बचाने के लिए घर में भागा तो आरोपियों ने घर में घुसकर लाठी डंडे से मारा पीटा तथा पीड़ित के भाई मुहीद को मारा पीटा जिससे वह बेहोश हो गया आरोपियों ने घर के टीनशेड को तोड़ दिया तथा बाइक क्षतिग्रस्त कर दिया। पीड़ित की तहरीर पर सभी आरोपियों पर संबंधित धाराओं में मुकदमा दर्ज कर लिया।

मारपीट के मामले में दूसरे पक्ष से भी मुकदमा दर्ज

पट्टी, प्रतापगढ़। दो दिन पूर्व पट्टी कोतवाली के रसुलहा गांव में मारपीट के मामले में बुधवार को एक पक्ष की तहरीर पर आधा दर्जन लोगों के खिलाफ मामला दर्ज किया गया था वहीं गुरुवार को दूसरे पक्ष की तहरीर पर पुलिस ने सात लोगों के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया।

पट्टी कोतवाली क्षेत्र के रसुलहा गाँव के नागेंद्र ने बताया कि 27 जुलाई को शाम 5.30 बजे अपने खेत में चारा काटते समय एक राय होकर भगवानदीन, शमशेर, विवेक कुमार, मुलायम, सीमा देवी, गायत्री देवी तथा रीना देवी ने लाठी-डंडों से लैस होकर मारा-पीटा, गाली गलौज किया तथा जान से मारने की धमकी दिया। पुलिस ने पीड़ित की तहरीर पर आरोपियों पर संबंधित धाराओं में मामला दर्ज कर लिया।

फोरलेन हाईवे पर जेसीबी लगाकर हटाया गया अतिक्रमण

पट्टी, प्रतापगढ़। तहसील पट्टी क्षेत्र के ढकवा बाजार से गुजर रही वाराणसी लखनऊ राज्य मार्ग का चैड़ीकरण का फोरलेन बनाया जा रहा है। हाईवे के बीच में विष्णु ढाबा नाम से रेस्टोरेंट चल रहा था। जिससे फोरलेन निर्माण में बाधा आ रही थी शिकायत आने के बाद एसडीएम धीरेंद्र प्रताप सिंह के निर्देश पर पहुंचे प्रशासनिक अमले ने जेसीबी लगाकर बीच रास्ते में किया गया अतिक्रमण ढहा दिया, जिससे फोरलेन हाईवे के निर्माण में आ रही बाधा समाप्त हो गई। अब हाईवे का निर्माण पूरा होने पर यातायात सुगम हो सकेगा।

पूर्व चेयरमैन गुलशन यादव पर मुकदमा दर्ज

प्रतापगढ़। कुंडा टाउन एरिया के पूर्व चेयरमैन गुलशन यादव व 14-15 अज्ञात पर नगर कोतवाली में जान से मारने की धमकी, हरिजन उत्पीड़न जैसी गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज हुआ है। एडीजी एल/ओ के निर्देश पर हुई जांच के बाद मुकदमा दर्ज हुआ। एक फरवरी 2021 की घटना पर 5 माह बाद मुकदमा दर्ज हुआ। सपा अध्यक्ष छविनाथ यादव द्वारा 2020 में की गई मारपीट के मुकदमे की पैरवी को गवाह के साथ शिकायतकर्ता अर्जुन दलित कचेहरी आया था।

जिलाधिकारी की अध्यक्षता व कलेक्ट्रेट सभागार उद्योग बंधु की बैठक संपन्न

अखंड भारत संदेश

भदोही। जिलाधिकारी महोदया आर्यका अखौरी की अध्यक्षता में कलेक्टेट सभाकक्ष में उद्योग बन्धु की बैठक सम्पनन्‍ हुई, जिसमें उद्यमियों की समस्याओं को प्राथमिकता के आधार पर निस्तारित करायी जाय, यह भी कहा कि शासन द्वारा निर्धारित रोस्टर के अनुरूप उद्यमियों को विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए अधिशासी अभियन्ता विद्युत को निर्देश दिया। उन्होंने इंदिरा मिल पुल के नीचे सर्विस रोड खराब होने की सिकायत पर जिलाधिकारी महोदया ने पी डब्लू डी एक्सियन को निर्देश दिया की रोड को आवागमन योग्य बनाने का निर्देश दिया। रेवड़ा परसपुर मार्ग अत्यन्त ही खराब है सड़के ठीक कराने के सम्बन्ध में जिलाधिकारी महोदया ने अधिशासी अभियंता पी डब्लू डी को निर्देश दिया कि शीघ्र निर्माण कार्य को चालू कराकर पूर्ण कराये। उनके द्वारा दी गयी उर्जा को बिल में समायोजित करने के पश्चात् विद्युत बिल उपलब्ध कराने के प्रकरण को जिलाधिकारी ने अधिशासी अभियंता विद्युत को शीघ्र निस्तारण करने के निर्देश दिये। उद्यमियों द्वारा अत्यधिक ब्रेक डाउन की शिकायत होने पर जिलाधिकारी महोदया में विद्युत विभाग के अधिकारी को निर्देश दिया कि जो कर्मचारी ब्रेक डाउन कर रहा उन कर्मचारियों के खिलाफ अस्पष्टी करण देने का निर्देश दिया। चौरी रोड से ब्लाक कार्यालय भदोही के पीछे से जल्लापुर होते हुए बाईपास रोड को जोड़ने वाली सड़क को बनाने का निर्देश जिलाधिकारी महोदया ने पी डब्लू डी एक्सियन को निर्देश दिया कि रोड का कार्य एवं पानी निकासी के लिए भी व्यवस्था सुनिश्चित कराया जाय। भदोही ओद्योगिक विकास प्राधिकरण बिडा द्वारा भवन मानचित्र के समय जमा कराए जाने वाले विकास शुल्क व उपकर गोरखपुर में औद्योगिक विकास प्राधिकरण से लिए जाने वाले शुल्क से बहुत ज्यादा है। जिलाधिकारी महोदया ने कहा कि अगस्त में बैठक होने पर इस पर कार्यवाही की जायेगी। निवेश मित्र पोर्टल में विद्युत सिफ्टी आबकारी विभाग, फूड सेफ्टी एवं ड्रग विभाग, वन एवं वाइल्ड लाइफ विभाग, हाउसिंग एवं अर्बन प्लानिंग डिपार्टमेंट, यू पी राज्य औद्योगिक विकास निगम, औद्योगिक विकास प्राधिकरण, श्रम विभाग, बाट माप विभाग, पिकप, पी डब्लू डी, रजिस्टार, फर्म एंड सोसाइटी, राजस्व विभाग, स्टाम्प एंड रसिट्रेशन विभाग, अर्बन डेवलपमेंट विभाग, उत्तर प्रदेश फायर सर्विस, यू पी प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड एवं यूपी पावर कॉर्पोरेशन लिमिटेड से संबंधित समस्त आवेदन पत्र पोर्टल पर उपलब्ध है।सभी अधिकारियो को हिदायत दी कि उद्यमियों से सम्बन्धित जिन विभागों के अधिकारियो को जो भी दायित्व सौपा गया है, उसका वखूबी निर्वहन करे कोताही बरतने वाले अधिकारियो को किसी कीमत पर बक्शा नही जायेगा। इस अवसर पर उद्योग महाप्रबन्धक हरेन्द्र प्रताप, एकमा के पदाधिकारी उद्यमी तथा अन्य विभागों के सर्म्बिन्धत अधिकारी उपस्थित रहे।

सड़क पर जल जमाव होने से राहगीरों का चलना हुआ दुश्वार

अखंड भारत संदेश

भदोही। जिले के सुरियावां बाईपास चौराहे से ज्ञानपुर जाने वाले मार्ग पर इन दिनों वर्षा का पानी जमा होने से आवागमन में परेशानी उठानी पड़ रही है।

उक्त मार्ग से काफी संख्या में लोगों का ज्ञानपुर, गोपीगंज आदि जगहों पर दिन भर आवागमन होता रहता है। हर वर्ष बरसात के समय नाली की निकासी ना होने से सड़क पर गंदे पानी जमा हो जाता है। यहां तक की तेज बारिश में सड़क के किनारे दुकानदारों के घरों में भी पानी घुस जाता है। यह सड़क पीडब्लूयूडी के अंतर्गत है। इस समस्या को अधिकारियों के संज्ञान में कई बार दिया गया परंतु आज तक कोई कार्रवाई नहीं की गई। नागरिकों ने जिलाधिकारी का ध्यान आकृष्ट कराते हुए कहा कि उक्त संपर्क मार्ग जनहित में तत्काल ठीक कराया जाए जिससे आमजन को असुविधा ना उठानी पड़े।

ठगों ने उड़ाए डेढ़ लाख के जेवर

भदोही। जिले के चौरी क्षेत्र के चादीगहना गाव में बुधवार को जेवर साफ करने के बहाने लगभग डेढ़ लाख के जेवर ठगो ने उड़ा दिया गया। ठगी की जानकारी होते ही पीडि़ता के होस उड़ गए। सूचना पर मौके पर पहुची पुलिस जाच मे जुट गयी। हालाँकि एक ठग की वीडियो किसी ने बना लिया है। दोपहर बाद गाव निवासी सुरेंद्र मिश्रा के घर पर सिर्फ महिलाएं थी। इसी बीच अपाचे बाइक सवार दो लोग पहुँचे व जेवर साफ करने की बात करने लगे। झांसे में आकर घर पर मौजूद महिला ने दो सोने की चैन एक झुमका व दो अगुठी साफ करने के लिए ठगो को दे दिया। ठगो ने जेवर एक डिब्बे में रख दिया व दूसरे डिब्बे मे रखा नकली जेवर महिला को देकर कहा कि इसे घर के अंदर से गर्म करके ले आइये। जब तक घर के अंदर गयी महिला मामले को समझी तब तक ठग फरार हो चुके थे। इस बीच किसी ने एक वीडियो बना लिया था, जिसमे एक ठग का चेहरा दिखाई दे रहा है। पुलिस मामले की जाच कर रही है।

कोराव पुलिस की सक्रियता से मादक पदार्थी जुएं के फड़ एवं अवैध खनन पर लगी पाबंदी

अखंड भारत संदेश

लेडियारी। कोरांव थाना क्षेत्र के बड़ोखर में जहां सजती थी जुए की फड़ वह जगह विरान लगती है यह फड़ 40 वर्ष पूर्व लगती थी जो की कहानी में तब्दील हो गई है कोराव में जहां कुंटलो गांजा खुलेआम बिकता था आज लोग देवताओं को गांजा चढ़ाने के लिए तरस रहे हैं।

यह पूरा पुलिस का दहशत नहीं तो क्या है लोग अमन चैन की घंटी बजा रहे हैं। बताया जाता है कि आजादी के बाद राज रियासत जमीदारो का जब दौर चला तो कई गांवों में जुए के शौकीन जुए की फड़ लगवा कर नाल लेते थे 10 प्रतिशत यह दौर कुछ समय तक चला बाहर से जुआरी आकर बड़ोखर कोराव आदि गांवों में पनाह लेते थे लाखों रुपए का वारा न्यारा होता था वहां पर खान-पान की दुकानें लगी रहती थी परंतु मोबाइल का जमाना आ जाने से जुए के अड्डे बंद हो गए।

उक्त जगह वीरान सी हो गई है इस समय कोराव पुलिस की सक्रियता के चलते शराब, गाजा ,खनन माफियाओं का बाजा बज गया है यह कह रहे हैं इस समय जो इंस्पेक्टर कोरांव थाने में हैं सुरेश सिंह इनके रहते अवैध काम नहीं हो पाएगा जिससे पूरा धंधा चौपट हो गया है एक माफिया ने नाम न छापने की शर्त पर बताया कि वर्तमान इंस्पेक्टर कोरांव यदि बने रहे तो हम लोग माफिया दिवालिया घोसित हो जाएंगे हालत बहुत बद से बदतर हो चुकी है दूसरा धंधा समझ में नहीं आ रहा है यही चलता रहा तो 2 जून रोटी के लाले पड़ जाएंगे उन्होंने कहा कि कई सफेद पोश धारियों को लगाया है इंस्पेक्टर को हटवाने के जुगाड़ में देखिए आगे क्या होता है?

क्षेत्रीय जनता का कहना है कि इसी तरह कोराव थाने के इंस्पेक्टर जिम्मेदारी से कार्य करें तो क्षेत्र की समस्या तथा पीडि़तों को न्याय और जनता में अमन चैन रहेगा।

जनपद न्यायालय में स्थाई लोक अदालत हुआ शुरू

अखंड भारत संदेश

भदोही। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण भदोही ने बताया कि उत्तर प्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण लखनऊ के द्वारा जनपद भदोही में जनपद न्यायालय सरपतहा ज्ञानपुर के परिसर में ए डी आर केंद्र के प्रथम तल पर स्थाई लोक अदालत की न्यायालय का गठन कर दिया गया है। जिसमे मा 0 श्री राज नारायण पांडेय अध्यक्ष श्री मती सीमा श्रीवास्तव तथा श्री मनोज कुमार मिश्रा सदस्य के रूप में कार्यरत है। स्थाई लोक अदालत का संचालन सुचारू रूप से शुरू हो चुका है जिसमें निमन्‍ जन उपयोगी सेवाओं से संबंधित विवादों के मामले दायर किए जा सकते है। वायु, सड़क मार्ग या जल मार्ग से संबंधित सेवाएं। डाक तार टेलीग्राम एवं दूरसंचार सेवाए। पावर सप्लाई लाइट या पानी से संबंधित सेवाए। साफ सफाई संबंधित सेवाए। अस्पताल या डिस्पेंसरी से संबधित सेवाए। बीमा सेवाए, गृह एवं संपदा संबंधित सेवाए, बैंकिंग एवं वित्त संबंधित सेवाएं। उपयुक्त संबंधित मामलों का निपटारा सुलह समझौते के आधार पर किया जाएगा एवं सुलह समझौता न होने की स्थिति में गुण अवगुण के आधार पर सुलह कर दिया जायेगा जो कि अंतिम होगा जिसकी कोई अपील नहीं होगी। सूचना विभाग द्वारा जनहित में जारी।

दो पक्षों में चल रहे पुराने विवाद को लेकर दोनो पक्ष पहुंचा कोतवाली

अखंड भारत संदेश

गोपीगंज/भदोही। कोतवाली क्षेत्र के अमवा माफी गांव में पुराने झगड़े के निपटारे को लेकर कोतवाली में दोनों पक्षों की जमघट रही। बताया जाता है की कुछ दिन पूर्व एक बागीचे में जुआ खेल रहे लोगो का वीडियो वायरल होने की वजह से गांव में विवाद हो गया था। जिसको लेकर एक व्यक्ति को मारने पीटने की धमकी की शिकायत कोतवाली में पीडि़त ने दिया था।

जिसको लेकर पुलिस ने एक पक्ष से कुछ लोगो को शांति भंग की आशंका में जेल भी भेजा। उसी मामले को लेकर यह बात दो समुदायों के बीच का बन गया। जिसपर पुलिस ने दोनो समुदायों को कोतवाली पर बुलाया एक से दोनो तरफ महिलाओं सहित काफी संख्या में लोग इकठ्ठे हुए। गांव के प्रधान सभाजीत सहित दोनो पक्षों को समझाते हुए दोबारा पुनरावृति न हो इसके लिए आपसी सहमति जताई गई। इस मौके पर नंदलाल पांडे, संजीव सिंह, गुलजार अंसारी, मैनुद्दीन आदि के समक्ष समझौता कराते हुए मामले को दोनो पक्षों को किसी तरह की पहल न करने को कहकर मामले का निपटारा किया गया।

जिलाधिकारी की अध्यक्षता में जिला सलाहकार समिति की बैठक सम्पन्न

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। जिलाधिकारी श्री संजय कुमार खत्री की अध्यक्षता में गुरूवार को संगम सभागार में पी0सी0पी0एन0डी0टी0 (जिला सलाहकार समिति) की बैठक सम्पनन्‍ हुई। बैठक में जिलाधिकारी ने अपर मुख्य चिकित्साधिकारी/नोडल अधिकारी डॉ0 ए0के0 तिवारी से पूछा कि रजिस्टेड्रशन क्यों करना आवश्यक है, जिसपर नोडल अधिकारी द्वारा बताया गया कि कन्या भूण्र हत्या रोकना सरकार की प्राथमिकता है, इसलिए रजिस्ट्रेशन कराया जाता है, इसके प्रभावी रोक के लिए समय समय पर मजिस्टेड्रट एवं स्वास्थ्य

अधिकारियों द्वारा केन्द्रों का निरीक्षण किया जाता है। अनियमितता पाये जाने पर उनके विरूद्ध कार्यवाही की जाती है। जिलाधिकारी द्वारा निर्देशित किया गया है कि सभी अल्ट्रासाउण्ड केन्द्र आनलाइन फार्म एफ की फीडिंग करना सुनिश्चित करें, जो ऐसा नहीं करेगा, उसके विरूद्ध एक हफ्ते बाद नोटिस जारी की जायेगी। उसके बाद भी यदि फीडिंग नहीं किया जायेगा तो उनका रजिस्टेड्रशन समाप्त कर दिया जायेगा। प्राप्त आवेदनों में जो पहले आवेदन दिये है, उसमें से 50 प्रतिशत पर सहमति प्रदान की गयी है। बैठक में डॉ0 कमलाकर सिंह, डॉ0 राजेश, संयुक्त निदेशक अभियोजन, आलोक वर्मा और अनिल यादव उपस्थित रहे।

प्रवीण कुमार तिवारी को स्काउट और गाइड पद पर नियुक्त

प्रयागराज। प्रादेशिक मुख्य आयुक्त भारत स्काउट और गाइड उत्तर प्रदेश डॉ प्रभात कुमार ने भारत स्काउट और गाइड जनपद प्रयागराज मे जिला कमिशन्‍र स्काउट के पद पर प्रवीण कुमार तिवारी जिला जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी जनपद प्रयागराज एवं जिला कमिशन्‍र गाइड के पद पर ज्योत्सना सिंह प्रधानाचार्या राजकीय बालिका इंटर कॉलेज कटरा प्रयागराज को नियुक्त किया। प्रादेशिक मुख्यालय द्वारा जारी अधिकार पत्र को जिला मुख्य आयुक्त /मुख्य विकास अधिकारी द्वारा नवनियुक्त जिला कमिशन्‍र स्काउट गाइड प्रयागराज को दिया गया।

चोरी की मोटरसाइकिल के साथ पुलिस के हत्थे चढ़े दो अभियुक्त

अखंड भारत संदेश

भदोही। भदोही पुलिस द्वारा 02 नफर (चोरी के 04 अदद मोटरसाइकिल के साथ)व 01 ?फर वांछित तथा 21 व्यक्तियों को शान्ति भंग के अंदेशा में धारा 151/107/116 सी0आर0पी0सी0 समेत कुल 24 अभियुक्त हुए गिरफ्तार थाना भदोही क्षेत्र अन्तर्गत उ0नि0श्री अभिनाष प्रकाश राय मय हमराह टीम दिनांक 28.07.2021 को थाना भदोही के चौकी मोढ क्षेत्र अंतर्गत वाहन चोरियों की रोकथाम व अपराधियों की गिरफ्तारी के निर्देश के क्रम में चोरी की चार अदद मोटरसाइकिल को इकट्ठा कर बेचने के फिराक में थे कि मुखबिरी सूचना के आधार पर ग्राम जमुनीपुर बारी

से दो वाहन चोरों आकाश उपाध्याय उर्फ धर्मू उपाध्याय पुत्र राजकुमार उपाध्याय निवासी बनकट वेदपुर थाना ज्ञानपुर जनपद भदोही डब्बू गौतम पुत्र राजपति गौतम निवासी लालानगर थाना गोपीगंज जनपद भदोही को गिरफ्तार कर अभियुक्तगण के कब्जे से चोरी की चार अदद मोटरसाइकिल क्रमशः ळझ् 63ँ 3884 सुपर स्प्लेंडर, ळझ् 62ँ ळ 8694 सुपर स्प्लेंडर, ळझ् 63 ल् 2984 पैशन व टीवीएस स्टार सिटी यूपी 65ँ 4049 बरामद किया गया। उक्त गिरफ्तारी/बरामदगी के संबंध में थाना भदोही पर मुकदमा अपराध संख्या-162/2021 धारा-41, 411, 413, 414 भा0द0वि0 का अभियोग पंजीकृत किया गया तथा थाना स्थानीय पर पंजीकृत मुकदमा अपराध संख्या- 159/2021 धारा- 379 भा0द0वि0 का सफल अनावरण करते हुए अभियुक्तगण का चालान मा0 न्यायालय किया गया।

उ0नि0श्री रामनरायण शुक्ला द्वारा मु0अ0सं0 321/20 धारा 363,366,376 भादवि व 3/4 पाक्सो एक्ट का वांछित अभियुक्त जीगनेश पटेल पुत्र धिरूभाई पटेल निवासी कड़ौदरा सूरत (गुजरात) को रेलवे स्टेशन भदोही से गिरफ्तार कर चालान मा0 न्यायालय किया गया।

पत्रकार एसोसिएशन पर्यावरण को बचाने के लिए कृतसंकल्पित : प्रांतीय संरक्षक

प्रांतीय वा जिला स्तरीय बैठक मे पत्रकारों के सदर्भ मे हुई चर्चा

अखंड भारत संदेश

लेडियारी। पत्रकार एसोसिएशन प्रयागराज द्वारा पत्रकारो के हितो व समाचार संकलन मे हो रही असुविधाओ,पत्रकार उत्पीड़न व संगठानात्मक मजबूती हेतू प्रांतीय एवं जिला स्तरीय बैठक का आयोजन बारा मीडिया कार्यालय में गुरूवार को संम्पनन्‍ हुआ।तदोपरांत उप जिलाधिकारी बारा कार्यालय, परगना कार्यालय बारा एवं क्षेत्राधिकारी बारा कार्यालय परिसर में वृहद पौधारोपण संगठन के पदाधिकारियो द्वारा किया गया।

माँ सरस्वती के छाया चित्र पर पदाधिकारियो द्वारा माल्यार्पण के साथ पत्रकार एसोसिएशन प्रयागराज के प्रांतीय एवं जिला स्तरीय बैठक का शुभारम्भ किया गया। जिसपर कई महत्वपूर्ण बिंदुओं पर चर्चा करते हुए पदाधिकारियो ने अपने-अपने सुझाव दिए की संगठन कैसे और मजबूत और समृध्दि हो सके। साथ ही पत्रकारो को समाचार संकलन मे हो रही असुविधाओ और उनके उत्पीड़न के त्वरित निदान पर वृस्तृत चर्चा हुई। स्थापना दिवस कार्यक्रम

में मौजूद प्रांतीय संरक्षक कमलाकर सिंह ने कहा कि संगठन का विस्तार करना हमारा और आपका पहला कर्तव्य होना चाहिए एवं उसके साथ-साथ हम लोगों को संकल्प भी लेना चाहिए कि पर्यावरण को कैसे बचाए। पर्यावरण को संरक्षित करने के लिए पौधारोपण करना प्रत्येक व्यक्ति और संगठन के प्रत्येक नागरिक का पहला कर्तव्य होना चाहिए। हम सभी प्रथम चरण में सभी सरकारी संस्थानों में पौधारोपण का काम करेंगे। कार्यक्रम में मौजूद प्रांतीय संयोजक पी सी पांडेय ने कहां कि सरकारी संस्थानों के साथ-साथ क्षेत्र के सभी धार्मिक स्थानों व प्राथमिक,पूर्व माध्यमिक विद्यालयों व अपने आवासीय परिसर के खाली स्थानो पर भी पौधारोपण का कार्य किया जाना चाहिए।

जिसमें पत्रकार एसोसिएशन के सभी पदाधिकारियो और सदस्यो से भी सहयोग की अपील किया। जिससे प्राकृतिक पर्यावरण को सरंक्षित किया जा सके।और आने वाले भविष्य मे हमे,हमारे बच्चो और परिवार समाज को ऑक्सीजन के लिए ना तरसना पडे़। कार्यक्रम के उपरांत पत्रकार एसोसिएशन प्रयागराज द्वारा क्षेत्राधिकारी बारा कार्यालय के प्रांगण में कदम के पौधा का रोपण कर शुभारंम्भ किया गया। इसके उपरांत परगना कार्यालय एवं तहसील बारा कार्यालय परिसर में भी छायादार पौधे लगाए गए। इस अवसर पर मुख्य रूप से प्रांतीय अध्यक्ष अशोक पाठक,प्रान्तीय महामंत्री सुरेश चंद्र पाण्डेय जिला अध्यक्ष सुभाष शुक्ला, जिला महामंत्री सुमंत भार्गव, तहसील अध्यक्ष आशीष मिश्रा, जिला कोषाध्यक्ष सोनू भटनागर, आशुतोष त्रिपाठी, मनोज कुमार बिंद, नीरज केसरवानी, राकेश मिश्रा, माजिद अहमद, राजबहादुर यादव, इंद्रजीत मिश्रा,राम सिंह,कृष्ण चन्द्र शुक्ला सहित वरिष्ठ पत्रकारगणो की उपस्थिति रही।

48 घंटे में 7 हत्याओं से दहल उठा प्रयागराज, योगीराज में कानून व्यवस्था ताक परठ : अफ़सर महमूद

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। पिछले 48 घंटे में 7 हत्याएँ हो चुकी हैं प्रयागराज के विभिनन्‍ क्षेत्र में लगभग हर 1 घंटे में एक हत्या योगीराज में क़ानून व्यवस्था पूरी ध्वस्त हो चुकी है प्रयागराज में अपराधी बेखौफ हो चुके हैं और जिले की कानून व्यवस्था को खुलेआम रोज चुनौती दे रहे हैं। ऑल इंडिया मजलिस ए इत्तेहादुल मुस्लिमीन ए आई एम आई एम पार्टी प्रवक्ता अफसर महमूद व युवा नेता इफ्तेखार अहमद मंदर ने राज्य सरकार को घेरते हुए कहा की बीते 48 घंटो में कुल 7 हत्या की वारदातों से कानून व्यवस्था की स्थिति प्रयागराज समेत पूरे उत्तर प्रदेश में समझी जा सकती है जिले में आपराधियों का बोल बाला सत्ता के संरक्षण में सर चढ़कर बोल रहा है ।अपराधी खुलेआम खाकी को चुनौती दे रहे हैं। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ अपने हर भाषण और जगह-

जगह समय-समय पर कानून व्यवस्था की बात करते हैं और कहते हैं कि अपराधी प्रदेश छोड़ दें जबकि अपराधियों के हौसले देखकर ऐसा लगता है कि अपराधी कह रहे हैं योगी जी आप गद्दी छोड़ दीजिए प्रयागराज की घटना ने उनकी इन सब बातों को जुमलेबाजी साबित कर दिया आज प्रयागराज वासियों एवं प्रदेश वासियों के अंदर खौफ का माहौल है लोग डरे सहमे प्रदेश में अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं हत्या लूट डकैती अपहरण बलात्कार जैसी घटना प्रदेश में आम बात हो चुकी है इस सरकार ने पूरे उत्तर प्रदेश को नर्क बना कर छोड़ दिया है ।प्रयागराज की ज्यादातर घटनाओ मे पुलिस अभी तक खाली हाथ है और अपराधियों के हौंसले बुलंद हैं और प्रयागराज अपराध युक्ति जिला बन गया है।

शहरी मुहल्ले के 300 गरीब परिवारों को राशन किट वितरण किया और कोरोना संक्रमण से बचाव हेतु जागरूक किया

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। शहरी क्षेत्र के 300 गरीब परिवारों को रूरल इण्डिया सपोर्टिंग ट्रस्ट एवं सहयोगी संस्था विज्ञान फाउंडेशन के तत्वावधान में मम्फोर्डगंज मुहल्ले में भास्कर सिंह के आवास पर कोरोना संकट से कोई गरीब भूखा न रह जाए अभियान के तहत पांच किलो आटा , पांच किलो चावल , दो किलो दाल , दो किलो सरसों तेल , एक किलो चीनी ,आधा किलो डालडा घी , एक किलो नमक , 250 ग़ाम मसाला ,चार डिटाल साबुन दो पीस सैनिटरी नैपकिन , एक खादी मास्क आदि सामग्री का एक एक राशन किट वितरण किया गया ।

डॉ अखिलेश मिश्र को सी डब्लूयू सी का चेयरमैन नियुक्त किये जाने पर बधाई

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा शहर के वरिष्ठ पत्रकार डॉ अखिलेश मिश्र को किशोर न्याय बोर्ड एवम बाल कल्याण समिति सी डब्लूयू सी का अध्यक्ष नियुक्त होने पर भारतीय सांस्कृतिक परिषद के तत्वावधान में एक स्वागत सभा परिषद के संस्थापक अध्यक्ष फूल चन्द्र दुबे की अध्यक्षता में संस्था के कैम्प कार्यालय अल्लापुर में सम्पनन्‍ हुई। सभा के माध्यम से उपस्थित सभी पदाधिकारियों , सदस्यों तथा साहित्य एवम समाज सेवा से जुड़े विभनन्‍ संगठनों के प्रतिनिधियों ने एक श्वर में उपरोक्त नियुक्ति पर प्रसनन्ता व्यक्त करते हुए डॉ मिश्र के साथ ही प्रदेश सरकार को बधाई प्रेषित की। अपने सम्बोधन में फूल चन्द्र दुबे ने कहा कि डॉ अखिलेश मिश्र एक साधारण किन्तु सांस्कारिक परिवेश से जुड़े होने के कारण किशोर न्याय बोर्ड के अध्यक्ष की गरिमा के अनुरूप कार्य करते हुए प्रदेश सरकार की छबि को संवारने में सफल सिद्ध होंगे।

सम्पादकीय

अब कर्नाटक में बदलाव

बासवराज बोम्मई लिंगायत समुदाय से ही आते हैं और उनके करीबी भी माने जाते हैं तो संकेत यही हैं कि वह येदियुरप्पा को नाराज होने का मौका नहीं देंगे। फिर येदियुरप्पा के बेटे के राजनीतिक भविष्य का भी सवाल है। कर्नाटक में येदियुरप्पा के एक बार फिर मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा देने और बासवराज बोम्मई के उनकी जगह लेने से राज्य में पिछले कुछ समय से जारी अनिश्चितता तो खत्म हो गई, लेकिन उतने ही भरोसे के साथ यह नहीं कहा जा सकता कि बीजेपी की आगे की राह की दुश्वारियां भी खत्म हो गई हैं। वैसे भी छह महीने के अंदर यह तीसरा मौका है, जब बीजेपी के राष्ट्रीय नेतृत्व के इशारे पर किसी प्रदेश में मुख्यमंत्री बदला गया है। इनमें से दो मुख्यमंत्री उत्तराखंड में बदले गए। वैसे, कर्नाटक में नेतृत्व परिवर्तन का तर्क समझा जा सकता है। येदियुरप्पा 78 साल के हो चुके हैं।

क्या पार्टी 2023 में 80 साल के नेता की अगुआई में उन्हें मुख्यमंत्री का चेहरा बताते हुए चुनाव में उतरती? अगर ऐसा नहीं करना था तो मुख्यमंत्री बदलने के फैसले में और देर करने की कोई वजह नहीं थी। लेकिन कोई यह बात उस नेता को कैसे समझाए, जो चार बार मुख्यमंत्री बनने के बाद भी कभी कार्यकाल पूरा नहीं कर सका। पद से हटाए जाने की टीस येदियुरप्पा के मन में गहरी है और इसकी झलक उन्होंने इस्तीफे की घोषणा के समय दिए गए अपने वक्तव्य में भी दिखला दी। इसमें भी कोई शक नहीं है कि कर्नाटक में पार्टी को सत्ता की दहलीज तक पहुंचाने में उनका सबसे बड़ा हाथ है। अपने इस हाथ की ताकत वह न केवल खुद मानते हैं बल्कि इसे झुठलाने की कोशिश करने पर 2013 में इन्हीं हाथों से बीजेपी को सत्ता से बेदखल कर इसे रिवर्स रूप में भी दिखा चुके हैं। तब अपनी अलग पार्टी बना कर उन्होंने बीजेपी का सत्ता तक पहुंचना नामुमकिन बना दिया था। हालांकि 2018 में उनके रहते हुए भी पार्टी सत्ता तक नहीं पहुंच सकी, पर 'ऑपरेशन कमल' के जरिए सत्तारूढ़ विधायकों से इस्तीफे दिलवाकर उन्हें पार्टी में लाने और उपचुनावों में जिताकर पार्टी विधायकों की संख्या बढ़ा लेने का कमाल उन्होंने कर दिखाया। इस तरह बीजेपी बहुमत में आ गई और राज्य में उसकी सरकार बन गई। जाहिर है, इसी वजह से मुख्यमंत्री पद पर उन्होंने अपना हक माना और वह उन्हें मिला। लाख टके का सवाल यह है कि बदले हालात में उनका क्या रुख रहने वाला है? चूंकि बासवराज बोम्मई लिंगायत समुदाय से ही आते हैं और उनके करीबी भी माने जाते हैं तो संकेत यही हैं कि वह येदियुरप्पा को नाराज होने का मौका नहीं देंगे। फिर येदियुरप्पा के बेटे के राजनीतिक भविष्य का भी सवाल है। कर्नाटक में नई राजनीतिक व्यवस्था अभी तो ठीक दिख रही है, लेकिन क्या इससे बीजेपी को अगले चुनावों में समीकरण साधने में भी मदद मिलेगी? इस सवाल का जवाब तो भविष्य के गर्भ में है।

असम और मिजोरम के बीच ये तो होना ही था

लोकनाथ तिवारी

असम और मिजोरम की सीमा पर 26 जुलाई को दोनों राज्यों की पुलिस के बीच जो खूनी संघर्ष हुआ, देश में शायद ही पहले कहीं ऐसा हुआ हो। लेकिन यह झगड़ा अचानक नहीं हुआ। 10 जुलाई को विवादित क्षेत्र में असम पुलिस अतिक्रमण हटाने पहुंची, तब भी उस पर हमला हुआ था। पिछले साल अक्टूबर में भी दो बार दोनों राज्यों की सीमा पर आगजनी और हिंसा हुई थी। तब मिजोरम के दो लोगों को जला दिया गया था। असम और मिजोरम की सीमा काल्पनिक है, जो नदियों, पहाड़ों, घाटियों और जंगलों के साथ बदलती रहती है। पिछले कुछ सालों में दोनों राज्यों के बीच तनाव ने धार्मिक रंग भी ले लिया है। असम के सीमावर्ती इलाकों में अधिकतर निवासी बंगाली हैं, जिनमें मुस्लिम समुदाय की संख्या अच्छी-खासी है। मिजोरम के लोग कहते हैं कि ये शरणार्थी हैं और उनकी जमीन पर कब्जा जमाना चाहते हैं। मिजोरम में मुस्लिम आबादी 1991-2001 के बीच 122.54 फीसदी बढ़ी है, लेकिन कुल आबादी के प्रतिशत के रूप में यह काफी कम है। 2001 में राज्य में करीब 10 हजार मुसलमान यानी कुल आबादी के डेढ़ प्रतिशत से कम। इसके बावजूद इस मामले को लेकर हिंदुओं और मुसलमानों के बीच तनाव बढ़ रहा है। मिजोरम की कुल आबादी 12 लाख है। यहां मिजो जाति का वर्चस्व है, जिसकी जनसंख्या में हिस्सेदारी 74 फीसदी है। मिजो के बाद दूसरी प्रमुख कम्युनिटी चकमा है। कुल आबादी में चकमा 9 फीसदी हैं। मिजोरम और असम के बीच सीमा विवाद की जड़ें औपनिवेशिक काल से जुड़ी हैं। 1830 तक कछार एक स्वतंत्र राज्य था। 1832 में यहां के राजा की मौत हुई। उसका कोई उत्तराधिकारी नहीं था। उस समय इस राज्य पर ईस्ट इंडिया कंपनी ने कब्जा कर लिया। अंग्रेजों की योजना लुशाई यानी मिजो हिल्स की तलहटी पर चाय बागान लगाने की थी। 1875 में अंग्रेजों ने फिर इनर लाइन रेगुलेशन (आईएलआर) लागू किया ताकि

असम में पहाड़ी और आदिवासी इलाकों को अलग किया जा सके। मिजो आदिवासी इससे खुश थे, उन्हें लगा कि अब कोई उनकी जमीन पर अतिक्रमण नहीं कर सकेगा।ब्रिटिश राज ने 1933 में कछार और मिजो हिल्स के बीच औपचारिक तौर पर सीमारेखा खींच दी। इस प्रक्रिया में मिजो ट्राइब्स को शामिल नहीं किया गया। उन्होंने नई सीमा का विरोध किया और 1875 आईएलआर को फिर से लागू करने की मांग की। 1947 में देश आजाद हुआ और इसके तीन साल बाद असम इसका एक राज्य बना। तब असम में आज के नगालैंड, अरुणाचल प्रदेश, मेघालय और मिजोरम आते थे। नॉर्थ-ईस्टर्न एरिया (रीऑर्गेनाइजेशन) एक्ट 1971 के तहत असम से तीन नए राज्य मणिपुर, मेघालय और त्रिपुरा का गठन किया गया। मिजो शांति समझौते के तहत 1987 में मिजोरम को अलग राज्य बनाया गया। यह मिजो ट्राइब्स और केंद्र सरकार के बीच हुए करार के तहत था। इसका आधार 1933 का एग्रीमेंट था। 30 जून 1986 को मिजोरम के नेताओं ने मिजो शांति समझौते पर हस्ताक्षर किए थे। इसमें सीमा तय की गई है, लेकिन नियम 1875 को माने या 1933 को? दोनों राज्यों के बीच इस बात ही विवाद है। मिजोरम कहता है कि 1875 के नियमों का पालन किया जाए। असम 1933 की सीमा की बात करता है। मिजोरम और असम के बीच सोमवार को हुए हिंसक संघर्ष के बाद दोनों ने एक-दूसरे पर अवैध अतिक्रमण के आरोप लगाए हैं। मिजोरम का दावा है कि असम ने उसके 509 वर्गमील जमीन पर कब्जा कर रखा है। असम से टूटकर ही उत्तर पूर्व राज्यों का गठन हुआ था। फरवरी, 1987 को मिजोरम भारत का 23वां राज्य बना। 1972 में केंद्र शासित प्रदेश बनने से पहले तक यह असम का ही एक जिला था। जानकार यह भी कहते हैं कि दोनों राज्यों के बीच सीमा विवाद को ईमानदारी से सुलझाने की कोशिश नहीं की गई। 1995 के बाद कई दौर की बातचीत हुई, लेकिन उनका नतीजा नहीं निकला। इसे सुलझाने में और देर नहीं होनी चाहिए क्योंकि मिजोरम का 700 किलोमीटर क्षेत्र म्यांमार और बांग्लादेश से भी लगता है। इसलिए यह मुद्दा देश की सुरक्षा से भी जुड़ा है, यूं भी म्यांमार में तख्तापलट होने के बाद से मिजोरम में वहां से काफी शरणार्थी आ रहे हैं।

पेट्रोल और डीजल पर लगे टैक्स से प्राप्त राजस्व कहां जाते हैं

कृष्णा झा

दस घंटों से भी अधिक खटने के बाद भी आधे से भी कम वेतन पर, जो रोजगार में लगे हुए हैं, क्योंकि बेरोजगारी आज भी आसमान ही छू रही है, ऐसी जनता आज प्रत्येक लीटर तेल के लिये सौ रुपए खर्च कर रही है। कर देनेवाली जनता, जिसकी इतनी भी आय नहीं है आज कि वह कम से कम अपने पूरे परिवार की भूख ही मिटा सके, आज यह जवाब मांगने का अधिकार रखती है। कुछ विशेष तबकों को छोड़ आज सभी आर्थिक स्तरों पर जीवन बिताने वाली जनता, पेट्रोल और डीजल की कीमतों के बढ़ने से अकल्पनीय अभाव और आर्थिक कष्ट के दौर से गुजर रही है। स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के सूत्रों के अनुसार उपभोक्ता सूचकांकों के आधार पर मुद्रास्फीति दर में पचास प्रतिशत तक की वृद्धि बुनियादी तौर पर होती है प्रत्येक पेट्रोल डीजल की प्रत्येक ईकाई मूल्य वृद्धि के साथ। एसबीआई के ही सूत्रों से जीवन स्तर के घटने और बुनियादी जरूरतों में कटौती का मूल कारण हर बार ईंधन की कीमत में वृद्धि होती है। गैर बुनियादी जरूरतें तो नहीं ही पूरी की जाती हैं बुनियादी जरूरतों को भी पूरा करना मुश्किल हो जाता है। ईंधन की दर में आसमान छूने वाली बढ़ोतरी ने जीना मुश्किल ही नहीं, असंभव भी बना दिया है। अनिवार्य रूप से आवश्यक व्यय, जिसमें बुनियादी जरूरतें भी आती हैं, में भी अब यह कटौती बढ़ती जा रही है, क्योंकि ईंधन की कीमतों में जून तक 75 प्रतिशत तक बढ़ोतरी हो चुकी थी, जबकि यह मार्च, 2021 में 62 प्रतिशत तक थी। आज लोगों के लिये अपने प्रियजनों समेत जिंदगी जीना असंभव ही होता जा रहा है, घर का बजट किसी भी कटौती से पूरा नहीं पड़ता, ऊपर से आज कोविड-19 की मृत्यु छाया में मेडिकल का खर्च भी जुड़ गया है। पूरा देश पैनडेमिक की चोट से मृतप्राय हो चुका है। भीषण अभाव और गमों की आग में जलती जनता चरम बर्बादी की कगार पर खड़ी है।

मानसिक संतुलन बनाए रखना कठिन हो गया है क्योंकि आम जीवन की गुत्थियां जितनी बढ़ रही हैं, उतनी ही कठिन होती जा रही है, उन्हें समझ पाना मुश्किल ही होता जा रहा है। आर्थिक और सामाजिक जीवन में असहनीय परिवर्तनों को समझ नहीं पाने के कारण जनता में असहिष्णुता भी बढ़ती जा रही है। पेट्रोल और डीजल की कीमतों में वृद्धि से जो बढ़ा हुआ राजस्व सरकार को मिलता है, उसे व्यय करने के प्रशन पर केंद्र का उत्तर था कि यह सारी आय बुनियादी संरचना और विकासशील योजनाओं पर खर्च की जाएगी। मार्च के लोकसभा सत्र में यह जानकारी दी गई थी कि पेट्रोल और डीजल के एक्साइज ड्यूटी से 2014-15 में 72,500 करोड़ रुपए तक की राशि केंद्र को मिली थी। यह 2020-21 में 300 प्रतिशत बढ़ गई, अर्थात अब यह 300 लाख करोड़ तक पहुंच चुकी है। यही नहीं, इस आर्थिक वर्ष में, तेल का राजस्व भी बढ़ चुका है, जो इससे भी अधिक है पेट्रोल और डीजल पर लगे टैक्स से जहां 300 प्रतिशत वृद्धि हुई है, वहीं 2014-15 से आज तक सरकार द्वारा पूंजी निवेश में वृद्धि दस प्रतिशत से भी कम रही है। यह परिस्थिति मोदी सरकार के आने के बाद के वर्षों मे ही हुई है।पैनडेमिक की पहली दो लहरों में ही जनता मृतप्राय हो चुकी है, आर्थिक विकास शून्य में चला गया है। अब तीसरी लहर भयानक अनुभवों का खजाना लिये सामने खड़ी है। पेट्रोल और डीजल की कीमतों में बढ़ोतरी रुकने की कोई संभावना नहीं है। सरकार इस बढ़ोतरी के लिये औचित्य को साबित करने के लिये युक्तियों की सूची बनाना शुरू कर चुकी है, और इसमें फिर से बुनियादी संरचना और विकास को प्राथमिकता दी गई है। इस सबके बीच सूत्रों के अनुसार जो हकीकत सामने आ रही है उसमें अप्रैल-जून की तिमाही में बुनियादी संरचना और विकास पर होने वाले खर्च में चालीस प्रतिशत की कटौती ही हुई है। यह जनवरी-मार्च की तिमाही से अधिक है, और इसमें बढ़ोतरी की संभावना है। यह सारी कमियां तब आई हैं जब देश में लॉकडाउन भी नहीं था। आश्चर्य है कि इस सबके बावजूद केंद्र यह दावा करता रहा कि विकास का काम निर्बाध चलता रहा है, जिसमें सेन्ट्रल विस्टा भी शामिल है।

सूचना का (अधिक) अधिकार और अलादीन का चिराग

डॉ. सुधा कुमारी

सन 2005 में जब सूचना का अधिकार अधिनियम पारित हुआ था तो पूरे देश में खुशी की लहर उठी थी। जिस सूचना या कागजात की तलाश में हम वर्षों से परेशान थे और हमारे काम हर्ज हो रहे थे, वो अब हमारे पास था। हम अपने आवश्यक कागज और सम्बंधित सूचना पाकर अब अपना कार्य अच्छी तरह कर सकते थे। अलादीन का जादुई चिराग अब हमारे हाथ आ गया था जिसे जब मर्ज़ी तब घिस दो और जिनन्‍ हाज़िरष्ठजो हुक्म, मेरे आका! लाल फीताशाही का अभेद्य कवच टूट चुका था। 'स्टील फ्रेम ऑफ़ इंडिया' नाम से ख्याति प्राप्त आधिकारिक ढांचा अब काँच का घर बन गया था जिसे कोई भी कभी भी पत्थर मारकर तोड़ सकता था और सूचना अधिकारी की नींद उड़ा सकता था। यदि सूचना अन्य व्यक्ति की व्यक्तिगत जानकारी से सम्बन्धित है जिसका जनहित से दूर- दूर तक कोई सम्बन्ध नहीं है, तो भी सूचना न मिलने पर अपील का अधिकार तो सुरक्षित है ही। यदि अधिकारी ने सूचना देने से इंकार किया तो उच्चाधिकारी के पासअपील और वहां से भी टरकाया गया तो फिर केंद्रीय सूचना आयोग के पास नालिश। यह कोई छुपी हुई बात नहीं है कि सरकारी नौकरी में पेंशन और शक्ति का अस्तित्व देखकर कई गैर- सरकारी व्यक्ति सरकारी नौकरी वाले से या तो फायदा उठाना चाहते या उससे चिढ़ते- जलते हैं। यह मान लिया जाता है कि यहाँ भ्रष्टाचार अवश्य होगा और यदि नहीं है तो आखिर क्यों नहीं है? शादी तय करने वक्त सरकारी नौकरी वाले लड़के की ऊपरी आमदनी पूछी जाती है। उसके पास कितना 'पावर' है? गाड़ी उपलब्ध है या नहीं? उससे कितने लोगों को नौकरी दिलवाई जा सकती है? एक ईमानदारी अधिकारी जिसने अधिकार का दुरूपयोग नहीं किया, अधिकारी नहीं समझा जाता । वह तो एक अदना - सा 'दूसरे टाइप' का वेतनभोगी कर्मचारी माना जाता है। जब समाचारों में कहा जाता है कि अमुक 'मलाईदार पद' अमुक व्यक्ति को दिए गए तो इससे आप लोगों की मनोवैज्ञानिक स्थिति का अंदाजा लगा सकते हैं । यही लोग सूचना का अधिकार माँगने सबसे पहले आते हैं । अधिकार इतना व्यापक और लागत कितनी - सिर्फ रु.10/- जरा रु.10/- में पूछी जानेवाली जानकारी के कुछ उदाहरण देखियेः भारत में कुल कितने राजपत्रित अधिकारी हैं ? भारत में कुल कितने सरकारी वाहन हैं ? भारत में कुल कितने वाहनों का कितनी बार सरकारी काम के लिये प्रयोग हुआ? भारत में कुल कितने अधिकारी वाहन- भत्ता नहीं लेते और वाहन का प्रयोग ऑफिस आने- जाने के लिए करते हैं? (यह सिर्फ एक आवेदक का प्रशन्‍ है)

भारत में कुल कितने आकस्मिक कर्मचारी हैं ? उनके नाम, पता और फोन नं. दें? भारत में कुल कितने लोग टैक्स चोरी करते हैं ? भारत में कुल कितने लोग आयकर रिटर्न नहीं भरते ? भारत में कुल कितने लोग टैक्स से मुक्त हैं?मैंने पत्र द्वारा सूचित किया था कि अमुक व्यक्ति टैक्स - चोर है। इसके बाद भी आपने 'ऐक्शन' क्यों नहीं लिया? इसकी जानकारी दें।अमुक 'पैन' किस व्यक्ति का है? उसका सालाना आय कितनी और आय के स्रोत क्या है? उसके आयकर रिटर्न की कॉपी मुझे दें। मुझे हलके में न लें। यह सूचना अनिवार्य है। इसे तुरंत उपलब्ध कराएँ । वरना हम प्रधान सेवक और उनके प्रधान अनुसेवक को शिकायत लिखेंगे।क्या आपके विभाग में अमुक व्यक्ति पर पुलिस में कभी कोई एफ़. आई. आर. हुई है ? अगर इसका उत्तर 'हाँ' है तो उसका क्या नतीजा निकला ? उस व्यक्ति पर क्या विभागीय कार्रवाई हुई ? इसकी इत्तला मुझे दें, रु.10/- का बैंक ड्राफ़्ट संलग्न्‍ है।मेरे द्वारा 'चाहा गया' सूचना यह है कि पूरे भात में कुल कितने लोग अमुक विभाग में पिछले 15 साल से काम करते हैं? उनकी पूरी जानकारी दें। उन सबके पिता का नाम, पता और टेलीफोन नं. बतायें। दैनिक वेतनभोगियों का भी पूरा विवरण दें। सब को पिछले 15 साल में प्रतिवर्ष कितना वेतन दिया गया? पिछले 15 साल में कहाँ- कहाँ से कितनी कर - राशि किन- किन प्रकार के व्यक्तियों, बैंकों और कम्पनियों ने दी है? सबका विवरण उपलब्ध करायें । रु.10/- का बैंक ड्राफ्ट संलग्न्‍ है। क्या इतने सारे वर्णनात्मक विवरण सिर्फ एक आवेदक द्वारा चाही गयी सूचना है? और सूचना का अधिकार क्या सिर्फ व्यक्तिगत 'चाहतों' को पूरा करने लिए अनजान लोगों के बारे में व्यक्तिगत और अनावश्यक जानकारी इकठ्ठा करना है जिनका कोई जनहित प्रयोजन नहीं ?सिर्फ रु. 10/- में पूरे भारत का नक्शा उतर आता है। यह आवेदन भारत के कोने- कोने में बिजली की तेज़ी से दौड़ता है । लोग रिसर्च का काम भी इससे कर रहे हैं। रु. 10/- में भरपेट खाना नहीं मिलता मगर भरपेट सूचना मिल जाती है। सरकारी अधिकारी को बेवजह परेशान करने का एक तरीका हाथ में आ गया है। सूचना मांगने और बेमतलब के प्रशन्‍ पूछनेवाले का पता भी अस्पष्ट - सा रहेगा -श्री चन्टू- बंटू, शर्मा दर्जी के घर में, बड़े नाले के पास, दिल्ली। इन्हें पत्र लिखकर सूचना का कारण या जनहित संबंधी प्रयोजन पूछने से उत्तर कभी नहीं मिलता । अब प्रशन्‍ यह उठता है कि जब सूचना से आपका कोई संबंध नहीं है या भ्रष्टाचार का इल्जाम या जनहित से संबंधी कोई कारण भी आपके पास नहीं है तो क्यों पूछ रहे हैं ? सिर्फ प्रशन्‍ पूछने और रिसर्च के लिए सरकारी आँकड़ों का बैंक बनाने के लिए इस संवेदनशील अधिकार का दुरूपयोग कर रहे हैं ? क्या सूचना माँगने के अलावा आपके पास और कोई काम नहीं है?सभी कर्मचारी चुपचाप उत्तर दे रहे हैं- उल्टे- सीधे। चुप ! नहीं तो कान कटेगा ! केंद्रीय सूचना आयोग बैठा है । कहीं किसी ने उल्टी- सीधी अपील कर दी तो फिर समस्या। सरकारी नौकरी शांति से कर पाना अब कठिन हो गया है। बोलना कठिन है, न बोलना और भी कठिन।

अंग्रेजी की एक कहावत है जिसका हिंदी अनुवाद उपलब्ध नहीं है- पावर करप्ट्स ऐंड एब्सोल्यूट पावर करप्ट्स एब्सोल्यूटली।

अर्थात, शक्ति या अधिकार व्यक्ति को भ्रष्ट बनाता है और सम्पूर्ण अधिकार सम्पूर्ण रूप से भ्रष्ट बनाता है। जैसे सरकारी अधिकार का दंभ एक अधिकारी को भ्रष्ट कर सकता है, उसी प्रकार सूचना माँगने के अधिकार का दंभ भी कई लोगों को भ्रष्ट कर रहा है। 10 टके में कोई भी खड़ूस पूरे देश की प्रशासनिक मशीनरी के कल- पुर्जों को आमूल- चूल हिला देने का सुख प्राप्त कर उस सूचना का व्यापार कर रहा है। पहले सूचना जरूरी बातों तक सीमित थी। अनावश्यक प्रशन्‍ कभी- कभार अवांछित मेहमान की तरह टपक पड़ते थे और किसी एक शहर या इलाके तक सीमित थे। पर आज अधिकांश लोग पूरे भारत में 'डाटा-बैंक' या सूचना- कोश बनाने लगे हैं। अन्य व्यक्तियों की व्यक्तिगत सूचनाएँ इकट्ठी कर उन्हें ब्लैकमेल करने लगे हैं। अधिकार के दुरूपयोग का जो इल्जाम सरकारी अधिकारी पर थोपा जाता है, वही दुरूपयोग आज रु.10/- के नोट पर सवार होकर पूरे देश की सैर कर सूचना माँगनेवाला अधिकारी कर रहा है। समय आ गया है कि सूचना के अधिकार का दुरूपयोग करने वाले निकम्मे, ठग किस्म के इन तथाकथित 'अधिकारियों' पर नकेल कसी जाय। आत्मरक्षा के लिए बंदूकएक आवश्यक हथियार है पर लोगों को परेशान करने और धमकाने वाली बंदूक मात्र एक आतंकी औजार है जिसे नियंत्रित करना अति आवश्यक है। अपने सामान्य ज्ञान को बढ़ाने के लिए और किसी विषय पर रिसर्च की सामग्री जुटाने के लिए पूरे भारत के आँकड़े इकट्ठे करना, सारे देश को परेशान करना, सबका समय बर्बाद करना, निजी स्वार्थ के लिए पूरे देश की मशीनरी का व्यर्थ इस्तेमाल करना सरकारी मशीनरी का दुरूपयोग ही है। आम लोगों में अधिक सूचना का लालच आ गया है, असुरक्षा की जगह अति- सुरक्षा की भावना आ गई है कि सरकारी सेवक तो एक निरीह प्राणी और असुरक्षित व्यक्ति है जिसे छेड़ने- परेशान करने पर अपना कोई नुकसान नहीं। इसका कोई माई- बाप तो है नहीं। ऊपर से भी इसे ही झिड़की मिलेगी। अतः आज एक कार्यालय को नहीं, बल्कि पूरे देश की मशीनरी को फालतू प्रशनें से भरा जा रहा है।

अतः यह सुनिश्चित करना अति आवश्यक है कि मांगी गयी सूचना निजी कार्य के लिए आवश्यक हो। मांगी गयी सूचना जनहित में हो।

किसी के गलत काम का इल्जाम या कुछ जानकारी आवेदन्‍कर्ता के पास हो जिसकी वह पुष्टि करना चाहता हो जिससे समाज की कोई भलाई हो। अँधेरे में तीर - तुक्के न चलाए जाएँ। मांगी गयी सूचना विशेष मामले और विशेष विभाग से संबंधित हो । उसमें पूरे देश की जनगणना - सा विस्तार न हो। रु. 10/- की रकम किसी विशेष सूचना प्राप्त करने के लिए भुगतान होती है, सामान्य ज्ञान की कोचिंग क्लास करने या सूचना- कोश तैयार करने के लिए नहीं। अतः रु.10/- की रकम में सिर्फ एक सूचना दी जाय। पूरे देश के बारे में पूछे जाने वाले बेकार प्रशनें को मना किया जाय।सूचना प्राप्त करनेवाला उसका गलत इस्तेमाल न कर रहा हो या पैसे के बदले किसी को बेच न रहा हो। बेकार, निरर्थक और अनावश्यक वर्णनात्मक सूचनावाले प्राथियों का आवेदन स्वीकृत न किया जाय। सूचना के नोडल ऑफिसर को ऐसी सूचना से मना करने का दायित्व दिया जाय और परेशान करनेवाले व्यक्ति पर कानूनी कार्यवाही की जाय। इससे पहले कि अनावश्यक सूचनाएँ इकट्ठी करने का यह शौक एक बिजनेस बनकर पकौड़ों की तरह 'फैलने- फूलने' लगे, ये सभी कदम शीघ्र उठाना आवश्यक है।

जनसंख्या नियंत्रण विधेयक लाने से पहले इस मुद्दे पर जनसमर्थन जुटाये सरकार

डॉ. नीलम महेंद्र

उत्तर प्रदेश के उलट अगर केरल का उदाहरण लिया जाए तो केरल में सबसे कम सकारात्मक जनसंख्या वृद्धि दर होने के साथ-साथ उच्चतम जीवन प्रत्याशा और उच्चतम लिंगानुपात है। यानी जनसंख्या की वृद्धि नियंत्रण में है, लोगों का जीवन स्तर बेहतरी की ओर अग्रसर है। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा जनसंख्या नियंत्रण नीति लागू करने के फैसले ने इस विषय को राजनैतिक गलियारों में चर्चा से लेकर आम लोगों के बीच सामाजिक विमर्श का केंद्र बना दिया है। राजनैतिक दल और अन्य संगठन अपने अपने वोटबैंक और राजनैतिक नफा नुकसान को ध्यान में रखकर इसका विरोध अथवा समर्थन कर रहे हैं। लेकिन अगर राजनीति से इतर बात की जाए तो यह विषय अत्यंत गम्भीर है जिसे वोटबैंक की राजनीति ने संवेदनशील भी बना दिया है।

दरअसल आज भारत जनसंख्या के हिसाब से विश्व में दूसरे स्थान पर आता है और यूएन की एक रिपोर्ट के मुताबिक 2027 तक भारत विश्व की सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश बनकर इस सूची में पहले स्थान पर आ जाएगा। लेकिन क्या हमने कभी सोचा है कि जनसंख्या के विषय में पहले स्थान पर आने वाले भारत के पास इतने संसाधन और इतनी जगह है जिससे यह भारतमूमि अपने सपूतों को एक सम्मान एवं सुविधाजनक जीवन दे सके ? तो आइए इसे कुछ आंकड़ों से समझने की कोशिश करते हैं। भारत के पास विश्व की कुल भूमि क्षेत्र का मात्र 2.4 प्रतिशत है जबकि भारत की आबादी दुनिया की कुल आबादी का 16.7 प्रतिशत है। यहाँ यह बता दिया जाए कि विश्व के डेवलप्ड यानी विकसित देशों की सामूहिक जनसंख्या 17 प्रतिशत के आसपास है और अकेले भारत की जनसंख्या 16.7 प्रतिशत। इस विषय का इससे भी अधिक चिंताजनक पहलू यह है कि भारत के एक राज्य की जनसंख्या की तुलना कई देशों की कुल जनसंख्या से की जा सकती है। जैसे उत्तर प्रदेश की जनसंख्या ब्राजील, महाराष्ट्र की मेक्सिको, बिहार की फिलीपींस, पश्चिम बंगाल की वियतनाम, मध्य प्रदेश और तमिलनाडु की तुर्की और कर्नाटक की इटली के बराबर है। यह आंकड़े बता रहे हैं कि स्थिति कितना गंभीर रूप ले चुकी है। ऐसे ही कुछ और दिलचस्प आंकड़ों की बात की जाए तो विश्व का सबसे अधिक क्षेत्रफल वाला देश रूस जनसंख्या के मामले में नौंवे स्थान पर है। और जो चीन जनसंख्या के मामले में पहले स्थान पर आता है वो चीन क्षेत्रफल के हिसाब से विश्व में चौथे स्थान पर आता है जबकि भारत आठवें स्थान पर। यानी भारत के पास भूमि कम है लेकिन जनसंख्या ज्यादा है। कल्पना कीजिए कि जब भारत यूएन की रिपोर्ट के अनुसार इन्हीं सीमित संसाधनों के साथ चीन को पछाड़ कर विश्व की सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश बन जाएगा तो क्या स्थिति होगी। क्या इन परिस्थितियों में कोई भी देश गरीबी, बेरोजगारी, अशिक्षा जैसी समस्याओं से लड़कर अपने नागरिकों के जीवन स्तर में सुधार लाने की कल्पना भी कर सकता है? लेकिन इसे भारत का दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि इस देश की राजनीति उस मोड़ पर पहुंच गई है जहाँ हर विषय वोटबैंक से शुरू हो कर वोटबैंक पर ही खत्म हो जाता है। खेती किसानी हो या फिर शिक्षा, स्वास्थ्य अथवा जनसंख्या जैसे मूलभूत विषय ही क्यों न हों सभी को वोटबैंक की राजनीति से होकर गुजरना पड़ता है। हमारे राजनेता अपने राजनैतिक स्वार्थ से ऊपर उठकर कुछ सोच ही नहीं पाते।

विगत कुछ समय से यह देखा जा रहा है कि सत्ता धारी दल अगर किसी समस्या का समाधान खोजने के प्रयास में कोई कानून या नीति लेकर आता है तो विपक्ष उसके विरोध में उतर आता है। इस समय देश वाकई में अजीब दौर से गुज़र रहा है जहाँ समस्या से अधिक विकट देश के मौजूदा हालात हो गए हैं। क्योंकि एक तरफ देश में जनसंख्या नियंत्रण के लिए कानून लाना वर्तमान परिस्थितियों में आवश्यक प्रतीत हो रहा है तो दूसरी तरफ इस विषय का राजनीतिकरण कर बड़े पैमाने पर इसका विरोध होने की आशंका भी बनी हुई है। इसलिए जनसंख्या से संबंधित कोई भी कानून बनाने से पहले आवश्यक है कि इस विषय में जन जागरूकता लाई जाए। इससे लोग बढ़ती जनसंख्या के दुष्प्रभावों और सीमित परिवार के फायदों से परिचित ही नहीं होंगे बल्कि इस विषय में दुष्प्रचार से भ्रमित होने से भी बचेंगे। हालांकि उत्तर प्रदेश सरकार की प्रस्तावित जनसंख्या नियंत्रण नीति में जनसंख्या नियंत्रित करने के लिए लोगों को प्रोत्साहित करने की दिशा में सोचा गया है। इसलिए प्रस्तावित नीति में परिवार नियोजन करने वाले परिवारों को सरकार की ओर से विशेष सुविधाएं दी जा रही हैं तो अधिक बच्चों वाले परिवारों को इन सुविधाओं से वंचित रखा जा रहा है। लेकिन इस विषय को लेकर राजनैतिक बयानबाजी अपने चरम पर है।

उत्तर प्रदेश के उलट अगर भारत के ही राज्य केरल का उदाहरण लिया जाए तो केरल में सबसे कम सकारात्मक जनसंख्या वृद्धि दर होने के साथ-साथ उच्चतम जीवन प्रत्याशा और उच्चतम लिंगानुपात है। यानी जनसंख्या की वृद्धि नियंत्रण में है, लोगों का जीवन स्तर बेहतरी की ओर अग्रसर है और लड़का लड़की का अनुपात भी देश में सबसे अधिक है। गौरतलब है कि केरल केवल जनसंख्या के मामले में ही बेहतर नहीं है वो साक्षरता के मामले में भी सबसे अधिक साक्षरता दर के साथ भारत का अग्रणी राज्य है। जबकि उत्तर प्रदेश ना सिर्फ जनसंख्या के मामले में 29वें पायदान पर आता है बल्कि लिंगानुपात में भी 26वें पायदान पर आता है। यहाँ यह बता दिया जाए कि केरल में जनसंख्या नियंत्रण के लिए कोई कानून नहीं है। कहने का तात्पर्य यह है कि अगर हम यह समझें कि जनसंख्या को कानून से ही नियंत्रित किया जा सकता है तो ऐसा नहीं है। कानून अपने आप में अपर्याप्त रहेगा जब तक लोग उसे स्वेच्छा से स्वीकार न करना चाहें। इसलिए सरकार चाहे किसी राज्य की हो या केंद्र की जनसंख्या नियंत्रण जैसे विषय पर जल्दबाजी में कानून लाकर जनसंख्या को कितना नियंत्रित कर पाएगी यह तो समय बताएगा लेकिन बैठे बिठाए विपक्ष को एक मुद्दा जरूर दे देगी। जैसे हमने प्लास्टिक को कानूनी तौर पर बैन करने से पहले से देश में प्लास्टिक मुक्ति को जन आंदोलन बनाया, देश को स्वच्छ रखने के लिए स्वच्छता को भी जन आंदोलन बनाकर उसमें जन जन की भागीदारी सुनिश्चित की उसी प्रकार जनसंख्या नियंत्रण के लिए भी कानून के साथ-साथ जनजागरूकता के लिए विभिनन्‍ अभियान चलाए ताकि लोग स्वेच्छा से इसमें भागीदार बनें और विपक्ष अपने मंसूबों में कामयाब नहीं हो सके। जम्मू-कश्मीर इसका सबसे बेहतर उदाहरण है। चूँकि वहाँ के लोग जागरूक हो चुके थे इसलिए जम्मू-कश्मीर से धारा 370 हटने के समय विपक्षी दलों के विरोध को जनता का समर्थन नहीं मिला। इसी प्रकार जम्मू-कश्मीर के जिला विकास परिषद के चुनावों में भी स्थानीय लोगों ने राजनैतिक स्वार्थ से प्रेरित गुपकार गठबंधन को नकार दिया था। इसलिए जनसंख्या विस्फोट के दुष्परिणामों और सीमित परिवार के फायदों के प्रति अगर लोग जागरूक होंगे तो कोई दल कोई संगठन वोट बैंक की राजनीति नहीं कर पाएगा। अतः वर्तमान परिस्थितियों में जनसंख्या नियंत्रण के लिए कानून जितना जरूरी है उतना ही जनसमर्थन भी जरूरी है जो जनजागरण से ही संभव है।

भारतीय हॉकी टीम को ओलंपिक में शानदार प्रदर्शन का इनाम, वर्ल्ड हॉकी रैंकिंग में टॉप 3 में पहुंची

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय पुरुष हॉकी टीम को टोक्यो ओलंपिक खेलों में अच्छे प्रदर्शन का फायदा वर्ल्ड रैंकिंग में भी मिला है और वह एक पायदान चढ़कर पहली बार टॉप तीन में पहुंच गई है। इंटरनेशनल हॉकी फेडरेशन (एफआईएच) की गुरुवार को जारी ताजा वर्ल्ड रैंकिंग में भारत तीसरे नंबर पर काबिज हो गया है। यह 2003 में रैंकिंग शुरू किये जाने के बाद उसकी सर्वश्रेष्ठ रैंकिंग है। इससे पहले वह मार्च 2020 में चौथे नंबर पर पहुंचा था जो उसकी इससे पहले सर्वश्रेष्ठ रैंकिंग थी।

भारत के 2286 अंक हैं और वह चौथे स्थान पर खिसकने वाले नीदरलैंड (2267 अंक) से 19 अंक आगे है। ऑस्ट्रेलिया (2628) पहले और बेल्जियम (2606) दूसरे स्थान पर है। भारत ने ओलंपिक में न्यूजीलैंड को 3-2 से हराकर शानदार शुरुआत की थी। इसके बाद वह आस्ट्रेलिया से 1-7 से हार गया लेकिन इसके बाद उसने स्पेन को 3-0 और अर्जेंटीना को 3-1 से हराकर अच्छी वापसी करके क्वार्टर फाइनल में जगह बनाई। ताजा वर्ल्ड रैंकिंग में इंग्लैंड पांचवें स्थान पर है। उसके बाद जर्मनी, अर्जेंटीना, न्यूजीलैंड, स्पेन और दक्षिण अफ्रीका का नंबर आता है।

पीवी सिंधु, सतीश कुमार और हॉकी टीम क्वार्टर फाइनल में, मैरीकॉम की ओलंपिक से विदाई

टोक्यो (एजेंसी)। रियो ओलंपिक की रजत पदक विजेता बैडमिंटन खिलाड़ी पीवी सिंधु, चार दशक बाद पदक की कवायद में जुटी पुरुष हॉकी टीम और मुक्केबाज सतीश कुमार ने गुरुवार को क्वार्टर फाइनल में पहुंचकर टोक्यो ओलंपिक खेलों में भारतीय उम्मीदों को पंख लगाए, लेकिन छह बार की वर्ल्ड चैंपियन एम सी मैरीकॉम की हार दिल तोड़ गई। तीरंदाज अतनु दास ने भी अपनी पतनी दीपिका कुमारी की तरह प्री क्वार्टर फाइनल में जगह बनाकर भारतीय खेमे में खुशी पहुंचाई, जबकि गोल्फ में अनिर्बान लाहिड़ी ने दमदार शुरुआत की। भारत की नजरें हालांकि सिंधु, हॉकी और मैरीकॉम पर टिकी थीं, जिसमें आशा और निराशा दोनों हाथ लगी। पदक तालिका में भारत के नाम पर एक रजत पदक दर्ज है और वह अभी 46वें स्थान पर है।

सिंधु ने महिला एकल के एकतरफा प्री क्वार्टर फाइनल मुकाबले में डेनमार्क की मिया ब्लिचफेल्ट को सीधे गेम में 21-15, 21-13 से हराया। छठी वरीय सिंधु की डेनमार्क की दुनिया की 12वें नंबर की खिलाड़ी के खिलाफ छह मैचों में यह पांचवीं जीत है। वर्ल्ड चैंपियन सिंधु क्वार्टर फाइनल में जापान की चौथी वरीय अकाने यामागुची से भिड़ेंगी। जापान की दुनिया की पांचवें नंबर की खिलाड़ी के खिलाफ सिंधु ने 18 में से 11 मुकाबले जीते हैं जबकि सात में उन्हें हार का सामना करना पड़ा। भारतीय पुरुष हॉकी टीम ने आखिरी क्षणों में शानदार खेल दिखाकर मौजूदा चैंपियन अर्जेंटीना को 3-2 से हराकर अंतिम आठ में अपनी जगह सुरक्षित की। भारतीय टीम ने अभी तक तीन मैच जीते हैं जबकि एक मैच में उसे हार का सामना करना पड़ा।

भारत के लिए वरुण कुमार ने 43वें, विवेक सागर प्रसाद ने 58वें और हरमनप्रीत सिंह ने 59वें मिनट में गोल दागे। अर्जेंटीना ने 48वें मिनट में माइको केसेला के गोल के दम पर बराबरी की। भारत ने हॉकी में आखिरी पदक मास्को ओलंपिक 1980 में स्वर्ण पदक के रूप में जीता था। मुक्केबाजी में भारत के लिए गुरुवार का दिन मिश्रित सफलता वाला रहा। ओलंपिक में भाग ले रहे भारत के पहले सुपर हैवीवेट मुक्केबाज सतीश कुमार (91 किग्रा से अधिक) ने जमैका के रिकाडी ब्राउन को 4-1 से हराकर अंतिम आठ में प्रवेश किया लेकिन लंदन ओलंपिक 2012 की कांस्य पदक विजेता मैरीकॉम कोलंबिया की इंग्रिट वालेंसिया से 2-3 से हार गई। मैरीकॉम ने दो राउंड में जीत दर्ज की लेकिन कुल स्कोर में वह अपनी प्रतिद्वंद्वी से पिछड़ गई।

एमसी मैरीकॉम ने 'खराब' फैसलों के लिए आईओसी मुक्केबाजी कार्यबल को ठहराया जिम्मेदार

नई दिल्ली (एजेंसी)। छह बार की वर्ल्ड चैम्पियन एमसी मैरीकॉम ने गुरुवार को अपने फ्लाईवेट (51 किग्रा) प्री क्वार्टर फाइनल में 'खराब' फैसलों के लिए अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति (आईओसी) के मुक्केबाजी कार्यबल को जिम्मेदार ठहराया, जिसमें तीन में से दो राउंड जीतने के बावजूद उन्हें हार का सामना करना पड़ा। आईओसी द्वारा अंतरराष्ट्रीय मुक्केबाजी संघ (एआईबीए) के कथित कुशासन और वित्तीय गड़बड़ी के लिए प्रतिबंधित किए जाने के बाद कार्यबल ही टोक्यो में मुक्केबाजी प्रतियोगिता आयोजित कर रहा है। मैरीकॉम ने कोलंबिया की इंग्रिट वालेंसिया से प्री क्वार्टर फाइनल में हार के बाद टोक्यो से पीटीआई से फोन पर इंटरव्यू में पूछा, 'मैं नहीं जानती और इस

फैसले को नहीं समझ सकती, कार्यबल के साथ क्या गड़बड़ है? आईओसी के साथ क्या गड़बड़ है?'

उन्होंने कहा, 'मैं भी कार्यबल की एक सदस्य थी। मैं साफ सुथरी प्रतियोगिता सुनिश्चित करने के लिए उन्हें सुझाव भी दे रही थी और उनका सहयोग भी कर रही थी। लेकिन उन्होंने मेरे साथ क्या किया?' उन्होंने कहा, 'मैं रिंग के अंदर भी खुश थी, जब मैं बाहर आई, तब भी मैं खुश थी क्योंकि मेरे दिमाग में था कि मैं जानती थी कि मैं जीत गई थी। जब वे मुझे डोपिंग के लिए ले गए तो भी मैं खुश थी। जब मैंने सोशल मीडिया में देखा और मेरे कोच (छोटे लाल यादव ने मुझे दोहराकर बताया) तो मुझे अहसास हुआ कि मैं हार गई थी।'

मैरीकॉम ने कहा, 'मैंने पहले इस मुक्केबाज को दो बार हराया है। मैं विश्वास ही नहीं कर सकी कि रेफरी ने उसका हाथ उठाया था। कसम खाती हूं कि मुझे अहसास ही नहीं हुआ कि मैं हार गई थी, मुझे इतना भरोसा था।' उन्होंने कहा, 'सबसे खराब बात है कि फैसले की समीक्षा या विरोध नहीं दर्ज करा सकते। ईमानदारी से कहूं तो मुझे भरोसा है कि दुनिया ने देखा होगा, उन्होंने जो कुछ किया, यह कुछ ज्यादा ही है।' उन्होंने कहा, 'मुझे दूसरे राउंड में सर्वसम्मति से जीतना चाहिए था, तो यह 3-2 कैसे था? आईओसी के मुक्केबाजी कार्यबल ने इस बार अधिक पारदर्शिता वाले फैसलों का वादा किया था, क्योंकि एमेच्योर मुक्केबाजी की 2016 रियो ओलंपिक में गलत फैसलों की काफी आलोचना हुई थी। जिसके बाद 36 अधिकारियों को निलंबित कर दिया गया था। मैरीकॉम मुक्केबाजी कार्यबल की 10 सदस्यीय एथलीट ग्रुप का हिस्सा हैं। वह पैनल में एशियाई ब्लॉक का प्रतिनिधित्व करती हैं जिसमें यूक्रेन के दो बार के ओलंपिक और विश्व स्वर्ण पदक विजेता महान मुक्केबाज वासिल लामाचेंको (यूरोप) और पांच बार के विश्व चैम्पियन और 2016 ओलंपिक के स्वर्ण पदक विजेता जूलियो सीजर ला क्रूज (अमेरिका) भी शामिल हैं। मैरीकॉम ने कहा, 'एक मिनट या एक सेकेंड के अंदर एक एथलीट का सब कुछ चला जाता है।

साजन प्रकाश सेमीफाइनल में पहुंचने में नाकाम, तैराकी में भारतीय चुनौती समाप्त

टोक्यो (एजेंसी)। तैराक साजन प्रकाश गुरुवार को पुरुषों की 100 मीटर बटरफ्लाई स्पर्धा में अपनी हीट में दूसरे स्थान पर रहे, लेकिन यह सेमीफाइनल में जगह बनाने के लिए पर्याप्त नहीं था। इसके साथ टोक्यो ओलंपिक की तैराकी प्रतियोगिता में भारतीय चुनौती भी समाप्त हो गई। रियो ओलंपिक 2016 में भी देश का प्रतिनिधित्व करने वाले प्रकाश ने 53.45 सेकेंड का समय निकाला, जबकि सेमीफाइनल के लिए कट 51.74 सेकेंड पर गया।

केरल का यह 27 वर्षीय तैराक 55 खिलाडि़यों के बीच 46वें स्थान पर रहा। चोटी के 16 तैराक सेमीफाइनल में पहुंचते हैं। भारत के तीनों तैराकों प्रकाश, श्रीहरि नटराज और माना पटेल ने निराशाजनक प्रदर्शन किया तथा वे अपनी मुख्य स्पर्धाओं में अपने सर्वश्रेष्ठ समय की

बराबरी भी नहीं कर पाए। प्रकाश ने पिछले महीने ओलंपिक 'ए क्वालीफिकेशन' हासिल करने वाला पहला भारतीय तैराक बनकर टोक्यो खेलों के लिए क्वालीफाई किया था। वे अपनी पसंदीदा 200 मीटर बटरफ्लाई में सोमवार को 24वें स्थान पर रहे थे। अपने पहले ओलंपिक खेलों में भाग ले रहे नटराज 100 मीटर बैकस्ट्रोक में 40 तैराकों के बीच 27वें स्थान पर रहे। प्रकाश और नटराज ने टोक्यो खेलों से पहले लगातार अपना सर्वश्रेष्ठ समय निकालकर उम्मीदें जगाई थीं। माना ने विश्वविद्यालय कोटा से खेलों में जगह बनाई थी। वह महिलाओं की 100 मीटर बैकस्ट्रोक में 39वें स्थान पर रही थी।

भारतीय घुड़सवार फवाद मिर्जा के घोड़े 'सेगनुएर मेडिकोट' को फिट होने का सर्टिफिकेट मिला

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय घुड़सवार फवाद मिर्जा के घोड़े 'सेगनुएर मेडिकोट' फिट होने का गुरुवा को प्रमाण पत्र मिल गया, जिससे शुक्रवार से उनके टोक्यो ओलंपिक में भाग लेने की अहम पात्रता पूरी हो गई।

निणव्य करने वाली समिति ने मिर्जा के घोड़े को इवेंटिंग स्पर्धा में हिस्सा लेने की स्वीकृति दी जिसका आयोजन शुक्रवार से सोमवार के बीच किया जाएगा। मिर्जा का समर्थन करने वाले एम्बेसी ग्रुप ने बयान में कहा, ' सेगनुएर मेडिकोट को स्वस्थ होने का प्रमाण पत्र मिला है और उन्होंने जरूरी पात्रता पूरी कर ली है। घोड़े का टेस्ट राउंड पूरा होने के बाद मिर्जा और

सेगनुएर मेडिकोट 30 जुलाई से दो अगस्त के बीच होने वाली आगामी स्पर्धाओं में हिस्सा लेंगे। जज समिति किसी भी घुड़सवारी स्पर्धा से पहले घोड़ों का टेस्ट करती है जिससे कि यह सुनिश्चित हो सके कि घोड़ा आगामी प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेने के लिए फिट है। अगर घोड़ा बीमार या चोटिल होता है तो उसे भविष्य की स्पर्धाओं में हिस्सा लेने से बाहर कर दिया जाता है।

एथलेटिक्स में भारत के अभियान का आगाज करेंगे दुती और साबले

नई दिल्ली (एजेंसी)। ओलंपिक में ट्रैक और फील्ड पर मामूली अंतर से पदक से चूकने का इतिहास लिये भारतीय एथलेटिक्स दल शुक्रवार को टोक्यो में अपने अभियान का आगाज करेगा जबकि पदक उम्मीद भालाफेंक खिलाड़ी नीरज चोपड़ा चार अगस्त को चुनौती पेश करेंगे। विश्व रैंकिंग में चौथे स्थान पर काबिज चोपड़ा ओलंपिक में पदक के प्रबल दावेदारों में से हैं।

हालांकि उनकी तैयारी पुख्ता नहीं रही है। कोरोना महामारी के कारण वह ओलंपिक से पहले सिर्फ एक शीर्ष स्तरीय टूर्नामेंट खेल सके। भारतीय एथलेटिक्स महासंघ ने खिलाडि़यों के लिये ओलंपिक से पहले विदेश में अभ्यास सह प्रतिस्पर्धा दौरों की योजना बनाई थी लेकिन महामारी के कारण यात्रा

प्रतिबंधों के मद्देनजर इसे रद्द करना पड़ा। भारत के 26 सदस्यीय दल में से सिर्फ चोपड़ा ही टोक्यो आने से पहले यूरोप में अभ्यास कर सके थे। उन्होंने ओलंपिक से पहले तीन ही अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंट खेले लेकिन पहले दो में स्थानीय खिलाड़ी ही भाग ले रहे थे। तीसरा टूर्नामेंट फिनलैंड में कुओर्ताने में था जिसमें वह 86.79 मीटर का थ्रो फेंककर तीसरे स्थान पर रहे थे।

चोपड़ा ने सत्र की शुरूआत मार्च में इंडियन ग्रां प्री में 88.07 मीटर का थ्रो फेंककर अपना ही रिकॉर्ड तोड़ते हुए की थी। वहीं 2017 विश्व चैम्पियन वेटर ने अप्रैल और जून में सात टूर्नामेंटों में 90 मीटर से अधिक का थ्रो फेंका। चोपड़ा के प्रतिद्वंद्वियों में पोलैंड के मार्सिन क्रूकोवस्की, 2016 रियो ओलंपिक कांस्य पदक विजेता त्रिनिदाद और टोबैगो के केशोर्न वालकॉट और लाटविया के 2014 अंडर 20 विश्व चैम्पियन गाटिस काक्स हैं। चोपड़ा पहला थ्रो चार अगस्त को फेंकेगे जबकि फाइनल्स तीन दिन बाद होना है। रियो में पांच साल पहले सिर्फ ललिता बाबर 3000 मीटर स्टीपलचेस फाइनल में पहुंच सकी थी। चक्का फेंक खिलाड़ी कमलप्रीत कौर शीर्ष पांच में रहने का प्रयास करेगी। रैंकिंग में छठे स्थान पर काबिज कौर ने हाल ही में दो बार राष्ट्रीय रिकॉर्ड तोड़ा। एशियाई खेलों के चैम्पियन शॉटपुट खिलाड़ी तेजिंदर सिंह तूर ने जून में इंडियन ग्रां प्री 4 में अपना ही रिकॉर्ड बेहतर करके 21.49 मीटर का थ्रो फेंका।

नहीं चले भारत के अनुभवहीन बल्लेबाज, श्रीलंका ने भारत के खिलाफ पहली बार जीती टी-20 सीरीज

कोलंबो (एजेंसी)। लेग स्पिनर वाहिंदु हसरंगा की अगुवाई में गेंदबाजों के शानदार प्रदर्शन से श्रीलंका ने गुरुवार को कम स्कोर वाले तीसरे और निर्णायक टी-20 इंटरनेशनल मैच में भारत को 33 गेंद शेष रहते हुए सात विकेट से हराकर तीन मैचों की सीरीज 2-1 से अपने नाम की थी।

कोविड से प्रभावित भारत का भाग्य केवल टॉस ने दिया, लेकिन पहले बल्लेबाजी का उसका फैसला सही नहीं रहा और टीम आठ विकेट पर 81 रन ही बना पाई। भारत के केवल तीन बल्लेबाज दोहरे अंक में पहुंचे, जिनमें सातवें नंबर पर उतरे कुलदीप यादव ने सर्वाधिक नाबाद 23 रन बनाए। पिच बल्लेबाजों के अनुकूल नहीं थी, लेकिन भारतीय गेंदबाजों के पास बचाव के लिए बेहद कम स्कोर था। श्रीलंका ने 14.3 ओवर में तीन विकेट पर 82 रन बनाकर आसान जीत दर्ज की। इस तरह से श्रीलंका ने वनडे सीरीज 1-2 से गंवाने तथा टी-20 सीरीज का पहला मैच हारने के बाद अच्छी वापसी की।

श्रीलंका की भारत के खिलाफ आठ टी-20 बाइलेटरल सीरीज में यह पहली जीत है। यही नहीं उसने भारत के खिलाफ 2008 के बाद बाद टी-20 में न्यूनतम स्कोर है। भारत की तरफ से केवल चार चौके लगे। पिच से स्पिनरों को मदद मिल रही थी और बल्लेबाजों के पास श्रीलंका ने पावरप्ले में 23 रन बनाए और इस बीच अविष्का फर्नांडो (12) का विकेट गंवाया। राहुल चाहर (15 रन देकर तीन) ने अपनी ही

किसी भी फॉर्मेट में पहली सीरीज जीती। भारतीय टीम अपने न्यूनतम स्कोर पर आउट हो जाती, लेकिन कुलदीप 11 ओवर तक क्रीज पर जमे रहे।

इससे भारत पूरे 20 ओवर खेलने और अपने न्यूनतम स्कोर (74 रन, बनाम ऑस्ट्रेलिया, 2008) को पार करने में सफल रहा। भारत का यह पूरे 20 ओवर खेलने के हसरंगा की बलखाती गेंदों का कोई जवाब नहीं था, जिन्होंने अपने जन्मदिन पर सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए नौ रन देकर चार विकेट लिए। कप्तान दासुन शनाका (20 रन देकर दो) ने दो जबकि दुशमंत चमीरा और रमेश मेंडिस ने एक-एक विकेट लिया।

भारतीय गेंदबाजों ने शुरू में कसी गेंदबाजी जरूर की, जिससे गेंद पर फर्नांडो का खूबसूरत कैच लिया। चाहर ने इसके बाद दूसरे सलामी बल्लेबाज मिनोद भानुका (18) को एलबीडब्लूयू आउट किया। श्रीलंका के लिए भी रन बनाना आसान नहीं रहा लेकिन उसने विकेट बचाए रखे। वह 12वें ओवर में 50 रन के पार पहुंचा। चाहर ने अपनी आखिरी गेंद पर सदीरा समरविक्रमा (छह) को बोल्ड किया। इसके बाद धनंजय डिसिल्वा (नाबाद 23) और हसरंगा (नाबाद 14) ने टीम को आसानी से लक्ष्य तक पहुंचाया।अंपायर कुमार धर्मसेना ने वरुण चक्रवर्ती की गेंद पर डिसिल्वा को विकेट के पीछे कैच दे दिया था, लेकिन बल्लेबाज डीआरएस के सहारे आउट होने से बच गया।

यह गेंद वाइड निकली जो श्रीलंका का विजयी रन भी था। इससे पहले श्रीलंका के गेंदबाजों को भारतीयों की अनुभवहीनता का भी लाभ मिला। क्रुणाल पांड्या के कोविड पॉजिटिव पाए जाने के बाद उनके संपर्क में आने वाले भारत के आठ खिलाड़ी भी अलग-थलग कर दिए गए थे। भारत के पास ऐसे में केवल पांच स्पेशलिस्ट बल्लेबाज बचे थे जो अपनी जिम्मेदारी सही ढंग से नहीं निभा पाए। भारत के ये पांचों स्पेशलिस्ट बल्लेबाज 36 रन के अंदर पवेलियन में विराजमान थे। कप्तान शिखर धवन (शून्य) ने पहले ओवर में स्लिप में कैच दिया। इसके बाद श्रीलंका के स्पिनर हावी हो गए।

श्रीलंका के खिलाफ लो स्कोरिंग मैच में भुवनेश्वर कुमार से गेंद की जगह बल्ले से बन गया अनोखा रिकॉर्ड

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत और श्रीलंका के बीच 3 टी-20 मुकाबलों की सीरीज का आखिरी और निर्णायक मुकाबला कोलंबो के स्टेडियम में खेला जा रहा है। भारत ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला लिया लेकिन श्रीलंकाई गेंदबाजों ने मैदान में गदर मचाया, जिससे भारत की बल्लेबाजी बिखर गई। वानिंदु हसरंगा ने अपने जन्मदिन पर शानदार गेंदबाजी करते हुए मात्र 9 रन देकर 4 विकेट झटके। भारत ने पावरप्ले के अंदर ही अपने टॉप 4 बल्लेबाजों का विकेट गंवा दिया था। छठे नंबर पर बल्लेबाजी करने आए भुवनेश्वर कुमार ने विकेट पर टिकने की कोशिश की लेकिन वे सफल नहीं हो सके। इस दौरान भुवनेश्वर ने अपने नाम एक अनचाहा रिकॉर्ड बना गए। भुवनेश्वर बिना बाउंड्री लगाए सबसे ज्यादा गेंद खेलने का भारतीय रिकॉर्ड बना गए।

भुवनेश्वर ने श्रीलंका के खिलाफ 32 गेंदों का सामना किया उसमें उन्होंने एक भी बाउंड्री नहीं लगाई। इससे पहले ये अनचाहा रिकॉर्ड इरफान पठान के नाम था, इरफान ने 2008 में ऑस्ट्रेलिया के

खिलाफ बिना बाउंड्री लगाए 30 गेंदों का सामना किया था। इसी मैच में ये रिकॉर्ड महेंद्र सिंह धोनी के नाम भी है, धोनी ने उस मैच में बिना बाउंड्री लगाए 27 गेंदों का सामना किया था।

अपने बर्थडे को यादगार बना गए वानिंदु हसरंगा, लेकिन टीम इंडिया ने भुगता खामियाजा

नई दिल्ली (एजेंसी)। जब भी कोई खिलाड़ी अपने जन्मदिन के अवसर पर मैदान में उतरते हैं तो उनकी इच्छा होती है कि वे उस दिन को यादगार बना दें। ऐसा ही कुछ किया है श्रीलंकाई स्पिनर वानिंदू हसरंगा ने। ये श्रीलंकाई स्पिनर आज 24 साल के हो गए हैं। अपने जन्मदिन पर हसरंगा भारतीय बल्लेबाजों पर कहर बनकर टूटे। टी-20 सीरीज के निर्णायक मुकाबले में भारत ने टॉस जीत कर पहले बल्लेबाजी चुनी। श्रीलंकाई गेंदबाजों ने कप्तान धवन के इस फैसले को पूरी तरह गलत साबित कर दिया। हसरंगा ने जन्मदिन के दिन अपने देश और फैन्स को रिटर्न गिफ्ट दे दिया। उन्होंने घातक गेंदबाजी करते हुए 4 ओवरों में मात्र 9 रन देकर 4 महत्वपूर्ण विकेट चटकाए।

असम के खिलाफ अंतरराष्ट्रीय साजिश का इशारा, सीएम हिमंत बिस्व सरमा बोले- सामने लाना जरूरी

नई दिल्ली (एजेंसी)। असम के खिलाफ क्या अंतरराष्ट्रीय साजिश हो रही है? ट्विटर पर 'शेम ऑन असम' ट्रेंड को लेकर मुख्यमंत्री हिमंत बिस्व सरमा ने यह आरोप लगाया है। उन्होंने कहा है कि यह पता लगाने की आवश्यकता है कि इसके पीछे कौन लोग हैं।

असल में विक्रांत नाम के एक डिजिटल जानकार ने दावा किया है कि 'शेम ऑन असम' हैशटैग को लेकर अधिकतर ट्विटर अमेरिका से किए गए हैं और बॉट का इस्तेमाल किया गया है। उन्होंने ट्वीट किया, ''देखा कि 'शेम ऑन असम' हैशटैग ट्रेंड कर रहा है। इसलिए मैंने जांच की कि इसे कौन ट्रेंड कर रहा है। पाया कि अधिकतर हैंडल्स अमेरिका के हैं, केवल 1/3 इंडिया से हैं। केवल 26 लाख रीच दिखाता है कि अधिकतर बॉट्स का इस्तेमाल किया गया है। इसके पीछे कौन है? असम के मुख्यमंत्री ने भी इससे सहमति जताई और इसे गंभीर मामला बताया।

मुंबई सहित महाराष्ट्र के 25 जिले होंगे अनलॉक

11 में सख्ती बढ़ाने की तैयारी; वीकेंड पर कुछ राहत

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र में कोरोना केसों में कमी के बीच राज्य सरकार ने प्रतिबंधों में राहत में का ऐलान किया है। राज्य के स्वास्थ्य मंत्री राजेश टोपे ने गुरुवार को कहा कि मुंबई सहित राज्य के 25 जिलों में प्रतिबंधों में ढील देने का फैसला किया गया है, जहां कोरोना संक्रमण दर राज्य के औसत से कम है। उन्होंने यह भी कहा कि शनिवार को कुछ प्रतिबंधों के साथ अनलॉक होगा, लेकिन रविवार के दिन पहले की तरह प्रतिबंध जारी रहेंगे। मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे की अध्यक्षता में हुई कोविड टास्क फोर्स की बैठक के बाद पत्रकारों से बातचीत करते हुए टोपे ने कहा कि सरकार उन लोगों को लोकल ट्रेन में यात्रा की छूट देने पर विचार कर रही है, जो वैक्सीन की दोनों डोज लगवा चुके हैं। टोपे ने कहा कि बचे हुए 11 जिलों में और अधिक प्रतिबंध लगाए जाएंगे, जहां कोरोना संक्रमण दर अधिक है।

टोपे ने कहा, ''हमने मुंबई सहित उन 25 जिलों में प्रतिबंधों में राहत देने का फैसला किया है, जहां कोरोना संक्रमण दर राज्य के औसत से काफी कम है।'' हालांकि, मंत्री ने यह भी कहा कि पुणे, सोलापुर, सांगली, सतारा, कोल्हापुर, पालघर, रायगढ़, रतनगिरी, सिंधुदुर्ग, बीड और अहमदनगर में प्रतिबंध बढ़ाए जा सकते हैं, जहां कोरोना संक्रमण दर अधिक है। उन्होंने कहा, ''यदि जरूरत पड़ी तो स्थानीय प्रशासन कोरोना संक्रमण को रोकने के लिए अधिक सख्त प्रतिबंध लगा सकता है। राजेश टोपे ने कहा, ''हमने 25 जिलों में प्रतिबंधों में राहत देने का फैसला किया है। दुकान, थिएटर, सिनेमाहॉल, जिम आदि के संचालन में राहत दी जाएगी। शादी समारोह आदि पर प्रतिबंध जारी रहेंगे। एसी हॉल के इस्तेमाल को भी हतोत्साहित किया जाएगा।'' टोपे ने आगे कहा, ''शनिवार को चीजें कुछ सीमा के साथ खुलेंगी, रविवार को प्रतिबंध जारी रहेंगे। विस्तृत गाइडलाइंस को अगले 2-3 दिनों में जारी कर दिया जाएगा। होटल और दुकानों को खुलने का समय 8-9 बजे रात तक बढ़ाया जा सकते हैं। लेकिन उन्हें यह सुनिश्चित करना होगा कि स्टाफ को टीके के दोनों डोज लगे हों। 50 फीसदी क्षमता के साथ संचालन की छूट दी जाएगी।

पुलिस कमिश्नर के पद पर राकेश अस्थाना की नियुक्ति का विरोध, विधानसभा में पारित हुआ प्रस्ताव

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली पुलिस कमिशन्र के पद पर राकेश अस्थाना की नियुक्ति के खिलाफ दिल्ली विधानसभा में प्रस्ताव पारित किया गया है। आप विधायक संजीव झा द्वारा लाए गए इस प्रस्ताव में वरिष्ठ आईपीएस अधिकारी राकेश अस्थाना को दिल्ली का पुलिस आयुक्त नियुक्त किए जाने के केन्द्र सरकार के फैसले को नियम विरुद्ध बताया गया है। सदन में प्रस्ताव रखते हुए संजीव झा ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट के आदेश का उल्लंघन करते हुए यह नियुक्ति की गई है। सुप्रीम कोर्ट ने अपने एक आदेश में स्पष्ट कहा है कि डीजीपी पर ऐसे अधिकारी की नियुक्ति की जानी चाहिए जिसके पास कम कम छह महीने का सेवाकाल बचा हो। जब राकेश अस्थाना को पुलिस आयुक्त बनाया गया तब उनकी सेवानिवृत्ति में सिर्फ चार दिन ही शेष रह गए थे। बाद में उन्हें साल भर का सेवा विस्तार दिया गया।उन्होंने कहा कि राकेश अस्थाना के पास सीबीआई का अनुभव ज्यादा है और उनके कार्यकाल में दिल्ली में अपराध कम होने की खास उम्मीद नहीं की जा सकती। आप सदस्य गुलाब सिंह यादव, अखिलेश त्रिपाठी, बीएस जून, सोमनाथ भारती ने भी इस चर्चा में हिस्सा लिया। उनकी ओर से कहा गया कि पुलिस आयुक्त की नियुक्ति आम आदमी पार्टी को डराने-धमकाने के लिए किया गया है। लेकिन, आप विधायक डरने वाले नहीं हैं।

38 बंदरों को दिया जहर, बोरे में बंद कर कइयों को पीटा; कर्नाटक में बेजुबानों पर जुल्म की इंतहा

नई दिल्ली (एजेंसी)। कर्नाटक में बेजुबान जानवर पर जुल्म की इंतहा कर दी गई। बताया जा रहा है कि यहां 38 बंदरों को जहर दे दिया गया और कई बंदरों की बेरहमी से पिटाई की गई है। बंदरों पर अत्याचार करने की यह घटना हसन जिले की है।

जिले के चौधानहाली गांव में 35 मृत बंदरों के मिलने के बाद से हड़कंप मच गया है। गांव में 20 अन्य बंदर बेहद ही घायल अवस्था में भी मिले हैं। यहां अधिकारियों ने बताया है कि यहां बंदरों को जहर दिया गया है। इसके बाद कुछ बंदरों को बोरे में बंद कर उन्हें पीटा गया है। बुरी तरह से उनकी पिटाई करने के बाद कुछ लोग उन्हें सड़क किनारे छोड़ कर भाग गये।

बताया जा रहा है कि सड़क से गुजर रहे कुछ लोगों की नजर जब सड़क किनारे पड़ी बोरों पर पड़ी तब उनके होश उड़ गये।

स्थानीय लोगों ने इन बोरों को खोल कर घायल बंदरों को पानी पिलाया। गांव के कुछ लोगों ने आशंका जताई है कि पहले बंदरों को पीटा गया और फिर उन्हे बोरे में बंद कर दिया गया। जो बंदर उसमें जिंदा थे उन्हें सांस लेने में तकलीफ हो रही थी और वो चलने-फिरने में भी असमर्थ थे। अब इस मामले में वन विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों ने घटनास्थल का दौरा किया है। इस मामले की अब जांच शुरू कर दी गई है।

मृत बंदरों के अंतिम संस्कार के लिए भी इंतजाम किये गये हैं। पुलिस ने यहां बताया है कि शुरुआती जांच में यह पता चला है कि बंदरों को मारने के लिए उन्हें जहर दिया गया था। मामले की जांच रेंज वन अधिकारी एवं वनपाल डी. गुरुराज कर रहे हैं। वन अधिकारियों ने कहा कि वे मरे हुए बंदरों को दफनाने के लिए जरूरी कार्रवाई कर रहे हैं। एक मृत बंदर को पोस्टमार्टम किया गया और प्रारंभिक रिपोर्टों में जहर देने की बात कही गई है।

अरबपति की कंपनी में निवेशकों के डूबे 170 अरब डॉलर, दौलत में अडानी को दी थी टक्कर

नई दिल्ली (एजेंसी)। चीन की दिग्गज टेक कंपनी ऊाहमहू के निवेशकों के लिए जुलाई का महीना काफी महंगा साबित हुआ है। इस महीने में कंपनी के शेयर में 23 फीसदी से ज्यादा की गिरावट आई है। इस वजह से कंपनी में जिन निवेशकों ने दांव लगाया है, उन्हें अब तक 170 अरब डॉलर का नुकसान हो चुका है। सबसे खराब परफॉर्मेंसः ब्लूमबर्ग के आंकड़ों से पता चलता है कि जुलाई महीने के दौरान दुनिया भर की कंपनियों में ऊाहमहू का सबसे खराब परफॉर्मेंस रहा है। इस महीने में निवेशकों को दुनिया की जिन टॉप-10 कंपनियों में नुकसान हुआ है, उनमें से 9 सिर्फ चीन की हैं। आपको बता दें कि ऊाहमहू समेत अन्य टेक कंपनियां चीन सरकार के निशाने पर है। दरअसल, डेटा सिक्यॉरिटी और फाइनेंशियल स्टैबिलिटी को लेकर चीन की सरकार मुहिम चला रही है। इसी का असर टेक कंपनियों पर भी पड़ रहा है। फाउंडर ने दी थी अडानी को टक्करः दिलचस्प बात ये है कि जुलाई के पहले सप्ताह में ही ऊाहमहू के फाउंडर मा हुआतेंग (पोनी मा) ने दौलत के मामले में गौतम अडानी को पछाड़ दिया था। हालांकि, अब मा हुआतेंग की दौलत अडानी से करीब 9 बिलियन डॉलर कम हो गई है। ब्लूमबर्ग बिलेनियर इंडेक्स के मुताबिक मा हुआतेंग की दौलत 45.9 बिलियन डॉलर है और वह दौलतमंद अरबपतियों की रैंकिंग में 30 वें स्थान पर हैं।

पेगासस मामले में क्या छुपाया जा रहा है? कांग्रेस ने सरकार पर फिर बोला हमला

नई दिल्ली (एजेंसी)। पेगासस जासूसी मामले को लेकर सरकार के प्रति कांग्रेस का रुख नर्म नहीं हो रहा है। गुरुवार को एक बार फिर सरकार पर हमला करते हुए कांग्रेस ने कहा कि सरकार पेगासस पर सदन में इसलिए चर्चा नहीं कर रही है, क्योंकि उसे इसपर बहुत कुछ छुपाना है। कांग्रेस प्रवक्ता अभिषेक मनु सिंघवी ने पेगासस मामले पर सरकार को घेर। उन्होंने कहा कि उनके पास ऐसी कोई ठोस वजह नहीं है, जिसके आधार पर सदन में इस मामले पर बहस से बचा जा सके।

अभिषेक मनु सिंघवी ने कहा कि सरकार से इस मामले में जो भी सवाल पूछा जा रहा है वह बहुत आसान है। उन्हें बस हां या ना में

इस बात का जवाब देना है कि क्या सरकार ने पेगासस सॉफ्टवेयर खरीदा था? उन्होंने कहा कि सरकार एक बार इस मामले पर बहस तो करे। इसके बाद हम लोग हर मामले पर बहस करने के लिए तैयार हैं। सिंघवी ने सरकार पर इस बात को लेकर भी नाराजगी जताई कि इतने आसान सवाल का संसद में जवाब देने के बजाए सरकार इसे सदन के बाहर डिस्कस करना चाहती है। गौरलतब है कि पेगासस मामला पूरी दुनिया में चर्चा का विषय बना हुआ है। भारत की कई प्रमुख हस्तियों के नाम भी इस लिस्ट में आए हैं। सदन का वर्तमान मॉनसून सत्र पेगासस जासूसी मामले को लेकर लगातार प्रभावित रहा है। पेगासस मामला सामने आने के बाद से ही संसद में लगातार नारेबाजी चल रही है। इसके चलते कई बार सदन की कार्यवाही स्थगित की जा चुकी है। गुरुवार को भी संसद के दोनों सदनों को पूरे दिन के लिए स्थगित कर दिया गया। विपक्ष इस मुद्दे पर प्रधानमंत्री और गृहमंत्री की मौजूदगी में संसद में बहस चाहता है। साथ ही कृषि कानूनों को भी वापस लिए जाने की मांग लगातार की जा रही है।

चीन का बाढ़ से बुरा हाल, 99 लोगों की मौत, मरने वालों की संख्या को लेकर उठ रहे सवाल

नई दिल्ली (एजेंसी)। चीन का बाढ़ से बुरा हाल है। मध्य चीन में हो रही लगातार बारिश के बाद आई बाढ़ से अब तक 99 लोगों की मौत हो चुकी है। कम से कम पांच लोग अब तक लापता हैं, जिनकी तलाश जारी है। इस बात की जानकारी चीनी अधिकारियों ने दी है। बुरी तरह से बाढ़ प्रभावित हेनान प्रदेश की सरकार ने कहा कि 6.7 लाख लोगों को रेस्क्यू किया गया है और करीब 9.2 लाख लोगों को सुरक्षित स्थानों तक पहुंचाया गया है। अधिकारियों ने बताया है कि कुछ इलाकों में पानी कम हो गया है लेकिन अधिकतर इलाकों में बाढ़ जैसे हालात बने हुए हैं। सरकार की ओर से राहत और सफाई के प्रयास जारी हैं।

20 जुलाई को हेनान प्रदेश की राजधानी झेंग्झौ शहर में रिकॉर्ड बारिश हुई थी। बाढ़ की वजह से झेंग्झौ के कई प्रमुख रास्ते और सबवे टनल्स डूब गए थे। चीनी मीडिया के मुताबिक़ झेंग्झौ में पिछले 60 सालों से इतनी बारिश नहीं हुई है। भारी बारिश के कारण हाल के दिनों में सैकड़ों ट्रेनें और फ़्लाइट्स रद्द किए गए हैं।

मध्य चीन में आए तूफ़ान और भारी बारिश की वजह से मरने वालों की संख्या को लेकर सवाल उठने लगे हैं। चीनी मीडिया की एक रिपोर्ट मुताबिक़ झेंग्झौ के एक सुरंग में 200 से अधिक गाड़ियां मलबे के रूप में मिली थी। ऐसे में सवाल उठ रहे हैं कि क्या गाड़ियों में सवार लोग वक्त रहते सुरक्षित स्थानों तक पहुंच पाए थे या नहीं। इस तरह की कई और रिपोर्ट्स आ रही हैं। चीन के मौसम विभाग ने हेनान में हुई भारी बारिश के पीछे कई कारण गिनाए हैं। इनमें से वायुमंडलीय दबाव, संभावित तूफ़ान और उस क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति को प्रमुख कारण बताया है। बताया गया है कि जुलाई मध्य में हेनान सबट्रॉपिकल हाई पर था जिसके कारण भारी बारिश हुई है। दक्षिण-पूर्व चीन के फुजियान प्रदेश में आने वाले तूफान 'यन्हुआ' के साथ, जलवाष्प भारी मात्रा में हेनान प्रदेश को पहुंची, जिसके कारण अप्रत्याशित बारिश हुई है।

छतरी नहीं संभाल पाए ब्रिटिश पीएम बोरिस जॉनसन, प्रिंस चार्ल्स भी मुस्कुरा उठे

नई दिल्ली (एजेंसी)। जब बड़ी हस्तियां किसी कार्यक्रम का हिस्सा बनती हैं तो जबर्दस्त प्रोटोकॉल फॉलो होता है। लेकिन कई बार कुछ न कुछ ऐसा हो जाता है कि लोग बरबस मुस्कुरा ही पड़ते हैं। बुधवार को ब्रिटेन में एक कार्यक्रम के दौरान कुछ ऐसा हुआ कि वहां मौजूद सभी लोगों की हंसी छूट गई। बारिश से बचने के लिए ब्रिटिश प्रधानमंत्री बोरिस जॉनसन अपना छाता खोल रहे थे। लेकिन तेज हवा के चलते वह छाता संभाल नहीं पा रहे थे। यह देखकर वहां मौजूद अन्य लोगों के साथ-साथ प्रिंस चार्ल्स भी मुस्कुराने लगे। इसका वीडियो देखकर लोग भी खुद को हंसने से रोक नहीं पा रहे।

ब्रिटेन में ड्यूटी के दौरान शहीद होने वाले पुलिस अफसरों की याद में एक स्मारक बनाया गया है। बुधवार को इसका उद्घाटन समारोह था। इस दौरान देश की कई जानी-मानी हस्तियां वहां मौजूद थीं। इनमें प्रिंस चार्ल्स और ब्रिटिश प्रधानमंत्री बोरिस जॉनसन भी थे। कार्यक्रम के दौरान तेज बारिश हो रही थी।

विपक्षी नेताओं से मुलाकात के बाद नितिन गडकरी से मिलीं ममता बनर्जी, बताया क्या हुई बात

नई दिल्ली (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी इन दिनों दिल्ली में हैं। पिछले कुछ दिनों में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और विपक्ष के कई नेताओं से मुलाकात के बाद गुरुवार को ममता, केंद्र सरकार में सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी से मिलने उनके आवास पर पहुंचीं।

इस दौरान ममता बनर्जी ने नितिन गडकरी से पश्चिम बंगाल में उद्योगों और बेहतर सड़कों को लेकर मांग की। मुलाकात के बाद टीएमसी की शीर्ष नेता ने नितिन गडकरी से मुलाकात के बाद इसका ब्यौरा भी दिया। गौरतलब है कि ममता बनर्जी पांच दिन के दौरे पर नई दिल्ली पहुंची हैं। आज उनके दौरे का चौथा दिन है। अभी तक वह राहुल, सोनिया समेत तमाम लोगों से मुलाकात कर चुकी हैं। ममता बनर्जी ने बताया कि उन्होंने केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी से राज्य में उद्योग-धंधों को लेकर बातचीत की। ममता के मुताबिक, मैंने नितिन

गडकरी से कहा कि अगर पश्चिम बंगाल में भी निर्माण फैक्ट्रियां होंगी तो बेहतर होगा। हमारे यहां पर इलेक्ट्रिक बसें, इलेक्ट्रिक ऑटो और इलेक्ट्रिक स्कूटर बनेंगे। ममता ने कहा कि मैंने उनसे बताया कि हमारे राज्य की सीमाएं, बांग्लादेश, नेपाल, भूटान और उत्तर-पूर्वी राज्यों से मिलती हैं। ऐसे में हमें बेहतर सड़कों की जरूरत है।

पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ने आगे जानकारी देते हुए कहा कि सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री मीटिंग के लिए राजी हो गए हैं। उन्होंने मुझसे मुख्य सचिव को भेजने की बात कही है। कल होने वाली इस मीटिंग के दौरान पीडब्लूडी मंत्री, सेक्रेटरी, ट्रांसपोर्ट सेक्रेटरी, नितिन गडकरी के डीजी और वह खुद वहां पर मौजूद होंगे। ममता ने कहा कि इस मीटिंग में हिस्सा लेने के लिए वह अपने सचिव को भी भेजेंगी। गौरतलब है कि राज्य में चुनावी जीत के बाद पहली बार ममता दिल्ली पहुंची हैं।

पेगासस जासूसी विवादः इजरायल ने की एनएसओ के दफ्तरों की जांच, कंपनी बोली- पारदर्शिता से कर रहे काम

नई दिल्ली (एजेंसी)। पेगासस स्पाईवेयर तैयार करने वाली कंपनी एनएसओ ग्रुप के दफ्तरों की गुरुवार को इजरायली अथॉरिटीज ने जांच की है।

खुद एनएसओ ग्रुप की ओर से गुरुवार को यह जानकारी दी गई है। कंपनी का कहना है कि इजरायली अथॉरिटीज की ओर से हमारे यहां इस्पेक्शन किया गया था। कंपनी ने कहा कि हम पेगासस जासूसी विवाद की जांच कर रहीं इजरायली अथॉरिटीज के साथ पूरी पारदर्शिता के साथ काम कर रहे हैं। इंडिया टुडे से बातचीत में एनएसओ के प्रवक्ता ने बताया, 'हम यह कह सकते हैं कि इजरायली रक्षा मंत्रालय के अधिकारियों ने हमारे ऑफिस में विजिट किया था। हम उनकी जांच का स्वागत करते हैं। कंपनी इजरायली अथॉरिटीज के साथ पूरी पारदर्शिता से काम कर रही है।'

यही नहीं कंपनी के प्रवक्ता ने कहा कि हमें भरोसा है कि इस जांच से वे तथ्य सामने आ जाएंगे, जो हम अकसर रखते रहे हैं। इससे यह उजागर हो जाएगा कि पेगासस के जरिए किसी भी तरह की जासूसी नहीं की गई है। मंगलवार को इजरायली अथॉरिटीज ने एनएसओ के दफ्तरों का दौरा किया, जो पेगासस जासूसी विवाद की जांच कर रही है।

बता दें कि एनएसओ ग्रुप ने ही पेगासस स्पायवेयर को बेचा है। इसके अलावा इजरायल की ओर से एक अंतर-मंत्रालयी समूह का भी गठन किया गया है, जिसे पेगासस जासूसी विवाद पर मीडिया संस्थानों की रिपोर्ट का आकलन करने की जिम्मेदारी दी गई है। भारत समेत दुनिया भर के 17 मीडिया संस्थानों ने पेगासस स्पायवेयर पर एक रिपोर्ट प्रकाशित की है, जिसमें दुनिया भर में 50,000 से ज्यादा मोबाइल नंबरों को जासूसी के लिए चुने जाने की बात कही गई है। एक तरफ इजरायल का कहना है कि वह पेगासस मामले की पूरी और गंभीरता से जांच कर रहा है।

अफगानिस्तान पर जबरन कब्जे के खिलाफ है भारत, राज्यसभा में बोले विदेश मंत्री- हिंसा का राजनीतिक समाधान हो

नई दिल्ली (एजेंसी)। अफगानिस्तान में मौजूदा हालात पर भारत ने अपनी स्थिति साफ की है। केंद्रीय विदेश मंत्री एस जयशंकर ने राज्यसभा में कहा है कि भारत, अफगानिस्तान को जबरन कब्जे में लिये जाने के खिलाफ है।

भारत ने साफ किया है कि अफगानिस्तान में जारी हिंसा के राजनीतिक समाधान को ही भारत सपोर्ट करता है। विदेश मंत्री ने गुरुवार को राज्यसभा को बताया कि अमेरिका के विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन के साथ उनकी अफगानिस्तान के मसले पर विस्तृत चर्चा हुई है। चर्चा के बाद दोनों ही देश इस बात पर सहमल हुए हैं कि हिंसा के जरिए अफगानिस्तान पर जबरन कब्जा नहीं होना चाहिए। विदेश मंत्री ने कहा कि अफगानिस्तान की समस्या का समाधान मिलिट्री के जरिए नहीं हो सकता है। हम अंतरराष्ट्रीय समुदाय के साथ मिलकर यह सुनिश्चित करेंगे कि अफगानिस्तान में हो रही हिंसा का राजनीतिक समाधान निकाला जा सके। अमेरिका के विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन के साथ एस जयशंकर की बुधवार को मुलाकात हुई थी। इस मुलाकात के बाद ब्लिंकन ने भी अफगानिस्तान में हिंसा को गलत ठहराते हुए परिस्थितियों के मुताबिक राजनीतिक हल निकाले जाने की बात कही थी।

अमेरिका ने बुधवार को कहा कि अफगानिस्तान के संघर्ष का कोई सैन्य समाधान नहीं हो सकता और इस क्षेत्र में एक नेता एवं अमेरिका के अहम सहयोगी के तौर पर भारत अफगानिस्तान की स्थिरता व विकास में महत्वपूर्ण योगदान देना जारी रखेगा। अफगानिस्तान में तालिबान के तेजी से उभरने के बीच वहां उत्पनन्न हो रही स्थिति और अन्य मुद्दों पर

दोनों पक्षों में व्यापक चर्चा के बाद अपने भारतीय समकक्ष एस जयशंकर के साथ संयुक्त संवाददाता सम्मेलन में अमेरिकी विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन ने यह स्पष्ट दावा किया था।

अमेरिकी विदेश मंत्री ने कहा था कि शांतिपूर्ण, सुरक्षित और स्थिर अफगानिस्तान में भारत और अमेरिका की गहरी रुचि है। इस क्षेत्र में एक नेता और एक महत्वपूर्ण साझेदार के रूप में भारत ने अफगानिस्तान की स्थिरता और विकास के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया है और आगे भी ऐसा करना जारी रखेगा तथा हम गठबंधन सेनाओं की देश(अफगानिस्तान) से वापसी के बाद भी अफगान लोगों के हितों की अक्षुण्णता एवं क्षेत्रीय स्थिरता के लिये साथ मिलकर काम करना जारी रखेंगे।

ब्लिंकन ने तालिबान द्वारा हिंसा के जरिये नए इलाकों को अपने कब्जे में लिए जाने के संदर्भ में कहा कि ताकत के जरिए देश को नियंत्रण में लेना एव लोगों के अधिकारों को कुचलना उस लक्ष्य को हासिल करने का रास्ता नहीं है। सिर्फ एक रास्ता है और वह है वार्ता की मेज पर आना और शांतिपूर्ण तरीके से विवाद का समाधान करना। आपको बता दें कि इधर चीन ने तालिबान के नेता मुल्ला अब्दुल गनी बरादर से बुधवार को मुलाकात की और चरपंथी समूह की प्रशंसा करते हुए अफगानिस्तान में उसे अहम सैन्य और राजनीतिक ताकत करार दिया।

इसके साथ ही चीन ने तालिबान से सभी आतंकवादी समूहों से 'संपर्क तोड़ने को कहा, ,खासतौर पर शिनजियांग के उइगर मुस्लिम चरमपंथी समूह ईस्ट तुर्किस्तान इस्लामिक मूवमेंट (ईटीआईएम) से। चीन के विदेशमंत्री वांग यी ने तिआंजिन में मुल्ला बरादर से मुलाकात की। चीन मानता है कि शिनजियाग प्रांत व देश के अन्य इलाकों में होने वाले सभी हिंसक हमलों के पीछे ईटीआईएम का हाथ है। मुलाकात के दौरान यी ने बरादर से 'सकारात्मक छवि बनाने और विस्तृत व समावेशी राजनीतिक ढांचा का आह्वान किया जो अफगानिस्तान की राष्ट्रीय वास्तविकता के अनुकूल हो। मुल्ला अब्दुल गनी बरादर की अगुवाई में तालिबान का एक प्रतिनिधिमंडल बुधवार को अचानक चीन के दौरे पर पहुंचा था और चीनी विदेश मंत्री वांग यी के साथ वार्ता की थी। बातचीत के दौरान तालिबान ने बीजिंग को भरोसेमंद दोस्त बताया था और आश्वस्त था किया कि समूह अफगानिस्तान के क्षेत्र का इस्तेमाल किसी को भी करने की इजाजत नहीं देगा।